● वर्ष-3
● अंक-143
रायपुर, मंगलवार
23 जनवरी 2024
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-6›› क्या आप जानते हैं श्री राम...

84 सेकंड के मुहूर्त में हुई राम लला की प्राण प्रतिष्ठा

अयोध्या। अयोध्या में रामलला के आगमन का इंतजार खत्म हो गया। राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम पूरा हो गया है। इस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, लोकप्रिय क्रिकेटर, मशहूर हस्तियां, उद्योगपति, संत और विभिन्न देशों के प्रतिनिधि शामिल हुए। भारत समेत दुनिया की नजरें प्राण प्रतिष्ठा की ऐतिहासिक घड़ी पर टिकी रहीं। समारोह पूरा होने के बाद अवधपुरी 10 लाख दीपों से जगमगा गई। 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा के लिए न्यूनतम विधि-अनुष्ठान रखे गए। अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि पर होने वाली प्राण प्रतिष्ठा समारोह में प्रातः काल 10 बजे से मंगल ध्वनि के भव्य वादन शुरू हुआ। विभिन्न राज्यों से 50 से अधिक मनोरम वाद्ययंत्र लगभग दो घंटे तक इस शुभ घटना का साक्षी बनें। 10.30 बजे तक प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल होने वाले अतिथियों का आगमन हुआ। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र द्वारा जारी की गई प्रवेशिका के जरिए ही प्रवेश कराया गया। ट्रस्ट ने सोशल मीडिया पर प्रवेशिका का एक प्रारूप भी साझा किया था। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की विधि दोपहर 12ः20 बजे शुरू हुई। प्राण प्रतिष्ठा की मुख्य पूजा अभिजीत मुहूर्त में हुई। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का समय काशी के विद्वान गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ ने निकाला था। यह कार्यक्रम पौष माह के द्वादशी तिथि (22 जनवरी 2024) को अभिजीत मुहूर्त, इंद्र योग, मृगशिरा नक्षत्र, मेष लग्न एवं वृश्चिक नवांश में हुआ। शुभ मुहूर्त दिन के 12 बजकर 29 मिनट और 08 सेकंड से 12 बजकर 30 मिनट और 32 सेकंड तक का रहा। यानि प्राण प्रतिष्ठा का शुभ मुहूर्त केवल 84 सेकंड का रहा। पूजा-विधि के जजमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों श्रीरामलला के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा हुई। अनुष्ठान को काशी के प्रख्यात वैदिक आचार्य गणेश्वर द्रविड़ और आचार्य लक्ष्मीकांत दीक्षित के निर्देशन में 121 वैदिक आचार्यों ने संपन्न कराया। इस दौरान 150 से अधिक परंपराओं के संत-धर्माचार्य और 50 से अधिक आदिवासी, गिरिवासी, तटवासी, द्वीपवासी, जनजातीय परंपराओं की भी उपस्थिति रही।

राम ऊर्जा हैं, समाधान हैंः मोदी

अयोध्या। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज अयोध्या में राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल हुए। उन्होंने राम मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा करने के बाद वहां मौजूद लोगों को संबोधित किया। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिना नाम लिए राम मंदिर का विरोध करने वाले लोगों पर भी तंज कसा। जाहिर सी बात है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राजनीति में है और ऐसे में उन्होंने अपने वक्तव्य के जरिए विरोधियों को एक खास संदेश देने की कोशिश की। प्रधानमंत्री ने कहा कि वो भी एक समय था जब कुछ लोग कहते थे कि राम मंदिर बना तो आग लग जाएगी। ऐसे लोग भारत के सामाजिक भाव की पवित्रता को नहीं जान पाए।

मोदी ने कहा कि रामलला के इस मंदिर का निर्माण भारतीय समाज के शांति, धैर्य, आपसी सद्भाव और समन्वय का भी प्रतीक है। ये निर्माण किसी आग को नहीं बल्कि ऊर्जा को जन्म दे रहा है। उन्होंने कहा कि मैं आज उन लोगों से आह्वान करूंगा, आइए आप महसूस कीजिये अपनी सोच पर पुनर्विचार कीजिए। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि राम आग नहीं है, राम ऊर्जा है। राम विवाद नहीं, राम समाधान है। राम सिर्फ हमारे नहीं, राम तो सबके हैं। मोदी का यह बयान ऐसे समय में आया है जब लगातार विरोधियों की ओर से यह दावा किया जा रहा है कि राम मंदिर कार्यक्रम को भाजपा ने हाईजैक कर लिया है। यह पूरी तरीके से भाजपा और आरएसएस का कार्यक्रम हो गया है।

इसके अलावा देश में राम मंदिर को लेकर वर्षों तक राजनीति हुई है। मोदी ने उन तमाम दलों पर निशाना साधा जो अब तक राम मंदिर के निर्माण का विरोध कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आज मैं पूरे पवित्र मन से महसूस कर रहा हूं कि कालचक्र बदल रहा है।

ये सुखद संयोग है कि हमारी पीढ़ी को एक कालजयी पथ के शिल्पकार के रूप में चुना गया है। हजार वर्ष बाद की पीढ़ी राष्ट्रनिर्माण के हमारे आज के कार्यों को याद करेगी। इसलिए मैं कहता हूं - यही समय है, सही समय है। मोदी ने कहा कि हमें आज से, इस पवित्र समय से अगले 1 हजार साल के भारत की नींव रखनी है। मंदिर निर्माण से आगे बढ़कर हम सभी देशवासी इस पल से समर्थ, सक्षम, भव्य, दिव्य भारत के निर्माण की सौगंध लेते हैं।

मोदी ने कहा कि ये भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा- भारत के उत्कर्ष का, भारत के उदय का। ये भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा- भव्य भारत के अभ्युदय का, विकसित भारत का। मोदी ने कहा कि यह राम के रूप में राष्ट्रीय चेतना का मंदिर है। राम भारत की आस्था हैं, राम भारत की नींव हैं। राम भारत का विचार हैं, राम भारत का कानून हैं...राम भारत की प्रतिष्ठा हैं, राम भारत की महिमा हैं...राम नेता हैं और राम नीति हैं. राम शाश्वत हैं...जब राम का सम्मान होता है तो उसका प्रभाव वर्षों या सदियों तक नहीं रहता, उसका प्रभाव हजारों वर्षों तक होता है।

राम हमारे नहीं सबके हैंः मोदी

राम मंदिर में प्रभू श्रीराम बाल स्वरूप में मनमोहक छवि के साथ विराजमान हो गए है। अयोध्या में भावविभोर करने वाले प्राण प्रतिष्ठा समारोह में रामलला की बालस्वरूप मूर्ति के दर्शन हुए है। सदियों के इंतजार के बाद ये क्षण आया है जब रामलला अपने भव्य महल में विराजमान हो सके है। रामलला अब टेंट में नहीं बल्कि दिव्य मंदिर में विराजमान हुए है। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होने के बाद सियावर रामचंद्र की जय और जय श्री राम के जयकारे लगाए गए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि 22 जनवरी 2024 का सूरज अद्भुत आभा के साथ उदय हुआ है। ये नए काल चक्र का द्योतक है। ये क्षण आलौकिक है, ये पल पवित्रतम है। उन्होंने कहा कि रामलला को अब टेंट में नहीं रहना होगा। अब वो इस दिव्य मंदिर में रहेंगे। आज हमारे राम आए है। मुझे विश्वास है कि जो कुछ हुआ है वो देश के राम भक्तों तक जरुर पहुंचेगा। ये अनुभूति देश के हर राम भक्त को हो रही है। इस दौरान सभी को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि राम आग नहीं, ऊर्जा है। राम विवाद नहीं समाधान है। राम सिर्फ हमारे नहीं सभी के है। राम वर्तमान नहीं अनंतकला है। उन्होंने कहा कि राम भारत की आस्था है। राम भारत का आधार है। वो देश के विचार हैं और विधान भी है। राम ही भारत के चेतना और चिंतन है। राम से ही भारत की प्रतिष्ठा और प्रताप है। राम प्रभाव, प्रवाह, नेति और नीति है। जब राम की प्रतिष्ठा होती है तो इसका प्रभाव शताब्दियों तक नहीं बल्कि हजारों वर्षों तक रहता है। बता दें कि सुनहरी रंग का कुर्ता, क्रीम रंग की धोती और उत्तरीय पहने प्रधानमंत्री मोदी नवनिर्मित राम मंदिर के मुख्य द्वार से अंदर तक पैदल चलकर कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे और गर्भगृह में प्रवेश किया। प्रधानमंत्री इस दौरान अपने हाथ में लाल रंग के कपड़े में लिपटा हुआ चांदी का एक छत्र भी लेकर आए थे। प्रधानमंत्री मोदी ने उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख मोहन भागवत की उपस्थिति में 'प्राण प्रतिष्ठा' से संबंधित अनुष्ठान किए।

भागवत ने समझाई भारत को विश्व गुरु बनाने की राम नीति, कहा

सभी विवादों को छोड़कर एकजुट रहना होगा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि राम राज्य आ रहा है और देश में सभी को विवादों से दूर रहना चाहिए और एकजुट रहना चाहिए। उनकी यह टिप्पणी सोमवार, 22 जनवरी को अयोध्या मंदिर में राम लला की नई मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा के बाद आई। उन्होंने अयोध्या में राम लला की मूर्ति के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के बाद कहा कि राम राज्य आ रहा है और हमें सभी विवादों को दूर करना होगा और छोटे-छोटे मुद्दों पर आपस में लड़ना बंद करना होगा। हमें अहंकार छोड़ना होगा और एकजुट रहना होगा। भागवत ने यह भी कहा कि रामलला 500 साल बाद घर लौटे हैं और भारत का आत्म-गौरव भी लौटा है। उन्होंने कहा कि लेकिन वह (राम) क्यों चले गए? वह इसलिए चले गए क्योंकि अयोध्या में विवाद थे। उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत कई लोगों की तपस्या के बाद राम लला की घर वापसी हुई। प्रधानमंत्री ने अकेले ही तप किया था और अब, हम सभी को वह करना होगा। भागवत ने कहा कि अयोध्या में रामलला की प्रतिष्ठा के साथ ही भारत का आत्मगौरव लौट आया है। और आज का कार्यक्रम एक नए भारत का प्रतीक बन गया है जो खड़ा होगा और पूरी दुनिया को मदद प्रदान करेगा। उन्होंने कहा कि यह जानते हुए कि हर जगह राम हैं, हमें आपस में समन्वय बनाना होगा। साथ रहना ही धर्म का पहला सच्चा आचरण है। भागवत ने कहा कि करुणा दूसरा कदम है, उन्होंने लोगों से कहा कि वे जो कमाते हैं उसमें से कम से कम अपने लिए रखें और शेष दान में दें। उन्होंने कहा कि यह करुणा का अर्थ है। आपको अपनी इच्छाओं को नियंत्रण में रखना चाहिए। जहां सरकारी योजनाएं गरीबों को राहत दे रही हैं, वहीं हमें समाज को भी बांधना चाहिए क्योंकि सभी हमारे भाई हैं। जहां भी आपको दुख और दर्द दिखे, वहां सेवा करें। अयोध्या मंदिर में राम लला की मूर्ति की प्रतिष्ठा का नेतृत्व प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने किया और लाखों लोगों ने अपने घरों और देश भर के मंदिरों में टेलीविजन पर इसे देखा।

प्रमुख समाचार

शिवसेना सुप्रीम कोर्ट ने एकनाथ से मांगा जवाब

मुंबई। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उनके खेमे के 38 अन्य शिवसेना विधायकों से उद्धव बालासाहेब ठाकरे (यूबीटी) समूह द्वारा दायर एक याचिका पर जवाब मांगा, जिसमें शिंदे के खिलाफ अयोग्यता याचिकाओं को खारिज करने के महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष के फैसले को चुनौती दी गई है। वे विधायक जिन्होंने 2022 में विद्रोह के दौरान उनका समर्थन किया और सीएम के गुट को असली शिवसेना माना। भारत के मुख्य न्यायाधीश धनंजय वाई चंद्रचूड़ की अगुवाई वाली एक पीठ ने उन सभी 39 विधायकों को नोटिस जारी किया, जिनके खिलाफ सदन में पार्टी व्हिप का उल्लंघन करने के लिए दल-बदल विरोधी कानून के तहत ठाकरे खेमे द्वारा अयोग्यता याचिकाएं दायर की गई थीं। न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने दो सप्ताह के बाद मामले पर फिर से सुनवाई करेगी। जून 2022 में शिवसेना को विभाजन का सामना करना पड़ा जब एकनाथ शिंदे और 38 अन्य विधायकों ने सरकार बनाने के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) से हाथ मिला लिया। विद्रोह ने तत्कालीन महा विकास अघाड़ी (एमवीए) सरकार को गिरा दिया।

नासा ने भारत के चंद्रयान 3 के लैंडर का पता लगाया

नयी दिल्ली। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के, चंद्रमा की कक्षा में चक्कर लगा रहे अंतरिक्ष यान ने भारत के चंद्रयान-3 मिशन के तहत भेजे गए विक्रम लैंडर की चंद्रमा पर स्थिति का सफलतापूर्वक पता लगा लिया है। अमेरिकी एजेंसी ने यह जानकारी दी। नासा ने बताया कि लेजर रोशनी को लूनर रेकॉनिसेंस ऑर्बिटर (एलआरओ) और विक्रम लैंडर पर एक छोटे रेट्रोरिफ्लेक्टर के बीच प्रसारित और परावर्तित किया गया, जिससे चंद्रमा की सतह पर लक्ष्य का सटीकता के साथ पता लगाने की एक नई शैली का तरीका मिल गया। लैंडर चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में मंज़िनस क्रेटर के पास एलआरओ से 100 किलोमीटर दूरथा, जब एलआरओ ने पिछले साल 12 दिसंबर को इसकी ओर लेजर तरंगें भेजीं। ऑर्बिटर ने विक्रम पर लगे एक छोटे रेट्रोरिफ्लेक्टर से वापस लौटकर आई रोशनी दर्ज की जिसके बाद नासा के वैज्ञानिकों को पता चला कि उनकी तकनीक काम कर गई है।

भाजपा महिला विरोधी है, सीता के बारे में नहीं बोलती

कोलकाता। ममता ने कहा कि मुझे इसकी परवाह नहीं कि कौन किसकी पूजा करता है। मुझे देश में बेरोजगारी से दिक्कत है। कहाँ गया देश का पैसा? टीएमसी सांसद अभिषेक बनर्जी ने कहा कि आज बंगाल के लिए गौरव का दिन है, जहां पूरा देश धार्मिक कार्यक्रम में लगा हुआ है, वहीं बंगाल के लोग सड़क पर एक साथ खड़े होकर शांति की प्रार्थना कर रहे हैं। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सुप्रीमो ममता बनर्जी ने सोमवार को कोलकाता में अपनी सर्व-धर्म सद्भाव रैली शुरू की। यह रैली आज पहले आयोजित अयोध्या में राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा (प्रतिष्ठापन) समारोह के साथ मेल खाती है। अपनी ट्रेडमार्क सफेद और नीली बॉर्डर वाली सूती साड़ी और गले में शॉल लपेटे ममता बनर्जी के साथ विभिन्न धर्मों के धार्मिक नेता और टीएमसी नेता भी थे। उन्होंने शहर के हाजरा मोड़ इलाके से संघति मार्च शुरू किया। कोलकाता में सर्वधर्म रैली में ममता बनर्जी ने कहा कि मैं चुनाव से पहले धर्म का राजनीतिकरण करने में विश्वास नहीं करती। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि भाजपा भगवान राम के बारे में बात करती है

अयोध्या पर सुको के आदेश के बाद तमिलनाडु में सीधा प्रसारण

हैदराबाद। सुप्रीम कोर्ट सरकार द्वारा सोमवार को अयोध्या में भगवान राम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा (प्रतिष्ठापन) समारोह के सीधे प्रसारण के लिए ठीक नहीं करने के निर्देश दिए गए, जिसके बाद बिजली द्रमुक और तमिलनाडु राष्ट्रपति के अन्नामलाई के बीच वाकयुद्ध हुआ। अन्नामलाई की प्रतिक्रिया पर अदालत के आदेश पर स्कूल के सलाहकार सरवनन अन्नादुराई ने कहा कि अफ़वाहें मत फैलाओ। तमिलनाडु भाजपा अध्यक्ष के अन्नामलाई ने कहा कि भगवान राम के भक्त किसी भी निजी परिसर के भीतर एक एलईडी स्क्रीन पर अभिषेक कार्यक्रम का प्रसारण करने के लिए स्वतंत्र हैं, और यदि एचआर एंड सीई-प्रशासित मंदिरों में समारोह आयोजित किए जाते हैं तो सूचना दी जानी चाहिए। अन्नामलाई ने कहा कि भजन आयोजित करने, विशेष पूजा करने या अन्नदान करने पर कोई प्रतिबंध नहीं है। अन्नामलाई को जवाब देते हुए डीएमके प्रवक्ता ने कहा कि कोर्ट ने अन्नामलाई के झूठ का पर्दाफाश कर दिया है। मद्रास उच्च न्यायालय के आदेश का हवाला देते हुए अन्नादुराई ने कहा कि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि शुभ अवसर को ध्यान में रखते हुए समारोह का आयोजन करना.

19 बच्चे प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित

नई दिल्ली. राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बच्चों को इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के अत्यधिक इस्तेमाल के प्रति आगाह किया। उन्होंने कहा कि इससे विभिन्न स्वास्थ्य समस्याएं हो रही हैं। 19 प्रतिभाशाली असाधारण बच्चों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्रदान करते हुए उन्होंने उनसे कम से कम एक खेल खेलने का आग्रह किया। राष्ट्रपति ने एक समारोह में 18 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के नौ लड़कों एवं 10 लड़कियों को पुरस्कृत किया। ये पुरस्कार असाधारण बहादुरी, कलात्मक कौशल, नवीन सोच और निस्वार्थ सेवा के लिए प्रदान किए गए। उन्होंने कहा कि बच्चे बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। उनमें लगन और मेहनत के बल पर पहचान बनाने की क्षमता है। यह बच्चों की उपलब्धियों का उत्सव मनाने का अवसर भी है। उन्होंने कहा कि अब समाज के सभी लोगों का कर्तव्य है कि वे बच्चों को सही राह दिखाएं। राष्ट्रपति ने प्रौद्योगिकी के सही ढंग से उपयोग पर भी जोर दिया। उन्होंने शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास के लिए बच्चों के प्रौद्योगिकी के उपयोग की सराहना की। साथ ही डीपफेक, वित्तीय धोखाधड़ी और बाल शोषण जैसी चिंताओं का जिक्र इसके दुरुपयोग के प्रति आगाह किया। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया संचार और जागरूकता के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है.

कितनी कामयाब होगी इंडिया गठबंधन की सोशल इंजीनियरिंग

चंद्रभूषण

अयोध्या में राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के समय ही बिहार से एक बड़ी जवाबी राजनीतिक पहल शुरू होती दिख रही है। 21 से 24 जनवरी तक समस्तीपुर के कर्पूरी ग्राम (पुराना नाम पिटौंझिया) में पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर की 101वीं जयंती मनाने के साथ ही कुछ बड़े आयोजनों के जरिए जाति जनगणना के नतीजों और पिछड़ा आरक्षण के बदले स्वरूप पर राज्यव्यापी चर्चा कराने की योजना है। पिछड़ा गोलबंदी की जो बड़ी कोशिश बीच में पांच राज्य विधानसभाओं के चुनाव के दौरान छूट सी गई थी, उसी टूटे तार को अब फिर से जोड़ा जा रहा है।

नीतीश सरकार ने पिछली गांधी जयंती (2 अक्टूबर, 2023) को जाति जनगणना के नतीजों की घोषणा की थी, जिसमें पिछड़ों और अति पिछड़ों के साथ ही दलितों का प्रतिशत भी अनुमान से ज्यादा पाया गया था। उसी के आधार पर नवंबर, 2023 में बिहार मंत्रिमंडल ने जाति आधारित आरक्षण को 65 फीसदी, और ईडब्ल्यूएस आरक्षण को मिलाकर 75 फीसदी करने का फैसला लिया था। इससे पैदा हुई हलचल का इस्तेमाल कांग्रेस और खासकर राहुल गांधी ने हाल के विधानसभा चुनावों के दौरान भी किया, लेकिन छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और राजस्थान में उन्हें इसका फायदा मिलना तो दूर, उलटे नुकसान ही उठाना पड़ गया। अभी बिहार में गठबंधन दलों के इस नए प्रयास के तुरंत बाद 25 जनवरी को राहुल गांधी की न्याय यात्रा बिहार में प्रवेश करेगी। देखना है कि राहुल गांधी जेडीयू, आरजेडी और लेफ्ट की इस साझा मुहिम के साथ कांग्रेस को किस हद तक जोड़ पाते हैं। इससे ही तय होगा कि 'कमंडल राजनीति' के मुकाबले इंडिया गठबंधन कोई जवाबी 'मंडल मुहिम' शुरू कर पाएगा या नहीं। बताया जा रहा है कि ममता बनर्जी ऐसी किसी भी योजना से सहमत नहीं हैं। लेकिन आम चुनाव में विपक्ष कुछ दम से खड़ा दिखे, इसकी जरूरी शर्त के रूप में इंडिया गठबंधन के सारे घटक दल अलग-अलग स्तरों पर इससे सहमति जता सकते हैं।

गौरतलब है कि बिहार में मंडल अनुशंसा ठीक-ठीक उस तरह से लागू नहीं की गई है, जिस तरह इसे पूरे देश में लागू किया गया है। बिहार में मंडल आयोग को कर्पूरी फॉर्म्यूले के साथ अमल में उतारा गया है। इस बात का एक अलग मतलब है और साझा विपक्ष को इसे अलग से रेखांकित भी करना चाहिए। सामाजिक न्याय का निहितार्थ केवल ताकतवर पिछड़ों की दावेदारी नहीं है, कम से कम बिहार में यह सुनिश्चित करने में कर्पूरी फॉर्म्यूले ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। लेकिन यह क्या है, और इसकी शुरुआत कैसे हुई, यह जानने के लिए हमें थोड़ा पीछे जाना होगा। बिहार में एक बार छह महीने और दूसरी बार लगभग दो साल मुख्यमंत्री रहे कर्पूरी ठाकुर समाज के बहुत कमजोर हिस्से से आए एक आदर्शवादी राजनेता थे। अपनी सरकार गिरना तय जानकर भी उन्होंने पिछड़ी और अति पिछड़ी जातियों के अलावा महिलाओं को भी सरकारी नौकरियों और शिक्षण संस्थाओं में आरक्षण देने की व्यवस्था की थी।

जननायक कर्पूरी (24 जनवरी 1924-17 फरवरी 1988) ने अपने जीवन अनुभव को ध्यान में रखते हुए अति पिछड़ों को पिछड़ों से अलग करके देखा। जाहिर है, इसके पीछे उनकी सोच वोट बैंक की नहीं, न्याय की थी। 1971 में थोड़े समय के लिए मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने सामाजिक पिछड़ेपन का निर्धारण करने के लिए मुंगेरीलाल आयोग का गठन किया था, जिसने 1976 में अपनी रिपोर्ट दी। फिर 1978 में बतौर मुख्यमंत्री उन्होंने इसकी अनुशंसाओं पर अमल करके भी दिखा दिया। इसमें पिछड़ों को 8 प्रतिशत और अति पिछड़ों को 12 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था की गई थी। यानी अति पिछड़ी, या 'प्रजा जातियों' के लिए पिछड़ों की तुलना में डेढ़ गुना आरक्षण। इसके अगले साल, 1979 में केंद्र की जनता पार्टी सरकार में प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने बिहार के ही एक अन्य पूर्व मुख्यमंत्री बिंदेश्वरी प्रसाद मंडल के नेतृत्व में इसी काम के लिए 'मंडल आयोग' का गठन किया, जिसकी अनुशंसाओं को प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने 1990 में लागू किया। कमाल यह कि मंडल अनुशंसाओं में पिछड़ा वर्ग और अति पिछड़ा वर्ग जैसी दो श्रेणियों की जरूरत ही नहीं महसूस की गई थी।

इसके तहत कुल पिछड़ा आरक्षण 27 फीसदी घोषित किया गया, जो मुंगेरीलाल आयोग द्वारा अनुशंसित पिछड़ा, अति पिछड़ा, महिला और विकलांग के समेकित 24 प्रतिशत से ज्यादा था, लेकिन अति पिछड़ों तक इसके पहुंचने की संभावना नगण्य थी। अति पिछड़ा जैसी कोई अलग श्रेणी ही मंडल में में न होने के चलते शुरू में बिहार के इस श्रेणी वाले पिछड़ों का बहुत नुकसान होता दिखा। नतीजा यह कि कर्पूरी ठाकुर की विरासत के चलते ही वहां मंडल के भीतर कर्पूरी फॉर्म्यूले की व्यवस्था बनाई गई। अभी बीते नवंबर में आरक्षण का जो नया खाका बिहार में अपनाया गया है, उसमें भी सरकारी नौकरियों और शिक्षण संस्थानों में अति पिछड़ों के लिए 25 प्रतिशत और पिछड़ों के लिए 18 प्रतिशत सीटों का प्रावधान है। यह फॉर्म्यूला पूरे देश के लिए समता का अचूक औजार बन जाएगा, ऐसा दावा तो खैर कोई नहीं करेगा।

खासकर यह देखते हुए कि सरकारी नौकरियां ही अभी बहुत कम बची हैं और बहुत खराब कामकाजी शर्तों के साथ ठेके पर काम कराने का चलन सारे ही सरकारी विभागों में चल पड़ा है। लेकिन नौकरियों और शिक्षण संस्थानों में आरक्षण का मुद्दा गरम रहने से सरकारों को समाज के बारे में कुछ तो सोचना ही पड़ेगा। पिछले कुछ सालों में राहुल गांधी की ख्याति राष्ट्रीय स्तर पर असुविधाजनक सवाल उठाने वाले राजनेता की रही है। कर्पूरी फॉर्म्यूले वाले सामाजिक न्याय का मुद्दा उठाकर वह देश के कमजोर तबकों का समर्थन हासिल करने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन इसमें कितनी सफलता मिलेगी, यह तो वक्त ही बताएगा।

बिलासपुर में अयोध्या राममंदिर प्राण प्रतिष्ठा का उत्साह, डिप्टी सीएम अरुण साव ने किए राम के दर्शन

बिलासपुर। अयोध्या राममंदिर प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पूरा देश राममय हो चुका है।22 जनवरी का ये दिन ऐतिहासिक है। इस दिन हर कोई रामलला के मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह का हिस्सा बना। इस मौके पर भक्त राममंदिरों में इकट्ठा होकर प्रभु श्रीराम के दर्शन कर रहे हैं।वहीं छत्तीसगढ़ के डिप्टी सीएम अरुण साव ने भी परिवार समेत श्रीराम के दर्शन किए। बिलासपुर के डेढ़ सौ वर्ष पुराने ऐतिहासिक मंदिर में अरुण साव सपरिवार दर्शन लाभ लिया। बिलासपुर के राम मंदिर को इस अवसर पर भव्य रूप से सजाया गया है। विशेष झांकी के साथ ही भगवान राम की प्रतिमा का विशेष श्रृंगार किया गया है।

बिलासपुर के तिलक नगर राममंदिर में इस अवसर पर विशेष साज सज्जा की गई थी।सुबह से ही राम मंदिर में भक्तों का तांता लगा था।भगवान राम लला के दर्शन के लिए लोगों में उत्साह देखा गया। इस अवसर पर प्रदेश के डिप्टी सीएम अरुण साव परिवार सहित मंदिर दर्शन के लिए पहुंचे। अरुण साव ने भगवान राम की पूजा अर्चना कर प्रदेश वासियों की खुशहाली की कामना की।

अरुण साव ने कहा 500 साल बाद भगवान राम की अयोध्या के भव्य मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा हो रही है। छत्तीसगढ़ भगवान राम का ननिहाल है, यहां चारों ओर उत्साह-उमंग है। पूरे प्रदेश में कई आयोजन हो रहे हैं। भक्त भक्ति के वातावरण में डूबे हुए हैं।

रामभक्ति में डूबे भक्त = अयोध्या राममंदिर प्राणप्रतिष्ठा को लेकर बिलासपुर शहर भगवामय हो गया है। चौक चौराहों और गलियों के साथ ही मंदिरों में भगवा रंग के झंडे, तोरण और सजावट किया गया है। मंदिरों में भक्त पूजा अर्चना करने पहुंचे। सड़कों पर

लाइन लगाकर लोग अपने बारी का इंतजार करते नजर आए। शहर के अलग-अलग मंदिरों के सामने भंडारा का आयोजन किया गया है। लोग राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा को लेकर उत्साहित हैं।

500 साल बाद आया अद्भुत संयोग = 500 साल के इंतजार के बाद उत्तर प्रदेश के अयोध्या में भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर निर्माण होने के बाद 22 जनवरी सोमवार को विधि विधान से प्राण प्रतिष्ठा की गई। इस दौरान जहां पूरा देश टीवी स्क्रीन और एलईडी के माध्यम से प्राण प्रतिष्ठा का सीधा प्रसारण देख रहा था। वहीं देश के सभी मंदिरों में पूजा अर्चना के साथ ही भगवान राम की स्तुति की गई।

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा को मंत्री चौधरी ने बताया गौरव का क्षण

रायगढ़। अयोध्या में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के मद्देनजर रायगढ़ के गांधीगंज स्थित राम मंदिर में भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में वित्त मंत्री व नगर विधायक ओपी चौधरी की सहभागिता रही, जिन्होंने मंदिर दर्शन करने के साथ आरती में शामिल हुए।

मंत्री ओपी चौधरी ने इस अवसर पर कहा कि अयोध्या में राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह सनातनियों के लिए गौरव का क्षण है। रामजी की एक संस्कृति है, और इस संस्कृति में ऐसी ताकत है, जो दुनिया को सच्चा और अच्छा रास्ता दिखा सकती है। पूरी दुनिया इस संस्कृति का अनुसरण करने लगेगी तो न ग्रीन हाउस इफेक्ट होगा, न विश्व युद्ध होगा और न ओजोन परत डिफेट होगा। धरती के सस्टेनेबल विकास की बात की जाती है, जो हमारे संस्कृति के जड़ों में है, इसलिए हम पर्वत पूजन, वृक्ष पूजन करते हैं।

ओपी चौधरी ने कहा कि सभी समाज को सामंजस्य के साथ चलने का संदेश भगवान श्रीराम का जीवन देती है। वे भगवान पुरुषोत्तम राम है, उनसे हमें सीख मिलती है। दिवाली तो वनवास से रामजी लौटे तब का त्योहार है, और पांच सौ सालों बाद ये उनका आगमन हो रहा है, तो दिवाली से भी अधिक भव्य होगा ही। छत्तीसगढ़ में अद्भुत वातावरण है, भगवान राम के प्रति लोगों की आस्था है, जिसे सदियों से कहीं न कहीं कुचला गया और अब वे प्रकट हो कर सामने आ रहे हैं।

वित्त मंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ रामजी का ननिहाल है, और माता कौशल्या की भूमि है। भगवान राम हमारे भांचा हैं। दूसरे प्रदेशों की अपेक्षा छत्तीसगढ़ में ही भांचा के पांव पड़ते हैं। पिछले सरकार द्वारा राम वन गमन पथ निर्माण में हुए भ्रष्टाचार को लेकर वित्त मंत्री ओपी चौधरी ने कहा कि दुखद बात है कि राम वन गमन पथ को लेकर भ्रष्टाचार हुए हैं। अब भ्रष्टाचार से मुक्त कर अच्छे गवर्नेंस के साथ कार्य करेंगे।

राममय हुआ कोरबा, जय श्रीराम के जयघोष से गूंज रहे मंदिर परिसर

कोरबा। कोरबा जिला पूरा राम में हो गया है शहर के प्रवेश द्वार से लेकर अंतिम छोर तक जिले में राम भक्त नजर आ रहे हैं, सड़क पर जय श्रीराम के नारे गूंज रहे हैं वही जगह-जगह विभिन्न आयोजन भी किए गए हैं। शहर के मुख्य चौक चौराहा पर भगवा रंग से छावनी में तब्दील कर दिया गया है वहीं जगह-जगह भंडारे का आयोजन भी किया गया है। जिला प्रशासन की ओर से बुधवारी स्थित राम मंदिर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया है जहां कलेक्टर अजीत बसन्त और कोरबा एसपी जितेंद्र शुक्ला अपने टीम के साथ सुबह से ही मौजूद हैं। जिला प्रशासन की ओर से राम मंदिर में विशेष साथ सजा की गई है वही कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया है जहां सुबह से ही भजन संध्या के अलावा छत्तीसगढ़ के लोक संस्कृति को बढ़ावा देने कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इस आयोजन में नगर निगम के आयुक्त, जिला पंचायत सीईओ, जनपद सीईओ के अलावा नगर निगम, और पुलिस के आलाधिकारी मौके पर मौजूद रहे। कोरबा सांसद ज्योत्सना महंत भी राम मंदिर पहुंची उनके साथ महापौर राजकिशोर प्रसाद समिति कांग्रेस के नेता मौजूद रहे। सांसद ने राम मंदिर पहुंचकर श्रीराम मंदिर में राम भगवान जी का पूजा अर्चना कर श्री फल चढ़ाए वही मंदिर में फेरे लिए। सांसद ने कहा कि पूरा देश आज राम में हो गया है उनको भी तन मन और शरीर में राम बसे हैं और जय श्री राम के नारे लगाए।

जगदलपुर की सड़कों पर निकली अयोध्या राममंदिर की झांकी

जगदलपुर । अयोध्या में 22 जनवरी दिन सोमवार को भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा हुई।इस समारोह का साक्षी पूरा देश बना।इस पावन अवसर पर पूरे देश में कई जगह पर उत्सव सा माहौल है।छत्तीसगढ़ को राम का ननिहाल कहा जाता है।यहां भी अयोध्या राममंदिर प्राण प्रतिष्ठा का उत्सव मनाया जा रहा है। छत्तीसगढ़ का बस्तर भी इस मौके पर राम के माहौल में डूबा हुआ है। यहां पर सनातन धर्म के अनुयायी राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा को किसी उत्सव की तरह मना रहे हैं। जगदलपुर में विशेष आयोजन = बस्तर में सुबह से ही मंदिरों में भक्तों का तांता लगा हुआ है।राम मंदिर में विशेष पूजा अर्चना की गई। कई जगहों पर पूजा अर्चना के साथ भंडारे का भी आयोजन हुआ। वहीं कुछ रामभक्तों ने शहर में चलित अखंड रामायण करते हुए शोभा यात्रा निकाली। जगदलपुर में निकाली गई शोभा यात्रा में मुख्य आकर्षण का केंद्र राममंदिर की झांकी है। जिसे कारीगरों ने अयोध्या राममंदिर के तर्ज पर बनाया है।

सर्व आदिवासी समाज का मंगलवार को बस्तर बंद

■ **गोली लगने से बच्ची की मौत और हसदेव में पेड़ों की कटाई का विरोध**

जगदलपुर। सर्व आदिवासी समाज ने 23 जनवरी को बस्तर बंद बुलाया है। बीजापुर जिले के ग्राम मुतवेंडी की 6 माह की मासूम मंगली की गोली लगने से मौत और हसदेव में पेड़ों की कटाई के विरोध में बंद का आव्हान किया गया है। जिसमें बस्तर, कोंडागांव, कांकेर, नारायणपुर, दंतेवाड़ा, सुकमा जिला बंद रहेगा।

सर्व आदिवासी समाज ने बुलाया बंद

सर्व आदिवासी समाज के संभागीय अध्यक्ष प्रकाश ठाकुर ने कहा, छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में बीते 1 जनवरी को 6 माह की मासूम बच्ची की हत्या के मामले में अब तक जांच नहीं होता देख सर्व आदिवासी समाज का गुस्सा फूट पड़ा है। इस घटना की न्यायिक जांच की मांग को लेकर सर्व आदिवासी समाज बस्तर संभाग ने मंगलवार को बस्तर संभाग बंद का आव्हान किया हैं।

हसदेव अरण्य की कटाई का भी विरोध

सर्व आदिवासी समाज के संभागीय अध्यक्ष प्रकाश ठाकुर का कहना है कि हसदेव में आदिवासियों की सबसे बड़ी पूंजी वनों की अंधाधुंध कटाई हो रही है। जिससे छत्तीसगढ़ के आदिवासी

समाज को आहत पहुंचा है। इसलिए हसदेव अरण्य मामले में सरकार से खदान निरस्त करने की मांग कर रहे हैं।

क्या है पूरा मामला

बीजापुर के मुतवेंडी में 6 माह की बच्ची की मुठभेड़ के दौरान गोली लगने से मौत हो गई थी। मामले में सर्व आदिवासी समाज ने एक दिन का बीजापुर बंद बुलाया था। बंद को जिले के व्यापारी संघ ने भी समर्थन दिया था। भोपालपटनम, मद्देड समेत बीजापुर के व्यापारियों ने अपनी दुकानें बंद रखी थी। इससे पहले बुधवार को ग्रामीणों ने इस मामले में बड़ी रैली निकाली और प्रशासन को ज्ञापन सौंपा था। बता दें कि मुतवेंडी के ग्रामीण मामले की जांच की मांग को लेकर आंदोलन कर रहे हैं।

श्रीराम के नाम पर लोरमी में बनेगा विश्व रिकार्ड 5 हजार किलो बेर से बनाई अद्भूत रंगोली

लोरमी। छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री अरुण साव सोमवार को लोरमी दौरे पर थे। इस दौरान श्री राम के नवीन मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा भी करेंगे। इस अवसर को चिर स्थाई बनाने के लिए कलाकारों ने 5 हजार स्क्वायर फीट जमीन पर 5 हजार किलो बेर से श्रीराम की अनोखी रंगोली बनाई है।

छत्तीसगढ़ श्रीराम जी का ननिहाल माना जाता है। आज अयोध्या में श्री राम जी के प्रतिमा का प्राण प्रतिष्ठा हो रहा है, जिसको लेकर छत्तीसगढ़ के मुंगेली जिले के लोरमी में भी खासा उत्साह देखा जा रहा है। जगह-जगह लोग इस ऐतिहासिक पल को यादगार बनाने के लिए अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम कर रहे हैं, कई स्थानों पर कलश यात्रा सहित शोभायात्रा निकाली जा रही है, वही श्रीराम के कई मंदिरों में प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम आयोजित है।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री अरुण साव द्वारा आमंत्रित कलाकारों की टीम ने लोरमी हाईस्कूल मैदान में 5 हजार किलो से बेर की श्रीराम की रंगोली बनाई है, जो एक अलग ही आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। साव के दौरे के दौरान श्रीराम के नवीन मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के अलावा कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया है। इस दौरान राम मंडलियों को जिला प्रशासन की पहल से अरुण साव के हाथों वाद्य यंत्र भी प्रदान किया जाएगा।

प्राण प्रतिष्ठा का होगा लाइव प्रसारण

आज रामलला की नगरी अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा हुआ। इस आयोजन का लोरमी के मानस मंच सहित हाईस्कूल मैदान में एलईडी के माध्यम से लाइव प्रसारण हुआ। डिप्टी सीएम अरुण साव हाईस्कूल मैदान में मौजूद रहेंगे, इसके अलावा लोरमी क्षेत्र सहित आसपास के हजारों की संख्या में राम भक्त भी कार्यक्रम के साक्षी बने।

भाजपा नेता की हत्या के आरोपी पार्षद के खिलाफ प्रशासन की बड़ी कार्रवाई

■ **3 करोड़ के अवैध होटल को बुलडोजर चलाकर किया ध्वस्त**

कांकेर। पखांजूर नगर पंचायत के भाजपा नेता असीम राय की हत्या के आरोपी पार्षद विकास पाल के अवैध होटल को आज बुलडोजर से ध्वस्त करने की कार्रवाई की जा रही हैं। बताया जा रहा है कि, यह होटल पार्षद ने अपने रसूख से बनवाया था, जिसकी कीमत 3 करोड़ रुपये बताई जा रही हैं। इस कार्रवाई के पहले पखांजूर पटवारी कार्यालय की ओर से सूचना पत्र भी जारी किया था और अब अवैध होटल को जमींदोज किया जा रहा है।

बता दें कि, जिले में 7 जनवरी 2024 को हुई बीजेपी नेता असीम राय की हत्या के मामले का पुलिस ने बीते दिनों खुलासा किया था। पुलिस के मुताबिक इस हत्याकांड में असीम राय को मारने के लिए कांग्रेस नेता और नगर पंचायत अध्यक्ष बप्पा गांगुली ने 7 लाख की सुपारी दी

थी। इस केस में 12 लोग शामिल थे, जिन्हें पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

पार्षद ने शासकीय भूमि पर किया था अतिक्रमण

प्रशासन की इस कार्रवाई को लेकर पखांजूर एसडीएम ने बताया कि, पखांजूर नगर पंचायत की घास जमीन पर पार्षद विकास पाल ने अवैध तरीके से अतिक्रमण कर तीन मंजिला बिल्डिंग बनाई है। जिसमे होटल संचालित है और टेंट का कुछ सामान रखा हुआ है। हमने जांच कराई जिसमें शासकीय भूमि पर अतिक्रमण की पुष्टी हुई है। जिसके मद्देनजर अतिक्रमण हटाने के लिए यह कार्रवाई की जा रही है।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

मंदिर परिसर में गरुण पक्षी के 4 बच्चे, श्रद्धालु करने लगे पूजा

मुंगेली। पुरा देश रामलला की प्राण प्रतिष्ठा में राममय है, यहीं वजह है लोग अपने क्षेत्र के आसपास के मंदिरों की साफ सफाई कर रहे हैं। इसी कड़ी में मुंगेली जिले के श्वेतगंगा में प्राचीन श्रीराम जानकी मंदिर की साफ सफाई के दौरान विहंगम दृश्य लोगो के लिए कौतूहल का विषय बना हुआ है। यहां मंदिर के बगल में स्थित श्रीजगन्नाथ मंदिर के ऊपर अचानक चार गरुड़पक्षी के बच्चे आ गए हैं वो भी उस वक्त जब पूरा देश श्रीराम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा में मग्न है जिसे शुभ संकेत मानते हुए लोग पूजा अर्चना कर रहे है। इस दुर्लभ पक्षी के दर्शन के लिए आसपास सहित दूर-दूर से लोग पहुंच रहे हैं इस पक्षी का शास्त्रों में अलग महत्व है जिसे रामायण में जटायु के नाम से जाना जाता है। ग्रामीण इसकी सुरक्षा और खानपान के लिए व्यवस्था में लगे हुए हैं। मंदिर की साफ सफाई और सुरक्षा के साथ स्थानीय पुलिस रोजाना यहां श्रमदान में सहयोग कर रही है।

जवान ने पिया फिनाइल, कमांडर पर लगाया प्रताड़ना का आरोप

जगदलपुर। सुकमा जिले के पुलिस लाइन में पदस्थ सीएएफ के जवान ने रविवार की शाम को फिनाइल पीकर आत्महत्या करने की कोशिश की। जिसे बेहतर उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहीं जवान के द्वारा उठाये गए इस कदम के लिए अपने कंपनी कमांडर के द्वारा प्रताड़ना का आरोप लगाते हुए आत्महत्या करने की कोशिश की जाने की बात सामने आई है। घटना की जानकारी लगते ही जवान को बेहतर उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती किया गया है। वही घटना की जानकारी लगते ही आला अधिकारियों की टीम मौके पर आ पहुंची, साथ ही जवान की हालत के बारे में डॉक्टरों से चर्चा किया जा रहा है। मामले के बारे में जानकारी देते हुए पुलिस अधिकारियों ने जानकारी देते हुए बताया कि 18 वी वाहिनी छत्तीसगढ़ बल कैम्प पुलिस लाइन सुकमा में पदस्थ जवान टिकेश्वर साहू 40 वर्ष ने रविवार की शाम को पुलिस लाइन में ही फिनाइल का सेवन कर लिया। जानकारी लगते ही उसे गंभीर हालत में जिला अस्पताल उपचार के लिए ले जाया गया।

बलरामपुर में 78 बोरी अवैध धान जब्त

बलरामपुर। शासन के निर्देशानुसार खरीफ विपणन वर्ष 2023-24 के लिए 01 नवम्बर 2023 से धान खरीदी शुरू हो चुकी है। कलेक्टर श्री रिमिजियुस एक्का ने सभी निगरानी दलों, नोडल तथा राजस्व अधिकारियों को सख्त निर्देश दिये हैं कि धान के अवैध परिवहन एवं संग्रहण पर लगातार कार्यवाही हो तथा वास्तविक कृषकों से ही धान खरीदी की जाये। उपार्जन केन्द्रों में कृषकों के लिए सभी जरूरी व्यवस्थाएं हो ताकि वे सुगमता से धान का विक्रय कर पाएं। कलेक्टर श्री एक्का के निर्देशानुसार अनुविभागीय अधिकारी राजस्व रामानुजगंज के मार्गदर्शन में राजस्व विभाग की टीम के द्वारा उत्तरप्रदेश से आ रहे पिकअप वाहन में अवैध धान जब्त किया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार पिकअप में 30 बोरी धान रखकर अवैध रूप से परिवहन किया जा रहा था जिसे राजस्व विभाग की टीम ने जांच के दौरान जब्त कर सनावल थाना में सुपुर्द किया गया है। इसी प्रकार ग्राम चन्दननगर में सद्दाम के द्वारा सुनील लकड़ा के घर में अवैध रूप से 48 बोरी धान भण्डारित कर रखा गया था।

राममय हुआ जिला मोहला मानपुर अंबागढ़ चौकी

मोहला। श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर जिला मोहला मानपुर अंबागढ़ चौकी राममय से लीन हुआ। जिला मुख्यालय के साथ ही सभी विकासखंड मुख्यालय, सभी ग्राम पंचायतो, सभी छोटे-बड़े मंदिरों में राम नाम की गूंज देखने और सुनने को मिला। उत्साह, उमंग और भक्तिमय की धारा इस तरह से बही की हर किसी को इसमें लीन देखने को मिला। चारों तरफ खुशियां और उत्साह का मंजर देखने को मिला। आस्था और भक्ति का रंग लोगों में चढ़कर बोला। युवा, जवान, महिला, पुरुष, बच्चे, बूढ़े हर किसी में खुशी और उत्साह देखने को मिला। एक ओर जहां लोग नाच गा कर जूम रहे थे, वहीं दूसरी ओर अपने इष्ट देव की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर एक दूसरे को बधाई और शुभकामनाएं दे रहे थे। जिला मोहला मानपुर अंबागढ़ चौकी में चारों तरफ खुशियां और भक्ति का वातावरण से खुशनुमा माहौल निर्मित हुआ। अयोध्या में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर जिला मोहला मानपुर अंबागढ़ चौकी में मानस गायन महोत्सव का आयोजन किया गया।

प्राण प्रतिष्ठा के शुभ अवसर के साक्षी बने हजारों लोग

बलरामपुर। अयोध्या में हुए श्री राम लला के प्राण प्रतिष्ठा के अलौकिक पल के जिलेवासी साक्षी बने। हनुमान मंदिर में आयोजित जिला स्तरीय कार्यक्रम में कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक व स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने भगवान श्रीराम की पूजा अर्चना कर जिले वासियों की सुख समृद्धि की कामना की। चांदो चौक के हनुमान मंदिर में कलेक्टर श्री रिमिजियुस एक्का, पुलिस अधीक्षक डॉ. लाल उमेद सिंह, जिला पंचायत की मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रीमती रेना जमील सहित स्थानीय जनप्रतिनिधिगण एवं शहर के श्रद्धालुगण बड़ी संख्या में शामिल हुए। इस अवसर पर रामायण मंडलियों द्वारा भक्तिमय राम भजन की प्रस्तुति की गई। जिसमें श्रोतागण राम भक्ति में झूमते नजर आए। जिला प्रशासन द्वारा अयोध्या में हुए श्री राम लला प्राण प्रतिष्ठा को देखने के लिए लाइव प्रसारण की व्यवस्था की गई थी, जिसको देखने सभी अतिथिगण एवं नागरिकगण शामिल हुए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा श्री राम मंदिर के गर्भ गृह में किए गए प्राण प्रतिष्ठा अनुष्ठान का अलौकिक लाइव प्रसारण देखा।

सुबह हो या शाम इनके रग-रग में समाए हैं राम-राम

ललित कुमार सिंह

सुबह हो या शाम, इनके रग-रग में समाए हैं राम-राम...राम-राम... जी हां भगवान राम की भक्ति में दिन-रात लीन रहने वाले छत्तीसगढ़ के रामनामी अपने शरीर को ही मंदिर मानते हैं। वो अपने शरीर पर गोदना से राम-राम नाम गोदवाए सबको राम राज का संदेश देते हैं। समरसता का संदेश देते हैं। ये रामनामी हैं और न सिर्फ इनका चोला... शरीर का हर हिस्सा राम...राम...राम...के अक्षरों से नस-नस में विद्यमान है।

शरीर पर श्वेत परिधानों के साथ मोह, माया, लोभ, काम, क्रोध और व्यसनों को त्याग कर सबको भाई-चारे के साथ बिना किसी भेदभाव के शांतिपूर्ण तरीके से जीवनयापन का संदेश भी देते हैं। छत्तीसगढ़ के नवगठित जिले सक्ती के जैजैपुर विकासखंड में रामनामी समुदाय का तीन दिवसीय बड़े भजन का मेला नई पीढ़ी और पहली बार देखने वालों के लिए जहां कौतूहल का केंद्र बना है। वहीं इसके विषय में पहले से जानने और समझने वालों के लिए यह

सम्मान और गौरव से कम नहीं...। अयोध्या में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा से राममय हुए माहौल के बीच रामनामी समुदाय का बड़े भजन का यह मेला भी सद्भावना और मानवता का संदेश दे रहा है।

राम के प्रति अथाह प्रेम और अटूट आस्था की गाथा हैं रामनामी

अपने राम के प्रति अगाध,अथाह प्रेम और अटूट आस्था की यह गाथा हकीकत में कही विराजमान है, तो वह छत्तीसगढ़ के रामनामी समुदाय ही हैं। भगवान राम के ननिहाल छत्तीसगढ़ में रामनामी समुदाय का पादुर्भाव कई उपेक्षाओं, तिरस्कारो और संघर्षों की दास्तान है, जो 160 वर्ष से अधिक समय पहले अपनी आस्था पर पहुंची चोट के साथ इस रूप में जन्मी कि आने वाले काल में इन्हें अपनाने और मानने वालों की संख्या बढ़ती चली गई। वह दौर भी आया जब रामनामी समुदाय अपनी तपस्या और सादगी को अपनी उपासना के बलबूते साबित करने में सफल हुए।

इनका मानना है कि उनका राम तो हर जगह मौजूद है। वे अपने राम को कही ढूंढते भी नहीं.. न ही अपने शरीर पर राम... राम लिखवाने से परहेज करते हैं। रामनामी समाज के गुलाराम रामनामी बताते हैं कि उनका यह आयोजन सन 1910 से होता आ रहा है। जैजैपुर का आयोजन 115वां वर्ष है। साल में एक बार यह आयोजन बड़े भजन मेला के रूप में निरंतर किया जाता है। उन्होंने बताया कि रामनामी को कोई भी समाज और धर्म के लोग अपना सकते हैं,लेकिन उन्हें सदाचारी, शाकाहारी और नशे आदि से दूर रहते हुए मानवता के प्रति प्रेम को अपनाना होगा। उन्होंने यह भी बताया कि रामनामी अपने शरीर पर राम...राम लिखवाने के साथ ही कभी सिर पर केश नहीं रखते, महिला हाथों में चूड़ी या गले में माला भी नहीं पहनती। शरीर पर राम ही राम धारण होता है और यह प्राण त्यागने के बाद भी मिट्टी में दफन होते तक आत्मसात रहता है।

82 साल के रामनामी तिहारुराम ने बताया कि उनकी पत्नी फिरतीन बाई और उन्होंने चार दशक पहले ही राम को अपने जीवन और शरीर में आत्मसात किया है। एक साल पहले वे अयोध्या भी गए थे, इस बार रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में आमंत्रण आया था। यहां से रामनामी गए हैं और खुशी व्यक्त करते हुए कहते हैं कि सभी की कामना है कि जाति-पाति, ऊंच-नीच खत्म हो, समाज में भाईचारे के साथ सद्भावना का विकास हो। रामनामी समाज में महिला और पुरूष में कोई भेदभाव नहीं होने की बात कहते हुए तिहारु राम बताते हैं कि वे लोग मूर्तिपूजा नहीं करते, रामायण का पाठ करते हैं और अपने राम का जाप करते हुए मानवता का संदेश देते हैं।

रामोत्सव पर रामनामी समाज ने सीएम साय को पहनाया मोर मुकुट

जांजगीर चांपा। आज पूरा देश राममय हो गया है। रामलला के मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा आज अयोध्या में हुई है। पूरा देश राम नाम के जयकारे लगा रहा है।इस बीच रामजी का ननिहाल छत्तीसगढ़ भी राममय हो गया है। यहां भी हर मंदिर में रामजीकी खास पूजा अर्चना की गई है। इस बीच रामनाम को अपने हर अंग में बसा लेने वाले रामनामी समाज ने छत्तीसगढ़ के सीएम को एक खास मोर मुकुट पहनाया है। इस मोर मुकुट में राम नाम अंकित है।

दरअसल, जांजगीर चांपा के शिवरीनारायण धाम में सोमवार को रामनामी समाज ने राम नाम अंकित मोर मुकुट सीएम साय को पहनाया। रामनामी समाज ने मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के साथ ओम माथुर को भी मोर मुकुट पहनाया। इस दौरान जय श्री राम के नारे से माहौल गूंज उठा। शिवरीनारायण धाम में भी आज खास पूजा अर्चना की गई। पूरा प्रदेश राममय हो गया है। हर जगह रामजी के जयकारे और रामजीके गीत गूंज रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

हम सबके राम, रामो विग्रहवान धर्म कैलेंडर का सीएम ने किया विमोचन

रायपुर। अयोध्या धाम के श्रीराम जन्मभूमि में

निर्मित भव्य मंदिर में आज श्री रामलला के नूतन विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर छत्तीसगढ़ शासन के जनसंपर्क विभाग की ओर से श्री राम के अयोध्या धाम और वनवास काल में छत्तीसगढ़ यात्रा से जुड़ी स्मृतियों पर आधारित कॉफ़ी टेबल बुक हम सबके राम व विशेष कैलेंडर रामो विग्रहवान धर्म का विमोचन मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के कर कमलों से माता शबरी की भूमि शिवरीनारायण में किया गया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ प्रभारी श्री ओम माथुर, गौसेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष राजेश्री महंत श्री रामसुंदर दास, सांसद श्री गुहाराम अजगले, आयुक्त जनसंपर्क श्री मयंक श्रीवास्तव, संभागायुक्त श्रीमती शिखा राजपूत तिवारी, आईजी श्री अजय यादव, कलेक्टर आकाश छिकारा, एसपी श्री विजय अग्रवाल, अपर संचालक जनसंपर्क श्री जे एल दरियो उपस्थित रहे। रामो विग्रहवान धर्म कैलेंडर में अयोध्या धाम श्रीराम जन्मभूमि पर निर्मित भव्य मंदिर के साथ श्री रामलला की बेहद मनमोहक तस्वीर को समाहित किया गया है।

एआईसीसी ने भारत जोड़ो न्याय यात्रा के लिए की कोऑर्डिनेटर्स की नियुक्ति

रायपुर। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) ने राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा के लिए कोऑर्डिनेटर्स की नियुक्ति की है। यह नियक्ति उन राज्यों के लिए की गई है, जहां से राहुल गांधी की न्याय यात्रा गुजरेगी। कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ में धीरज गुर्जर और उषा नायडू को कोऑर्डिनेटर नियुक्त किया है, जो कि छत्तीसगढ़ में भारत जोड़ो न्याय यात्रा के लिए पीसीसी से कॉर्डिनेट करेंगे। बता दें कि, कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी की 14 जनवरी को मणिपुर से शुरू हुई भारत जोड़ो न्याय यात्रा 6200 किलोमीटर का सफर तय कर मुंबई में खत्म होगी। यात्रा छत्तीसगढ़ से होकर भी गुजरेगी। इस दौरान राहुल गांधी करीब पांच दिन तक छत्तीसगढ़ में रुकेंगे। छत्तीसगढ़ में 536 किलोमीटर की भारत जोड़ो न्याय यात्रा सात जिलों से होकर गुजरेगी। जिसका कांग्रेसीजन छत्तीसगढ़ में ऐतिहासिक स्वागत की तैयारी कर रहे हैं। भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी प्रदेश में पांच बड़ी जनसभाएं अलग-अलग क्षेत्रों में करेंगे। कहीं बेरोजगारों की तो कहीं किसान, आदिवासी, अनुसूचित जाति वर्ग और महिलाओं की सभाएं होंगी।

रायगढ़ के सिंगर नितिन दुबे को मिला छत्तीसगढ़ गौरव सम्मान

रायपुर। छत्तीसगढ़ में गायकीय के क्षेत्र में अलग पहचान बनाने वाले संगीतकार और अभिनेता नितिन दुबे को छत्तीसगढ़ गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान विकास परिषद संस्था की ओर से नूतन स्कूल टिकरापारा में आयोजित %विभूति अलंकरण समारोह 2024% में दिया गया। शिक्षा एवं संस्कृति मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने सम्मान पत्र और प्रतीक चिन्ह से सम्मानित किया है। सिंगर नितिन दुबे की कई पुराना छत्तीसगढ़ी गाना आज भी प्रदेश में धूम मचा रहा है। प्रदेश के मान सामान बढ़ा रहा है। सिंगर दुबे छत्तीसगढ़ी गाना के साथ ही सुपरहिट भजन भी दें चुके हैं, जो लोगों को बेहद पसंद आया है। संगीत के क्षेत्र में अलग पहचान बनाने वाले संगीतकार और अभिनेता नितिन को इस क्षेत्र में कई उत्कृष्ट ऑवार्ड मिला है। कार्यक्रम के दौरान नितिन दुबे ने कहा यह सामान मुझे मेरे माता-पिता और गुरुजनों के आशीर्वाद से प्राप्त हुआ है। विकास परिषद (नूतन स्कूल) संस्था और विभूति अलंकरण आयोजन समिति को बहुत-बहुत धन्यवाद, जिन्होंने मुझे इस सम्मान के काबिल समझा और सबसे बड़ा आशीर्वाद छत्तीसगढ़ के जनता जनार्दन की है जिन्होंने मुझे आज इस मुकाम पे पहुंचाया है।

प्रदेश में छाए रहे बादल, बारिश ने बढ़ाई ठंड, बलरामपुर रहा सबसे ठंड इलाका

रायपुर। छत्तीसगढ़ में मौसम का मिजाज बदला हुआ है। सोमवार को सुबह से ही बादल छाए हुए हैं। इसके साथ ही सुबह के समय आउटर इलाकों में कोहरा छाया रहा। बीते दिनों प्रदेश के कई इलाकों में बारिश हुई है। इससे ठिठुरन बढ़ गई है। सुबह और रात की तरह दिनभर ठंड का असर है। लोग गर्म कपड़ों के साथ दिखाई दे रहे हैं। उत्तरी नमी के चलते प्रदेश में बादल छाए हुए हैं और बारिश हो रही है। इसके वजह से ठंड में बढ़ोतरी हुई है। यही वजह है कि प्रदेश की अधिकतम तापमान और न्यूनतम तापमान में गिरावट हो रही है। माना एयरपोर्ट में अधिकतम तापमान सामान्य से 3 डिग्री कम रहा। वहीं बिलासपुर और दुर्ग में 2-2 डिग्री सामान्य अधिकतम तापमान से कम रहा। रविवार को प्रदेश में सबसे ठंड इलाका बलरामपुर रहा। यहां सबसे कम न्यूनतम तापमान 8.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है। इसके साथ ही प्रदेश में सर्वाधिक अधिकतम तापमान 29.3 डिग्री सेल्सियस दंतेवाड़ा में दर्ज किया गया है। राजधानी रायपुर में आज सोमवार को सुबह से ही बादल छाए हुए हैं। इसके साथ ही रायपुर के कई इलाकों में हल्की बारिश होने के आसार हैं। यहां की अधिकतम तापमान 26 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 15 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है। राजधानी रायपुर में सुबह के समय बारिश होने से ठिठुरन बढ़ गई है। सुबह और रात की तरह दोपहर में भी ठंड लगने लगी है। इससे लोग गर्म कपड़ों के साथ दिखाई दे रहे हैं।

प्राण प्रतिष्ठा के शुभ क्षण के साक्षी बने मुख्यमंत्री साय

राममय हुआ शिवरीनारायण, यहां श्रीराम ने खाए थे माता शबरी के जूठे बेर

रायपुर। अयोध्या में श्री रामलला के प्राण प्रतिष्ठा के गौरवशाली क्षण में माता शबरी की भूमि शिवरीनारायण भी राममय हो गया है। त्रेता युग में माता शबरी ने इसी भूमि में श्रीराम को जूठे बेर खिलाये थे। आज शिवरीनारायण की धरती वैसी ही पुलकित है। आज श्रीराम पुन: अयोध्या धाम में पधारे हैं। इस शुभ क्षण को देखने मुख्यमंत्री विष्णु देव साय शिवरीनारायण पहुंचे।

यहां श्री रामलला के प्राण प्रतिष्ठा का लाइव प्रसारण हुआ। जैसे ही भगवान श्रीराम साक्षात रूप में नजर आए, सीएम साय, प्रदेश प्रभारी ओम माथुर, महंत राजेश्री रामसुंदर दास सहित अन्य जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में पहुंचे नागरिक श्रद्धावनत होकर हाथ जोड़े खड़े हो गए। भगवान श्रीराम की मंजुल मूर्ति देखकर सभी गहरी श्रद्धा में डूब गए। शुभ शंखनाद और राम रतन धन पायो के स्वर लहरियों के साथ हजारों लोग श्री राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के विलक्षण पल के साक्षी बने।

रघुपति राघव राजाराम के गीत के बीच हाथ जोड़े सभी लोग भक्तिभाव में डूबे रहे। भजन की मोहक प्रस्तुति हो रही है। पूरा पंडाल राम भजन में लीन है। जय जय श्री राम का लगातार उद्घोष हो रहा है। पायो जी मैंने राम रतन धन पायो की इस धुन में छत्तीसगढ़ का तंबूरा भी शामिल है।

दरअसल, जांजगीर-चाम्पा जिले से भगवान राम का बहुत करीब से नाता है। यहां प्रभु श्रीराम ने वनवास का अधिक समय बिताया है, मान्यता है यहां प्रभु श्री राम ने शबरी के जूठे बेर खाए थे। यहां एक पेड़ ऐसा है, जिसके पत्तों की आकृति दोने के सामान है। माता शबरी ने इसी दोने में राम लक्ष्मण को बेर रख कर खिलाए थे। इस वट वृक्ष का वर्णन सभी युगों में मिलने के कारण इसे अक्षय वट वृक्ष के नाम से जाना जाता है।

जांजगीर-चांपा जिले की धार्मिक नगरी शिवरीनारायण को गुप्त प्रयाग कहा जाता है। यहां तीन नदी, महानदी, शिवनाथ और जोक नदी कर त्रिवेणी संगम है। शिवरीनारायण का नाम माता शबरी और नारायण के अटूट स्नेह के कारण पड़ा और भक्त का नाम नारायण के आगे रखा गया।

बड़े मंदिर यानी नर नारायण मंदिर के पुजारी प्रसन्न जीत तिवारी ने बताया कि शिवरीनारायण को छत्तीसगढ़ के जगन्नाथपुरी के नाम से जाना जाता है। मान्यता है कि इसी स्थान पर प्राचीन समय में भगवान जगन्नाथ स्वामी का मूल स्थान शिवरीनारायण रहा। आज भी साल में एक दिन माघी पूर्णिमा में भगवान जगन्नाथ शिवरीनारायण आते हैं, यहां मंदिर में रोहिणी कुण्ड है, जिसका जल कभी कम नहीं होता, भगवान नर नारायण के चरण कुंड के जल से हमेशा अभिषेक करता है।

शिवरीनारायण मठ मंदिर के पुजारी त्यागी जी महराज ने बताया कि छत्तीसगढ़ मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का ननिहाल और उनकी कर्मभूमि भी है। 14 वर्षों के कठिन वनवास काल में श्रीराम ने अधिकांश समय छत्तीसगढ़ में ही बिताया। माता कौशल्या की जन्मभूमि के कारण छत्तीसगढ़ में श्रीराम को भांजे के रूप में पूजा जाता है। उन्होंने शिवरीनारायण धाम के बारे में बताया कि यही वो पावनभूमि है, जहां भक्त और भगवान का मिलन हुआ था। भगवान राम ने शबरी की तपस्या से प्रसन्न होकर न केवल उन्हें दर्शन दिए बल्कि उनकी भक्ति और भाव को देखकर जूठे बेर भी खाए। आज भी शबरी और राम के मिलन का ये पवित्र स्थान आस्था का केंद्र बना हुआ है।

अयोध्या में प्रभु राम मंदिर निर्माण पूरा होने के बाद शिवरीनारायण में भी प्रभु के प्राण प्रतिष्ठा के इस दिन को खास बनाया गया है। सभी मंदिर को दूधिया रोशनी और झालर के अलावा दीपों से सजाने और दिनभर भजन कीर्तन और भंडारा प्रसाद वितरण करने की तैयारी की गई है। कुल मिलाकर धार्मिक नगरी शिवरीनारायण भी राममय हो गया है।

सीएम साय ने रायपुर के दूधाधारी मठ में किया राम-दरबार का दर्शन

अयोध्या में हो रही रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के अवसर पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने आज सुबह राजधानी रायपुर स्थित दूधाधारी मठ पहुंचकर राम-दरबार का दर्शन किया। उन्होंने गौ माता की भी पूजा-अर्चना कर उन्हें भोग लगाया।

इसके बाद सीएम साय रामलला महोत्सव का मुख्य कार्यक्रम जांजगीर-चांपा जिले के शिविरीनारायण में आयोजित की गई है। सीएम साय कार्यक्रम में शामिल हुए। वहीं वर्चुअल माध्यम से अयोध्या में हो रही प्राण-प्रतिष्ठा के दर्शन किए। शिविरीनारायण के लिए रवाना होने से पहले मुख्यमंत्री सुबह दूधाधारी मठ पहुंचे थे। उन्होंने मठ में भगवान के दर्शन कर पूजा-अर्चना की और समस्त प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि शांति और खुशहाली की कामना की।

मुख्यमंत्री साय ने अयोध्या में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के लिए सभी नागरिकों को बधाई और शुभकामनाएं दी है। उन्होंने मठ में स्थापित भगवान श्रीराम जानकी, श्री स्वामी बालाजी और संकट मोचन हनुमान सहित अन्य देवताओं की पूजा की। इस दौरान उन्होंने कहा कि अयोध्या में श्रीराम जी प्रतिष्ठित हो रही है। पूरा देश और अयोध्या राममय हो गया है। यह मेरा सौभाग्य है कि 500 साल पुराने राजधानी रायपुर स्थित दूधाधारी मठ में आने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

दूधाधारी मठ के महंत रामसुंदर दास ने कहा कि आज दूधाधारी मठ को अयोध्या का स्वरूप दिया गया है। अयोध्या में भगवान राम लगभग 500 साल बाद गर्भगृह में स्थापित हो रहे हैं। मंदिर परिसर में स्थापित स्वामी बालाजी एवं श्री राम जानकी को आज के विशेष अवसर पर स्वर्ण श्रृंगार से सुसज्जित किया गया है। उन्होंने बताया कि राम नवमी, कृष्ण जन्माष्टमी और विजयादशमी के विशेष अवसर पर ही साल में तीन बार दूधाधारी मठ में स्वामी बालाजी और श्रीराम जानकी को स्वर्ण श्रृंगार से सुसज्जित किया जाता है।

अयोध्या में 6 जगहों पर 2 महीने तक भंडारा करेगी छत्तीसगढ़ सरकार

■ रामलला दरबार में बंटेगा महाप्रसाद

रायपुर। 500 साल के संघर्ष के बाद आज सोमवार को अयोध्या में अपने मूल स्थान पर प्रभु रामलला की विधि विधान से प्राण प्रतिष्ठा हो रही है। इससे पूरा देश राममय हो गया है। 25 जनवरी से 25 मार्च तक यानी दो महीने तक रामलला के दरबार अयोध्या में महाभंडारे का आयोजन किया जाएगा। छत्तीसगढ़ सरकार की ओर से दरबार में माता शबरी का प्रसाद बंटेगा। प्रदेश की 6 संस्थाएं 60 दिनों तक छत्तीसगढ़ और दूसरे प्रदेशों से आने वाले रामभक्तों को स्वादिष्ट भोजन का वितरण करेंगी। अयोध्या में सरयू नदी और हनुमानगढ़ी के पास 6 संस्थाओं का भव्य पंडाल बनकर तैयार हो गया है। भंडारे के लिए भोजन बनाने वाले 30 रसोइयों और 100 कार्यकर्ताओं की टीम को बस से 24 जनवरी को दोपहर 12 बजे सीएम विष्णुदेव साय वीआईपी रोड स्थित रामजी मंदिर से रवाना करेंगे। ये बातें बीजेपी प्रदेश उपाध्यक्ष लक्ष्मी वर्मा ने भाजपा कार्यालय एकात्म परिसर रायपुर में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहीं। इस कार्यक्रम के संयोजक विधायक धरमलाल कौशिक, सहसंयोजक लक्ष्मी वर्मा, वीरेंदर श्रीवास्तव, डॉ। ललित मखीजा हैं। भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष वर्मा ने कहा कि 24 जनवरी के कार्यक्रम जो राममंदिर में आयोजित होगा, उसमें कैबिनेट के सभी सदस्यों सहित सामाजिक और धार्मिक लोगों को भी आमंत्रित किया जाएगा।

ये 6 समितियां देंगी सेवाएं

नीलांचल सेवा समिति बसना (संपत अग्रवाल, अमित अग्रवाल)। पुरुषोत्तम अग्रवाल फाउंडेशन रायपुर (बसंत अग्रवाल)। शिव महापुराण सेवा समिति तिल्दा नेवरा (महेश अग्रवाल, घनश्याम अग्रवाल, रामगोपाल अग्रवाल, एस एन शर्मा, देवेन्द्र अग्रवाल)। एग्रोक्रेट सोसायटी फॉर रूरल डेवलपमेंट रायपुर (धीरेन्द्र मिश्रा, चंद्रकांत चंद्रवंशी)। सनातन सेवा समिति रायपुर (निर्मल द्विवेदी)। काली माता अन्नदान भंडारा समिति और तक्षक इको फॉर्म फोरमदेव (दीपक भारद्वाज, गुड्डू त्रिपाठी, लाल सौर्यजीत सिंह, सुनील जग्गी)।

राममय हुआ छत्तीसगढ़; रायपुर में जगह-जगह जय श्रीराम, जय सियाराम की गूंज

अयोध्या में आज सोमवार को श्रीरामलला मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर भगवान राम के ननिहाल और मामा के घर छत्तीसगढ़ में रामोत्सव पर जश्न का माहौल है। सभी भगवान श्रीराम के आगमन पर उनका स्वागत कर रहे हैं। रायपुर समेत प्रदेश के सभी मंदिरों में राम नाम की गूंज सुनाई दे रही है। गली-मोहल्लों और चौक-चौराहों पर जय श्रीराम।।। जय सियाराम।।। जय सीताराम।।। के जयघोष लग रहे हैं। पूरा प्रदेश रामनाम के जयकारे से गूंजयमान हो रहा है। मंदिरों में सुबह से ही श्रद्धालुओं और भक्तों की भारी भीड़ उमड़ी हुई है। लोग लाइन में लगकर अपनी बारी का इंतजार कर रहे हैं। मंदिर पहुंचकर पूजा अर्चना कर रहे हैं।

राजधानी रायपुर के महादेव मंदिर हटकेश्वनाथ, श्रीराम मंदिर वीआईपी चौक, जैतूसाव मठ पुरानी बस्ती, दूधाधारी मठ, गुढ़ियारी श्रीराम मंदिर, जगन्नाथ मंदिर शंकर नगर, सर्वधर्म मंदिर रेलवे स्टेशन में लोग पहुंचकर प्रभु राम की पूजा अर्चना कर रहे हैं। आरती उतार रहे हैं। मंदिरों में घंटी, शंख, घंटा और घड़ियाल की आवाज से पूरा वातावतरण भक्तिमय हो गया है। हर तरफ श्रीराम के जयकारें लग रहे हैं। पूरा रायपुर राममय हो गया है। मंदिरों, गलियों, कस्बों, बाजार, चौक-चौराहों, धार्मिक स्थलों, सरकारी इमारतों, शैक्षणिक संस्थानों और सरकारी भवनों को आकर्षक तरीके से संजाया गया है। तोरण और झंडे से पूरा शहर दुल्हन की तरह सज गया है।

राहुल को मंदिर में जाने से रोकने पर भूपेश का हमला

रायपुर। असम में राहुल गांधी को मंदिर जाने से रोकने को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल का बयान सामने आया है। भूपेश बघेल ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म (एक्स) पर लिखा, आज असम के लिए निकल रहा हूं। हिमंता बिस्वा शर्मा एक डरपोक प्राणी है। इसका अनुभव मैंने असम विधानसभा चुनाव में पर्यवेक्षक के रूप में कार्य करते हुए ही कर लिया था।

आगे पूर्व सीएम ने लिखा, भारत जोड़ो न्याय यात्रा पर हमला और राहुल गांधी को मिल रहे अपार जनसमर्थन से घबराकर उन्हें रोकने की कोशिश उसकी हताशा और डर को दर्शाता है। आज मैं असम की राजधानी गुवाहाटी पहुंच रहा हूं। कल भारत जोड़ो न्याय यात्रा में शामिल होऊंगा। आगे भूपेश बघेल ने एक ट्वीट कर लिखा, मंदिर जाने से रोकना? समझ क्या रखा है? अब धार्मिक स्थलों पर भी इनका नियंत्रण चलेगा क्या? ये गुंडागर्दी ज़्यादा दिन की नहीं हैं, समझ लीजिए। जब कोई सुबाहु और मारीच किसी को पूजा, यज्ञ करने से रोकते हैं, तब-तब प्रभु श्री राम उसका वध करते हैं। अति का अंत निश्चित है।

'देश में तानाशाही राज है'

पूर्व मंत्री अमरजीत भगत ने शिव मंदिर में टीवी पर राम मंदिर प्राण-प्रतिष्ठा समारोह को देखा। साथ ही शिव मंदिर में पूजा कर आशीवार्द लिया। इस दौरान पूर्व मंत्री ने कहा, राम सबके हैं, किसी एक के नहीं। इस ऐतिहासिक दिन का सबको इंतजार था। वहीं बृजमोहन अग्रवाल के बयान सबको दर्शन कराने ले जाने पर पूर्व मंत्री ने पलटवार करते हुए कहा कि, वो थोड़ी न तय करेंगे किसे कब जाना है ? अपने हिसाब से हम जाएंगे। लोकसभा चुनाव में आयोजन से कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

डिप्टी सीएम शर्मा पहुंचे मृतक साधराम यादव के घर

■ चरवाहा हत्याकांड मामले में पांच आरोपी गिरफ्तार

कबीरधाम। कवर्धा शहर में शनिवार-रविवार की दरमियानी रात चरवाहा साधराम यादव (50) की हत्या कर दी। इस मामले में पुलिस ने पांच आरोपी को पकड़ा है, जिसमे एक नाबालिग है। सोमवार को कवर्धा विधायक व डिप्टी सीएम विजय शर्मा ने पीड़ित परिजनों से मुलाकात की। इस दौरान डिप्टी सीएम से परिजनों ने आरोपियों को फांसी की सजा देने की मांग की है। इसके अलावा घर के एक सदस्य को सरकारी नौकरी और आर्थिक मुआवजा देने की मांग की है। इस पर डिप्टी सीएम विजय शर्मा ने हर संभव मदद करने का आश्वासन दिया है। विजय शर्मा ने मृतक के पत्नी को पांच लाख रुपये की आर्थिक सहायता दी। मौके पर यादव समाज के प्रमुखों व ग्रामीण मौजूद रहे।

कवर्धा कोतवाली थाना क्षेत्र के लालपुर कला गांव में रविवार की सुबह एक अधेड़ व्यक्ति की शव मिली थी। मृतक का नाम साधराम यादव (50), जो कवर्धा के एक गोशाला में चरवाहा का काम करता था। घटना के 24 घंटे के भीतर पुलिस ने रविवार को हत्याकांड का खुलासा किया। पुलिस ने 5 आरोपी को गिरफ्तार किया है, जिसमें एक नाबालिग है।

शनिवार रात के समय घटना स्थल पर मृतक व इन आरोपियों के बीच विवाद हुआ था। विवाद इतना बढ़ा कि आरोपियों ने धारदार हथियार से गला रेतकर हत्या कर दी थी व मौके से फरार हो गए। कबीरधाम एसपी डॉ। अभिषेक पल्लव ने बताया कि आरोपियों का नाम सुफियान पिता इजराइल कुरैशी उम्र 21 निवासी एकता चौक, इदरीश पिता खलील खान उम्र 27, निवासी वार्ड क्रमांक 05, आदर्श नगर, अयाज पिता तफज्जुल खान उम्र 29, निवासी वार्ड क्रमांक 18, बीच पारा व महताब पिता अनवर खान उम्र 22निवासी नवाब मोहल्ला व एक नाबालिग शामिल है। चार ओरोपी को रविवार देर रात जेल दाखिल किया गया है। नाबालिग लड़के को बाल सुधार गृह भेज दिया है। ये सभी आरोपी कवर्धा शहर के रहने वाले हैं।

दंडकारण्य क्षेत्र हुआ राममय मंत्री केदार कश्यप हुए भावुक

■ कहा- प्राण प्रतिष्ठा का साक्षी बनना जीवन के लिए सौभाग्य का क्षण

रायपुर। अयोध्या में श्रीराम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर दंडकारण्य क्षेत्र भी राममय हो गया है। इस अवसर पर जगदलपुर में आयोजित संकीर्तन कार्यक्रम में दौरान वन मंत्री केदार कश्यप शामिल हुए। उन्होंने कहा कि ये हम सब के लिए सौभाग्य का क्षण है। हम ऐसे समय के साक्षी बन रहे हैं, जब भगवान राम के मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा हो रहा है।

मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि बस्तर में श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा को लेकर खुशी का माहौल है। इसके लिए हमारे पूर्वजों ने लंबे समय तक संघर्ष किया। गोलियां चली, लाठियां खाईं, शहादत दी और उसके बाद आज भगवान राम का मंदिर बन गया है। ये समय हर्ष का विषय है। भगवान राम के ननिहाल छत्तीसगढ़ में भी हर्षोल्लास है।

उन्होंने कहा कि पूरे बस्तर को दंडकारण्य भूमि के रूप में मानते हैं। यहां पर भगवान राम के पदचरण पड़े थे। इस कारण से बस्तर के पूरे जंगल में कांटा नहीं मिलता, क्योंकि भगवान राम के पद चरण पड़े थे। हम ये भी मानते हैं कि प्रभु राम की कल्पना में जो चित्र सामने आता है, वो राजा के रूप में नहीं, वनवासी की वेशभूषा में दिखाई देते हैं।

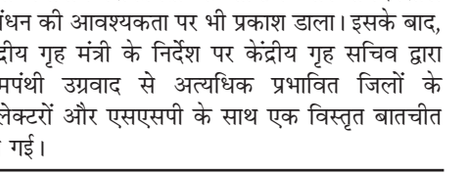

मंत्री कश्यप ने कहा कि श्रीराम जब अयोध्या में थे, तब राजा राम के रूप में जाना जाता था। जब प्रभु प्रभु ने दंडकारण्य की पावन भूमि पर कदम रखा तो उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम राम के रूप में पहचान मिली। आज राम मंदिर निर्माण की खुशी में बस्तर सहित पूरे छत्तीसगढ़ के लोग शामिल हो रहे हैं, ये बहुत हर्ष का विषय है।

वामपंथी उग्रवाद की समस्या अब छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों तक ही सीमित है: शाह

■ अगले तीन वर्षों के भीतर इन क्षेत्रों को माओवादी खतरे से मुक्त करना होगा

रायपुर। केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने रविवार को रायपुर में छत्तीसगढ़ में वामपंथी उग्रवाद की स्थिति की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय, उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा , केंद्रीय गृह सचिव, राज्य के मुख्य सचिव, पुलिस महानिदेशक, सूचना ब्यूरो (आईबी) के निदेशक और सीआरपीएफ के महानिदेशक सहित कई अन्य अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

बैठक में केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि तीन आंतरिक सुरक्षा स्थितियों- जम्मू-कश्मीर, पूर्वोत्तर और वामपंथी उग्रवाद-में महत्वपूर्ण सुधार देखा गया है और इनमें हिंसा में लगभग 75% की कमी आई है। इनके प्रभाव वाले भौगोलिक क्षेत्र में भी लगभग 80 प्रतिशत तक की कमी आई है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि सशस्त्र बल

विशेष अधिकार अधिनियम अब उत्तरपूर्व के लगभग 80% क्षेत्रों से हटा लिया गया है। वामपंथी उग्रवाद के खिलाफ लड़ाई में हुई प्रगति की सराहना करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित भौगोलिक क्षेत्रों और हिंसा दोनों में उल्लेखनीय कमी आई है।

केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि सुरक्षा बलों और सभी केंद्रीय और राज्य एजेंसियों के संयुक्त प्रयासों के कारण वामपंथी उग्रवाद की समस्या अनिवार्य रूप से अब छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों तक ही सीमित है। इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि इन क्षेत्रों को अगले तीन वर्षों के भीतर माओवादी खतरे से मुक्त करने की जरूरत है। गृह मंत्री ने खासकर वामपंथी उग्रवाद को बनाए रखने में सहायक पूरे तंत्र को टारगेट करने को लेकर सभी संबंधित हितधारकों द्वारा एक विस्तृत रोडमैप तैयार करने की आवश्यकता पर जोर दिया। इसके अलावा, केंद्रीय गृह मंत्री ने राज्य पुलिस को शेष सुरक्षा कमियों को दूर करने, व्यापक जांच सुनिश्चित करने, अभियोजन की बारीकी से निगरानी करने, फंडिंग के रास्तों को बंद करने और खुफिया नेतृत्व वाले ऑपरेशन जारी रखने के निर्देश दिए। उन्होंने मल्टी-एजेंसी सेंटर के माध्यम से साझा किए गए सभी इनपुट की समीक्षा करने और सत्यापित इनपुट को संचालित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

केंद्रीय गृह मंत्री ने वामपंथी उग्रवाद प्रभावित जिलों में केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं की सम्पूर्ण कवरेज की आवश्यकता पर बल दिया और इसके लिए सुरक्षा बलों के कैंपों का उपयोग करने को कहा ताकि नजदीक के गांवों में इन योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा सके। उन्होंने उल्लेख किया कि गृह मंत्रालय को छत्तीसगढ़ में वामपंथी उग्रवाद से अत्यधिक प्रभावित जिलों में धन के आवंटन और इसके उपयोग दोनों मामलों में लचीला होना चाहिए। गृह मंत्री ने वास्तविक अधिकारों के बारे में सभी स्थानीय शिकायतों के सक्रिय और संवेदनशील प्रबंधन की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला। इसके बाद, केंद्रीय गृह मंत्री के निर्देश पर केंद्रीय गृह सचिव द्वारा वामपंथी उग्रवाद से अत्यधिक प्रभावित जिलों के कलेक्टरों और एसएसपी के साथ एक विस्तृत बातचीत की गई।

मंदिरों की स्वच्छता की बड़ी पहल

सुरेश पंत

अयोध्या में श्रीराम प्रतिष्ठा के अवसर के बीच मंदिरों में साफ-सफाई रखने के बारे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आह्वान स्वागतयोग्य है। आशा है कि यह केवल नारा बनकर न रह जाए। ईश्वर करे यह भावना बनी रहे। मंदिर परिसरों में साफ-सफाई आंदोलन की विशेष आवश्यकता है। प्राय: हमारे मंदिरों में स्वच्छता का स्तर संतोषजनक नहीं होता। मंदिर में स्थापित देवी-देवता की पूजा-अर्चना में प्रयुक्त पत्तियां, फूल, हार, फल आदि पूजा के अवशिष्ट द्रव्यों को %निर्माल्य% कहा जाता है। निर्माल्य में %मल% शब्द है, जिसका अर्थ गंदगी है। परिभाषा है- देवोच्छिष्टद्रव्यम् निर्माल्यम् (देवता का जूठन निर्माल्य है)। गरुड़ पुराण में इसे और स्पष्ट समझाया गया है। देव पूजा में विसर्जन से पहले समर्पित वस्तु नैवेद्य है और देवता के विसर्जन के बाद उसे निर्माल्य कहा जाता है। मंदिर या देवस्थान की सफाई को ध्यान में रखते हुए शास्त्रों में निर्माल्य को उत्तारण के बाद तुरंत विसर्जित करने का विधान है। कहा गया है कि मंदिर से जो अवशिष्ट द्रव्य (निर्माल्य) निकलता है, उसे मंदिर के बाहर ईशान दिशा में एक मंडलाकार ढेर लगाकर तुरंत उसका निपटान कर देना चाहिए। घरों में नित्य पूजन के निर्माल्य को किसी पेड़ के नीचे या जल में विसर्जित करने का विधान था क्योंकि उसकी मात्रा मंदिरों की अपेक्षा बहुत कम होती है। फिर भी नित्य ऐसा करने से तालाबों और नदियों-नहरों में प्रदूषण बढ़ता है। इसलिए निस्तारण का यह समाधान अच्छा नहीं माना जा सकता। स्मृतियों में कहा गया है कि नित्य सूर्योदय से पहले मंदिर की सफाई कर निर्माल्य का विसर्जन कर देना चाहिए। ऐसा करने में ज्यों-ज्यों देर होती है, त्यों-त्यों अधिक पाप होता है और कठोर प्रायश्चित्त करना पड़ता है। नारद पंचरात्र के अनुसार एक पहर से अधिक देर तक अगर यह निर्माल्य अनिस्तारित पड़ा रहता है, तो इस महापाप का प्रायश्चित्त नहीं हो सकता। नरसिंह पुराण भी कहता है कि न केवल निर्माल्य हटाना, बल्कि देवालय को धोने और सफाई करने से गोदान के समान पुण्य मिलता है। पाप-पुण्य और प्रायश्चित्त की बातें जाने भी दें, तो इतना तो मानना ही पड़ेगा कि गंदगी पर्यावरण और मानव जीवन के लिए हानिकारक है। मंदिर परिसर में भक्ति भावना, पवित्रता और मानसिक शांति की कल्पना की जाती है। उसमें बिखरा हुआ कूड़ा, हवा में विचरण करती दुर्गंध मन में विक्षोभ उत्पन्न करती है। कहा भी जाता है कि स्वच्छता भक्ति से बढ़कर है और स्वच्छता में देवत्व का निवास होता है। स्वच्छता से हमारे विचारों और आचरण में भी स्वच्छता और पवित्रता आती है। विचार स्वच्छ हैं, तो मन आनंदित रहेगा और तब धर्म और उसका अर्थ समझ में आयेगा, अन्यथा दोनों को समझने में हम असफल रहेंगे। वस्तुत: स्वच्छता का संबंध हमारी उन आदतों से अधिक है, जिनके कारण हम आसपास को साफ-सुथरा रखने के आदी नहीं हैं। इसीलिए हमें मंदिरों में फैली गंदगी उद्वेलित नहीं करती। हम यह मान लेते हैं कि सफाई करना किसी और का काम है, इसे हम क्यों करें। गुरुद्वारों में जाने वाला प्रत्येक व्यक्ति, चाहे उसका सामाजिक स्तर कितना ही बड़ा क्यों न हो, साफ-सफाई में मन से योगदान देता है। यही नहीं, आगंतुकों के जूते-चप्पलों को झाड़ने-पोंछने से भी उन्हें कोई परहेज नहीं होता। कहीं भी सामाजिक-आर्थिक स्तर आड़े नहीं आता। इसे भी एक प्रकार की %कार सेवा% जैसा पवित्र कार्य माना जाता है। मंदिर परिसरों से नित्य निकलने वाला कूड़ा मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है- पूजा स्थल का अवशिष्ट अर्थात निर्माल्य और मंदिर परिसर का विविध प्रकार का सूखा या गीला कूड़ा, जिसकी व्यवस्था नगर निगम या ऐसी अन्य संस्थाएं करती हैं। निर्माल्य के साथ चूंकि हमारी श्रद्धा और भक्ति भावना जुड़ी होती है, इसलिए उसका निपटान अपवित्र कूड़े के साथ नहीं किया जाता। अनेक संस्थाएं इसके लाभकारी निपटान के लिए आगे आयी हैं और निर्माल्य को एकत्रित कर इससे सुगंधित द्रव्य, अगरबत्ती, जैविक खाद, साबुन, बहु-उपयोगी बायो-एंजाइम आदि उपयोगी सामग्री का निर्माण कर रही हैं।

स्कूली शिक्षा की चुनौतियां गंभीर

ललित गर्ग

चिंता की बात यह भी है कि नई शिक्षा नीति में खास तौर से स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में व्यापक सुधार के प्रावधान की बातें बहुत हो रही है, लुभावनी योजनाएं बन रही हैं, लेकिन उनके परिणाम जमीन पर उतरते हुए नजर नहीं आ रहे हैं। नया भारत एवं विकसित भारत को निर्मित करने का मुख्य आधार शिक्षा है, लेकिन भारत की ग्रामीण शिक्षा को लेकर आयी एनुअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट (ग्रामीण) 2023 चिन्ताजनक एवं चुनौतीपूर्ण है। इस सर्वे में ग्रामीण भारत में छात्रों की स्कूली शिक्षा और सीखने की स्थिति की तस्वीर बयां की गई है, ग्रामीण शिक्षा की इन निराशाजनक स्थितियों पर गौर करना जरूरी है। यह सर्वे 26 राज्यों के 28 जिलों में किया गया और 34,745 युवाओं तक इस सर्वे की पहुंच रही। ग्रामीण छात्रों ने जो तथ्य एवं सच्चाई व्यक्त की है, उसके अनुसार 14 से 18 आयु वर्ग के बच्चे अपनी क्षेत्रीय भाषा में दूसरी कक्षा के स्तर तक का पाठ नहीं पढ़ पाते। इस उम्र के तीसरी-चौथी क्लास के गणित के सामान्य से प्रश्नों को हल न कर सकें तो यह कोई अच्छी स्थिति नहीं कही जा सकती। ग्रामीण युवाओं की पसंद विज्ञान एवं तकनीकी विषयों की बजाय आर्ट्स विषय ही होना, शिक्षा के प्रति उपेक्षा एवं उदासीनता को ही दर्शा रहा है। समस्या गणित या भाषा नहीं है, ग्रामीण क्षेत्रों की पढ़ाई में यह पिछड़ापन अपने देश के लिए कोई नई बात नहीं। यह चुनौती बड़ी इसलिए है कि नवीन शिक्षा नीति घोषित होने के बावजूद स्कूली पढ़ाई की नियमित प्रक्रिया में इसका इलाज नहीं तलाशा गया है। जाहिर है, विशेष प्रयास करने पड़ेंगे, ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा को प्राथमिकता देनी होगी अन्यथा दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इकॉनमी बनने की राह पर बढ़ रहे देश के लिये यह चुनौती एक अंधेरा ही है।

चिंता की बात यह भी है कि नई शिक्षा नीति में खास तौर से स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में व्यापक सुधार के प्रावधान की बातें बहुत हो रही है, लुभावनी योजनाएं बन रही हैं, लेकिन उनके परिणाम जमीन पर उतरते हुए नजर नहीं आ रहे हैं। यह हमारी नीतियों की पौल खोल रहा है या नीति-निर्माता की सोच में धुंधलापन है? जिंदगी का गुणा-भाग सिखाने वाली शिक्षा में जब बच्चों को गणित की सामान्य जोड़-बाकी भी नहीं आ पा रही हो तो इसे क्या कहेंगे? यही ना कि स्कूली शिक्षा के प्रसार की बातें भले ही जोर-शोर से की जा रहीं हों लेकिन इनमें सुविधाएं अपर्याप्त हैं या नई शिक्षा नीति को बनाने में कोई कमी है। यह भी हो सकता है कि साधनों के अभाव एवं दक्ष-प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी के कारण हम नई शिक्षा नीति को प्रभावी ढंग से लागू नहीं कर पा रहे हैं। बेहतर शिक्षा देने का हमारा लक्ष्य कहीं-ना-कहीं भटका हुआ है।

इस सर्वे रिपोर्ट में गांवों की सरकारी व निजी शिक्षण संस्थाएं दोनों के बच्चों को शामिल किया गया है। यही नहीं इस सर्वे में जिन विद्यार्थियों को शामिल किया गया, उनमें 90 फीसदी से ज्यादा ने सोशल मीडिया का इस्तेमाल किया है। स्मार्ट फोन का इस्तेमाल मनोरंजन के लिए ज्यादा और पढ़ाई के लिए कम होने लगा है। साफ है शिक्षा के प्रसार के लिए मोबाइल व कम्प्यूटर जैसे उपकरणों का इस्तेमाल सकारात्मक रूप से नहीं हो पा रहा है। अधिकांश बालक-बालिकाएं कम्प्यूटर या मोबाइल के माध्यम से पढ़ाई-लिखाई में फिसड्डी नजर आते हैं। हालात बदलने के लिए न केवल प्रशिक्षित शिक्षकों की स्कूलों में भर्ती जरूरी है, बल्कि दूर-दराज के इलाकों में भी शिक्षा की पहुंच को आसान किया जाना भी अपेक्षित है। देश-दुनिया ने कोरोना महामारी की जबर्दस्त चुनौती झेली है। खासकर ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों की पढ़ाई तो कोरोना काल में लगभग ठप ही हो गई थी। ऐसे दौर में जब पहले ही बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए कठिन प्रतिस्पर्धा एवं चुनौतियों सामना करना पड़ रहा है, उनकी नींव को कमजोर रखना चिंताजनक है। जिम्मेदारी सरकारों की ज्यादा है, जिन्हें इस दिशा में अभी काफी काम करना है। शिक्षण संस्थाओं के प्रसार की दिशा में भले ही हम प्रगति कर रहे हों, लेकिन यह साफ है कि शिक्षा डिजिटल तकनीक माध्यम से देने में हम असफल रहे हैं। सर्वे में एक और खास बात निकलकर सामने आई है कि वोकेशनल ट्रेनिंग में अभी ग्रामीण युवा पीछे हैं। सर्वे में शामिल युवाओं में केवल 5.6 प्रतिशत ही वोकेशनल ट्रेनिंग ले रहे हैं। इसी रिपोर्ट से यह भी पता चलता है कि करीब एक तिहाई बच्चे 12वीं से आगे नहीं पढ़ते। लड़कों के मामले में ड्रॉप आउट की सबसे बड़ी वजह रुचि की कमी पाई गई तो लड़कियों के मामले में पारिवारिक मजबूरी।

आधुनिक शिक्षा के सामने आज अनेक चुनौतियां हैं। छात्र जहां अनेक कारणों से बीच में ही पढाई छोड़ देने को मजबूर है, वही कुछ छात्र शिक्षा की चुनौतियों को झेल नहीं पाने के कारण आत्महत्या तक कर रहे हैं। जबकि हमारी शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों तथा क्षमताओं का निरंतर सामंजस्यपूर्ण विकास करके हमारे स्वभाव को परिवर्तित करने का सशक्त माध्यम है। हमने प्राचीन शिक्षा प्रणाली की इन विशेषताओं को भूला दिया है। आजादी के बाद से चली आ रही शिक्षा प्रणाली में शिक्षालय मिशन न होकर व्यवसाय बन गया था।

इस बड़ी विसंगति को दूर करने की दृष्टि से वर्ततान शिक्षा नीति में व्यापक चिन्तन-मंथन किया गया है, लेकिन उसका असर सामने न आना हमें शिक्षा पर नये सिरे से सोचने को मजबूर कर रहा है। भले ही यह आशा की जा रही है कि नयी शिक्षा नीति में शिक्षा की इन कमियों एवं अपूर्णताओं के दूर होने संभावनाएं हैं। लेकिन इसके लिये आधुनिक शिक्षा एवं शिक्षकों को समग्र दृष्टि से परिपक्व बनाना होगा, तभी शिक्षा की कमियां दूर हो सकेगी और नयी शिक्षा नीति के प्रभावी परिणाम आ सकेंगे। अन्य कलाओं की भांति शिक्षण भी एक महत्वपूर्ण कला है, शिक्षक उस कलाकार के समान होता है, जो अनगढ़ पत्थर को तराशकर पूज्य प्रतिमा एवं समग्र व्यक्तित्व का निर्माण करता है। यही शिक्षक छात्रों में जटिल शिक्षा की चुनौतियों को स्वीकार करने के लिये तैयार कर सकते हैं।

वर्तमान में शिक्षण-कौशल एवं शिक्षण विधियों पर बहुत अनुसंधान हो रहा है। एक अध्यापक स्रष्टा की भांति समाज की भावी पीढ़ी का निर्माण करके समाज द्वारा उत्पन्न शून्य को भरने का प्रयत्न कर सकता है, यदि उसके दायित्व में कमी रहती है तो उसे क्षम्य नहीं माना जा सकता। सच्ची शिक्षा-संस्कृति इंजीनियरों और टेकनीशियनों पर नहीं, अपितु शिक्षकों पर आधारित होती है। अब शिक्षक एवं शिक्षा-नीति एक क्रांतिकारी बदलाव की ओर अग्रसर हो। शिक्षक एवं शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य अब प्राप्त हो। अनेकानेक विशेषताओं के बावजूद अब तक शिक्षक का पद धुंधला रहा था। जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा था-एक स्कूल खुलेगी तो सौ जेलें बंद होंगी। पर उल्टा होता रहा है। स्कूलों की संख्या बढ़ने के साथ जेलों के स्थान छोटे पड़ते गये हैं। जेलों की संख्या भी उसी अनुपात में बढ़ रही है। स्पष्ट है- हिंसा और अपराधों की वृद्धि में मैकाले की शिक्षा प्रणाली एवं शिक्षक भी एक सीमा तक जिम्मेदार है। शिक्षा के प्रति छात्रों में जुनून एवं जोश पैदा न होना शिक्षा नीति की बड़ी खामी है।

शिक्षा समग्रता से छात्रों का जीवन-निर्माण नहीं कर पारही है, यही कारण है कि अशिक्षित और मूर्ख की अपेक्षा शिक्षित और बुद्धिमान अधिक अपराध करते रहे हैं। पारिवारिक और सामाजिक जीवन में जो तनाव, टकराव और बिखराव की घटनाएं घटित होती रही हैं, उसके मूल में संकीर्णता और ईर्ष्या की मनोवृत्ति भी एक बड़ा कारण है। व्यक्तित्व का टकराव भी इसी कारण बढ़ा है। क्या कारण है कि नयी पीढ़ी के निर्माण में ऐसी त्रुटियां के बावजूद सरकारें कुंभकरणी निद्रा में रही, शिक्षक क्यों नहीं एक सर्वांगीण गुणों वाली पीढ़ी का निर्माण कर पाएं? इसका कारण दूषित राजनीतिक सोच रही है। मानव ने ज्ञान-विज्ञान में आश्चर्यजनक प्रगति की है। परन्तु अपने और औरों के जीवन के प्रति सम्मान में कमी आई है। विचार-क्रान्तियां बहुत हुईं, किन्तु आचार-स्तर पर क्रान्तिकारी परिवर्तन कम हुए। शान्ति, अहिंसा और मानवाधिकारों की बातें संसार में बहुत हो रही हैं, किन्तु सम्यक-आचरण का अभाव अखरता है। अब नयी शिक्षा नीति के माध्यम से सम्यक् चरित्र, सम्यक् सोच एवं सम्यक् आचरण का निर्माण हो, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति आकर्षण पैदा हो, विश्व गुरु एवं दुनिया की आर्थिक महाशक्ति बनने वाले भारत की विकास यात्रा पर एक धुंधलका बना रहेगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा....

भावनोपनिषद् (भाग-4)

गतांक से आगे...

समस्त विषयों का मन की स्थिरता द्वारा अनुसन्धान करना ही पुष्प (फूल) है तथा उसे स्वीकार करना ही धूप है। पवनयुक्त योग के समय प्राण, अपान की एकता से सुषुम्रा में सत्-चित्, उल्कारूप जो (प्रकाशरूप) आकाश देह है, वही %दीप% है। अपने से अलग समस्त विषयों में मन की गति का गमनागमन स्थिर हो जाना ही नैवेद्य है।

तीनों अवस्थाओं (जाग्रत, स्वप्र, सुषुप्ति) का एकीकरण ही ताम्बूल (पान) है। मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र पर्यन्त एवं ब्रह्मरन्ध्र से मूलाधार तक बार-बार आना-जाना ही प्रदक्षिणा है। चतुर्थ अवस्था अर्थात् तुरीयावस्था में रहना ही नमस्कार है। देह की जड़ता में डूबना अर्थात् आत्मा को चैतन्य युक्त मानकर एवं शरीर को जड़ मानकर स्थिर रहना ही बलि है। अपना आत्मतत्त्व ही स्वयं सत्य रूप है, ऐसा निश्चय करके कर्तव्य, अकर्त्तव्य, उदासीनता, नित्यात्मक आत्मा में विलास करना अर्थात् निरन्तर आत्मचिन्तन करना ही यज्ञ (हवन) है तथा स्वयमेव उस परब्रह्म-विराट् पुरुष (परमात्मा) की पादुकाओं में अनासक्त भाव से डूबे रहना ही परिपूर्ण ध्यान है। (सारांश यह हुआ कि जिस प्रकार पूजन के लिए धूप, दीप, नैवेद्य, प्रदक्षिणा एवं नमन-वन्दन आदि अपेक्षित होता है, वैसे ही परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति हेतु उपर्युक्त कहे गये पदार्थों का साधन कर लेना ही तद्-तद् धूप-दीप एवं नैवेद्य आदि हैं। इन्हीं मांगलिक पदार्थों को भावनापूर्वक समर्पित करने से ही उस ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है)।

इस तरह से जो भी मनुष्य (योगी-साधक) तीन मुहूर्त तक भावनापरायण रहता है, वह जीवन्मुक्त हो जाता है। वह एक मात्र ब्रह्म का ही रूप हो जाता है तथा उसके द्वारा चाहे हुए कार्य बिना यत्न के ही पूर्ण हो जाते हैं और वही (साधक) शिवयोगी कहलाता है।

भारत की स्वतंत्रता संघर्ष के महान कर्मयोद्धा थे सुभाषचन्द्र बोस

ललित गर्ग

सुभाष चन्द्र बोस भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रणी तथा सबसे बड़े नेता थे। आपका जन्म 23 जनवरी 1897 को ओड़िशा के कटक शहर में हिन्दू कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम जानकीनाथ बोस और माँ का नाम प्रभावती था। जानकीनाथ बोस कटक शहर के मशहूर वकील थे।

लम्बे इंतजार के बाद अच्छी बात हुई है कि देश के क्रांतिकारी आंदोलन के महानायक, कर्मयोद्धा नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती को केंद्र सरकार ने 'राष्ट्रीय पराक्रम दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा करके देश के असंख्य लोगों की भावनाओं का सम्मान किया है। वास्तव में हमारी आजादी हमारे ऐसे ही वीरों के पराक्रम, शौर्य, समर्पण और साहस से मिली थी। यह सही है कि स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी का योगदान महत्वपूर्ण था, परंतु नेताजी के योगदान को कमतर आंकना या उनके योगदान का विस्मृत करना, किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं कहा जा सकता। भारत के स्वाधीनता संग्राम में आजाद हिंद फौज एवं नेताजी का सर्वाधिक योगदान रहा है, उनके योगदान की अमर कहानी अभी लिखी जानी शेष है और इसकी शुभ शुरुआत हो गयी है।

आजाद हिन्द सरकार के माध्यम से सुभाषचन्द्र बोस ने एक ऐसा भारत बनाने का वादा किया था, जिसमें सभी के पास समान अधिकार हों, सभी के पास समान अवसर हों। जो अपनी प्राचीन परम्पराओं से प्रेरणा लेगा और गौरवपूर्ण बनाने वाले सुखी और समृद्ध सशक्त भारत का निर्माण करेगा। यह करोड़ों भारतीयों का सपना था, किंतु सुभाष बाबू से भय खाने वाले अंग्रेजों और बाद में उसी लीक पर चलकर सत्ता और परिवारवाद को मजबूत करने वाले राजनीतिक दलों एवं सत्ताधारियों ने उस महानायक के योगदान एवं सपनों को कुचलने का षड़यंत्रपूर्वक प्रयत्न किया। जब वर्ष 2018 को आजाद हिन्द सरकार के 75वीं वर्षगांठ पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले से तिरंगा फहराया तो देश को मानो उसका बिसराया प्यार, स्वतंत्रता संग्राम की अनूठी स्मृतियों की जीवंतता से देश को वास्तविक रूप में आजादी का स्वाद चगने का अवसर मिल गया है।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने जिस अमृत को अपने संघर्ष से बटोरो एवं सुरक्षित भारत की भावी पीढ़ियों के लिए रखा था, वह तो राजनीतिक स्वार्थों की भेंट चढ़ गया। उस अमृत पर तो कोरी राजनीतिक स्वार्थ की रोटियां सेकी गयी, अपने-अपने स्वार्थ सिद्ध किये गये, देश को भूला दिया गया, नेताजी के योगदान को भूला दिया गया। यही कारण है कि 75 वर्षों के कालखण्ड में राष्ट्र मजबूत होने की बजाय दिन-ब-दिन कमजोर होता गया। राष्ट्र कभी भी केवल व्यवस्था पक्ष से ही नहीं बनता, उसका सिद्धांत, चरित्र पक्ष एवं राष्ट्रीय भावना भी सशक्त होनी चाहिए। किसी भी राष्ट्र की ऊंचाई वहां की इमारतों की ऊंचाई से नहीं मापी जाती बल्कि वहां के नागरिकों के चरित्र से मापी जाती है। उनके काम करने के तरीके से मापी जाती है, उनके बलिदानी स्वतंत्रता संग्रामियों की जीवंतता से आंकी जाती है।

ईरान-पाकिस्तान में संघर्ष के बीच पिस रहे हैं बलूच

बिक्रम उपाध्याय

पाकिस्तान और ईरान के बीच टकराव की संक्षिप्त कहानी यह है कि घोषित रूप से ईरान ने पाकिस्तान स्थित बलूची आतंकवादी ग्रुप जैश अल अदल के दो ठिकानों को नष्ट करने के लिए हमले किए, जिसके जवाब में पाकिस्तान ने ईरान के अंदर अलगाववादी आतंकवादियों पर हमले कर दिए। एक दूसरे पर हमले के साथ तेहरान और इस्लामाबाद ने अपने-अपने राजदूत वापस बुला लिए। दोनों देशों की आपसी सीमा 900 किमी लंबी है और दोनों तरफ अब भी तनाव है। लेकिन दोनों के बीच कोई पहली बार झड़प नहीं हुई है।

एक साल के अंदर ही दोनों तरफ से कई आतंकवादी हमले हुए हैं। दिसंबर 2023 में ही जैश अल-अदल ने दक्षिणपूर्वी सीमा प्रांत स्थित ईरानी शहर रस्क में एक पुलिस स्टेशन पर हमला कर 11 सुरक्षा कर्मियों को मार डाला था। जून 2023 में पाकिस्तानी सेना की मीडिया शाखा आईएसपीआर ने यह आरोप लगाया था कि बलूचों ने धावा बोलकर दो पाकिस्तानी सैनिकों की हत्या कर दी। अप्रैल 2023 में भी आईएसपीआर ने यही कहा था कि ईरान के हमलावरों ने केच जिले के जलगाई सेक्टर में गश्ती कर रहे चार सैनिकों की हत्या कर दी। सितंबर 2021 में भी पाकिस्तान ने दावा किया था कि ईरान की ओर से सीमा पार से की गई गोलीबारी में एक सैनिक की मौत हो गई।

ईरान और पाकिस्तान के बीच तनाव और सहयोग दोनों का इतिहास रहा है। दोनों ओर से दहशतगर्दी के लिए बलूच विद्रोहियों को ही दोषी बताया जा रहा है। ईरान विरोधी बलूच आतंकवादी समूह जैश अल-अदल पर पकिस्तान में पनाह लेने का आरोप लग रहा है तो सरमाचर बलूच ईरान की भूमि से पाकिस्तान के खिलाफ हमले के लिए

जिम्मेदार ठहराए जा रहे हैं। हमले दोनों तरफ से हो रहे हैं, इसलिए दोनों देश अब एक दूसरे पर हमलावर होने की भूमिका में है। कभी ईरान और पाकिस्तान मिलकर भारत और अमेरिका के खिलाफ कूट रचनाएं रचते रहे हैं। ईरान ने भारत के खिलाफ 1965 और 1971 के युद्ध में पाकिस्तान की खुलकर सहायता की थी।

अयातुल्ला खुमैनी ने ईरान में अति-रूढ़िवादी शिया शासन को स्थापित किया तो उसी समय पाकिस्तान सैन्य तानाशाह जनरल जिया-उल-हक ने सुन्नी-बहुसंख्यक नजरिए के साथ पाकिस्तान का इस्लामीकरण किया। 1979 के बाद पाकिस्तान और ईरान के बीच अविश्वास की एक दीवार खड़ी हुई, जिसका मुख्य कारण अमेरिका रहा। इस्लामाबाद अमेरिका का सहयोगी बन गया और तेहरान अमेरिका का विरोधी। 9/11 के बाद यह खाई और चौड़ी हो गई जब पाकिस्तान ने अपने यहाँ अमेरिकी फौज को मिलिट्री बेस प्रदान कर आतंकवाद के खिलाफ बड़े ऑपरेशन चलवा दिए।

इसके अलावा अरब देशों के साथ पाकिस्तान के बढ़ते रणनीतिक संबंधों ने भी ईरान को पाकिस्तान से दूरी बढ़ाने में मदद की। फिर अफगानिस्तान से सोवियत सेना की वापसी के बाद तो पाकिस्तान और ईरान एक दूसरे के सामने खड़े हो गए। 1998 में मजार-ए-शरीफ में कट्टरपंथी सुन्नी मिलिशिया द्वारा शिया हजारा और आठ ईरानी राजनयिकों की हत्या के बाद दोनों देश मे एक बार युद्ध की स्थिति बन गई थी। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी की जब-जब सरकार रही, ईरान के साथ दोस्ती आगे बढ़ाने का प्रयास हुआ, लेकिन नवाज शरीफ की पार्टी के दौर में अरब देशों के साथ संबंध सुधारने में ईरान को नजरअंदाज किया गया।

लगभग 900 किलोमीटर लंबी ईरान-पाकिस्तान सीमा, जिसे गोल्डस्मिथ लाइन भी कहा जाता है, पर दोनों तरफ मुख्य रूप से बलूच रहते हैं। उनकी संख्या लगभग 90 लाख है। एक तरफ पाकिस्तानी प्रांत बलूचिस्तान है तो दूसरी तरफ ईरानी प्रांत सिस्तान। बलूच आज भी कबीलाई जिंदगी बसर कर रहे हैं। पाकिस्तान में पंजाबी मुसलमानों के मुकाबले वे जातीय अल्पसंख्यक समूह हैं। ईरान में जो बलूच हैं वे वहाँ भी अल्पसंख्यक हैं और उनके सुन्नी होने के कारण ईरान के शासकों द्वारा उन्हें खूब सताया जाता है। ईरान में बलूच आबादी का 80 प्रतिशत हिस्सा गरीबी रेखा के नीचे है। बलूच क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है, लेकिन बलूच गरीब है। पाकिस्तान और चीन ने इस क्षेत्र में बेल्ट एंड रोड जैसी बड़ी परियोजना शुरू की है, पर इससे बलूचों को कोई फायदा नहीं हुआ है। लगातार हाशिए पर रखे जाने के कारण इस क्षेत्र में विद्रोह की आग सुलग रही है और ग्रेटर बलूचिस्तान राष्ट्र की मांग की जाने लगी है।

सैन्य और नागरिक ठिकानों पर विद्रोही गतिविधियाँ चलती रहती हैं और इसी क्रम में बलूच सीमा के आर-पार जाते रहते हैं। ईरान सक्रिय सुन्नी इस्लामवादी जैश अल-अदल को आतंकवादी संगठन मान कर उनके खिलाफ हमले कर रहा है तो पाकिस्तान बलूच लिबरेशन आर्मी और बलूच लिबरेशन फ्रंट को निशाना बना रहा है। ईरान और पाकिस्तान के बीच पहले भी बलूच विद्रोह से निपटने के लिए सहयोग की वार्ता हो चुकी है। पर दोनों देश एक-दूसरे पर आतंकवादियों को पनाह देने और समर्थन करने का आरोप भी लगा रहे हैं।

हालांकि न तो पाकिस्तान और न ही ईरान इस संघर्ष को और बढ़ाना चाहेंगे, क्योंकि दिवालिया होने की कगार पर खड़ा पाकिस्तान किसी युद्ध का खर्च सम्हालने की स्थिति में नहीं है। ईरान भी एक साथ कई फ्रंट पर उलझा हुआ है। लाल सागर में वह हूती विद्रोहियों का समर्थन कर रहा है तो गाजा में फिलिस्तीनियों का। कुछ कूटनीतिज्ञ ईरानी और पाकिस्तानी हमलों का उद्देश्य अपने दुश्मनों को उनके संबंधित क्षेत्रों में परेशानी पैदा करने से रोकने के लिए चेतावनी देना भी मानते हैं। पाकिस्तान और ईरान के बीच पारस्परिक हमले पर अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रिया सधी हुई आई है। इसका मुख्य कारण यह है कि ईरान और पाकिस्तान के बीच कामकाजी संबंध अब भी कायम हैं और दोनों को मालूम है कि संघर्ष उनके हित में नहीं है।

पाकिस्तानी सेना का नेतृत्व कर रहे जनरल अपनी सीमाएं जानते हैं कि पाकिस्तानी क्षेत्र पर हमला होने पर वे घरेलू स्तर पर खड़े नहीं हो सकते। इसलिए अमेरिका संयम बरतने की सलाह देकर चुप हो गया है। पाकिस्तान अभी अफगानिस्तान की सीमा पार से हो रहे हमलों का ही जवाब नहीं दे पाया है। उसकी अर्थव्यवस्था की स्थिति चिंताजनक तो है ही, देश के अंदर भी घोर असंतोष है, ऐसे में वह भी ईरान से लंबी लड़ाई नहीं चाहेगा। ऐसे में बलूच नेता हर्बयार मरी की बात भी सही भी हो सकती है। हर्बयार मरी ने दावा किया है कि ईरान और पाकिस्तान बहुत सुनियोजित तरीके से बलूच राष्ट्रवादियों को खत्म करना चाहते हैं। कारण चाहे जो हो लेकिन ईरान-पाकिस्तान के इस ताजा संघर्ष की कीमत बलूच लोग ही चुका रहे हैं।

आज का इतिहास

1924 यूनाइटेड किंगडम के प्रथम श्रम प्रधान मंत्री रामसे मैकडोनाल्ड बने
1927 हेरोल्ड लॉयड अभिनीत कॉमेडी फिल्म द किड ब्रदर परदे पर प्रकाशित की गयी।
1944 द्वितीय विश्व युद्ध-मित्र राष्ट्रों ने ऑपरेशन शिंगल की शुरुआत की, एन्ज़ियो और नेट्टुनो, इटली के क्षेत्र में एक्सिस बलों के खिलाफ एक शानदार लैंडिंग।
1946 ईरान क्राइसिस-द रिपब्लिक ऑफ महाबाद ने ईरान के भीतर कुर्द के लिए स्वायत्तता की मांग करते हुए अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की।
1946 ईरान क्राइसिस: द रिपब्लिक ऑफ महाबाद अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की, ईरान के भीतर कुर्दों के लिए स्वायत्तता की मांग की।
1957 न्यूयॉर्क शहर की पुलिस ने पूरे शहर में 16 वर्षों में 30 से अधिक बम प्लांट करने के लिए मैड बॉम्बर के नाम से मशहूर जॉर्ज मेटस्की को गिरफ्तार किया।
1963 देहरादून में दृष्टिहीनों के लिए राष्ट्रीय पुस्तकालय की स्थापना हुई।
1963 फ्रांस और पश्चिमी जर्मनी ने एलीसी संधि पर हस्ताक्षर किया।
1970 बोइंग 747 को न्यूयॉर्क एवं लंदन के बीच पहली व्यावसायिक उड़ान शुरु हुई।
1971 कॉमनवेल्थ ऑफ नेशंस के राष्ट्रव्यापी संविधान में दो सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेजों में से एक, सिंगापुर घोषणापत्र जारी किया गया था।
1972 इस्तानबुल की पूरी आबादी को 24 घंटे की अवधि के लिए नजरबंद किया गया।
1973 अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने गर्भपात को कानूनी मान्यता दे दी। कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि महिलाओं गर्भवती होने के पहले 6 महीने के भीतर गर्भपात करवा सकती हैं।
1987 रिश्वत लेने के दोषी पाए जाने के बाद, पेन्सिलवेनिया के कोषाध्यक्ष आर. ड्वायर ने एक टीवी पत्रकार वार्ता के दौरान आत्महत्या कर ली।
1994 न्यूयॉर्क सिटी में रूस्त्र में 45 वें ह।।रुमें वेस्ट को 9-8 से हराया।
1998 वर्ल्ड लीग ऑफ अमेरिका फुटबॉल हस्र्नरुईस्ट बन गया।
2003 नासा के अंतरिक्षयान पायनीयर 10 पृथ्वी से सर्वाधिक दूर मानव निर्मित यान से अंतिम बार संपर्क स्थापित हुआ।

रामचरितमानस का अनुपम उपहार

वीर सिंह

भारतीय इतिहास की पृष्ठभूमि में एक ऐसा नाम है, जो मुगल काल में सनातन पहचान और सांस्कृतिक संरक्षण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता की मूर्ति के रूप में उभरता है, वह है गोस्वामी तुलसीदास का। उनके महाकाव्य रामचरितमानस ने सनातन धर्म का उस समय पुनर्जागरण किया, जब भारत में मुगलों की तूती बोलती थी।

आज के दिन, जब राम की जन्मस्थली अयोध्या में पांच सौ वर्षों बाद राम मंदिर सनातन धर्म की महिमा का प्रतीक बन गया है, जब चारों दिशाएं 'जय श्रीराम' के नारों और राम भजनों से गूंज रही हैं और हवाओं में केसरिया रंग घुला है, तब यह आवश्यक हो गया है कि हम हर्ष-उल्लास के इस अद्भुत कालखंड में गोस्वामी तुलसीदास को भी अपनी स्मृतियों में संजोएं, जिन्होंने राम को देश के कण-कण में व्याप्त कर दिया, उन्हें भारतीय सभ्यता के सबसे बड़े नायक के रूप में जन-जन के रोम-रोम में स्थापित कर दिया। तुलसीदास का असाधारण योगदान न केवल उनके कृतित्व की साहित्यिक प्रतिभा में है, वरन भारतीय समाज के ताने-बाने पर मुगल प्रभाव को थोपने के विरुद्ध उनके दृढ दृष्टिकोण में भी है। तुलसीदास ने जान-बूझकर मुगलों की भाषा और अपसंस्कृति के प्रतीकों को रामचरितमानस से बाहर रखा।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना 16वीं शताब्दी में की थी। माना जाता है कि उन्होंने 1574 और 1576 के बीच इस कृति का सृजन किया। हालांकि विभिन्न ऐतिहासिक विवरणों के हिसाब से इसका सटीक समय थोड़ा भिन्न हो सकता है, पर सनातन मान्यताओं को अविरल रूप से सींचती रामचरितमानस एक कालजयी और श्रद्धेय कृति बनी हुई है और निस्संदेह विश्व में सर्वाधिक पढ़ी और गाई जाने वाली महाकाव्यात्मक रचना भी।

जब भारतीय शासकों, जाटों और राजपूतों ने मुगल साम्राज्य को उखाड़ फेंकने के लिए संघर्ष किया, तब सृजन तपस्या में लीन तुलसी एक अदृश्य नायक के रूप में उभर रहे थे। उनके महाकाव्य रामचरितमानस ने पूरे उपमहाद्वीप में हिंदुओं को एकजुट करने वाली शक्ति प्रदान की। पुरुषोत्तम राम को अपने महाकाव्य के केंद्रीय व्यक्ति और नायक के रूप में प्रस्तुत कर तुलसीदास ने हिंदू समाज को एक उभयनिष्ठ गुरुत्वाधार दिया, जिससे हिंदू समुदाय को मुगलों के दमनकारी शासन के विरुद्ध एकजुट होने की प्रेरणा मिली।

इस तरह से तुलसी के सृजन का प्रभाव साहित्य के क्षेत्र से परे चला गया। भगवान राम पर केंद्रित अपनी कथा के साथ रामचरितमानस एक शाश्वत महाकाव्य बन गया, जिसने पीढ़ी दर पीढ़ी सभी को प्रभावित किया। इसकी चौपाइयां लाखों हिंदू घरों में गूंजती हैं और जो हमें प्रेरणा और नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत और सनातन सभ्यता के स्थायी मूल्यों का स्मरण कराती हैं।

तुलसीदास के प्रभाव की परिणति राम की पूजा के समकालीन पुनरुत्थान और अयोध्या में भव्य राम मंदिर की स्थापना में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। इस सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पुनरुत्थान के पुण्य बीज रामचरितमानस में हैं। तुलसी ने राम के प्रति अटूट श्रद्धा की नींव रखी। भारत में विगत 500 वर्षों से दबे स्वरों में और 30-40 वर्षों से सक्रिय रामजन्मभूमि आंदोलन और अब अयोध्या में भव्य मंदिर तथा रामलला की प्राण प्रतिष्ठा रामचरितमानस के अमिट आलोक का ही प्रतिफल है। सनातन के प्रति अटूट प्रतिबद्धता और मुगल अपसंस्कृति के प्रति अवज्ञा को देखते हुए गोस्वामी तुलसीदास को सच्चे अर्थों में %राष्ट्र जनक% कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा। रामचरितमानस के माध्यम से उन्होंने जो सांस्कृतिक कायाकल्प किया, वह उन्हें सनातन धर्म के इतिहास और विदेशी प्रभुत्व के विरुद्ध संघर्ष में एक महान व्यक्ति बनाता है। मुगल शासन की नीतियों से जो राष्ट्र अंधकार में चला गया था, तुलसी का रामचरितमानस उसे रोशनी दिखाता है, और रामचरितमानस के राम उसी भारत राष्ट्र के पुनरुत्थान के नायक हैं। तुलसीदास की विरासत, जिसने सनातन इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा, एक अदम्य शक्ति के रूप में हमारे समाज में, हमारी लोक परंपरा में और हमारी ध्यान-धारणा में कायम है। यह वही विरासत है, जिसके नायक राम हैं और जिसने भारत में मुगल शासन का न केवल अंत किया, वरन उसे विलुप्त भी कर दिया। तुलसीदास का जीवन और उनकी अनमोल काव्य कृति भारतीय प्रासंगिकता को एक ऐसा आयाम दे गए, जिससे राष्ट्र की अस्मिता सदैव अक्षुण्ण बनी रहेगी।

अब जब इसरो द्वारा लांच किया गया %आदित्य एल-1% सूर्य की भीतरी कक्षा में पहुंचकर सूर्य का रहस्योद्घाटन कर रहा है, तब हमें भारत की अद्वितीय ब्रह्मांड संबंधी उपलब्धियों को तुलसी के रामचरितमानस से भी जोड़कर देखना चाहिए। तुलसीदास पृथ्वी और सूर्य के बीच की दूरी का रूपक और काव्यात्मक वर्णन करते हैं। रामचरितमानस के %बालकांड% में तुलसी हनुमान की भगवान राम के प्रति भक्ति और समर्पण की तुलना सूर्य के बीच की विशाल दूरी से करते हैं। सुंदरकांड से उद्धृत श्लोक के अनुसार, हनुमान सीता की खोज में लंका पहुंचने के लिए समुद्र के ऊपर से विशाल छलांग लगाते हैं। तुलसीदास इस अवसर का उपयोग हनुमान की भक्ति की असाधारण प्रकृति को व्यक्त करने के लिए करते हैं = जब लगि आवत तब लगहु उठहि। कराहु परस्पर प्रमाण भला बुरा न कोय। सखा सुता केहि नवा सपदि गायवु। केसरी आजा सुलक्खि सरिरा न सोई।। यानी जब तक भगवान राम का अवतार पृथ्वी पर रहेगा, हनुमान बिना किसी बाधा या कठिनाई के, पृथ्वी और सूर्य के बीच की दूरी की तरह, अंतर को पाटते रहेंगे। यह अद्भुत अभिव्यक्ति है, जिसके जरिये तुलसीदास भगवान राम के प्रति हनुमान की भक्ति और सेवा की असीम प्रकृति पर जोर देने की बात कहते हैं।

ध्यान रखना चाहिए कि सामाजिक-सांस्कृतिक पुनरुत्थान की प्रक्रियाएं धीमी होती हैं, ठीक प्रकृति के विकास की तरह, लेकिन उनमें कलात्मक ऊर्जाओं का पुंज हो, तो कभी न कभी वे सार्थक हो ही जाती हैं। राम की पुरुषोत्तमता के ऊर्जा पुंज से आलोकित अपने समकालीन समाज को रामचरितमानस का अनुपम उपहार देकर तुलसीदास भारतवर्ष के भविष्य की भी रचना कर गए हैं।

संविधान में हैं 22 चित्र जिसमें हैं राम कृष्ण हनुमान, बुद्ध इसलिए अनूठा है भारत

अजय खेमरिया

आज का दिन हर भारतीय के लिए बेहद खास है और इसके पीछे की वजह है राम मंदिर का बनकर तैयार होना। हर किसी की नजरें अयोध्या की तरफ है, लेकिन इस बीच आपके लिए संविधान से जुड़े कुछ तथ्यों के बारे में जानना भी जरूरी हो जाता है। ऐसा इसलिए क्योंकि संविधान में 22 चित्र ऐसे हैं, जिनमें से एक भगवान श्रीराम का भी है। इसके अलावा राम के प्रिय भगवान हनुमान का भी चित्र भारत के संविधान में हैं। हम मूल संविधान की प्रति उठाकर पन्नों को पलटते हैं तो हमें उसके अंदर सुविख्यात चित्रकार नन्दलाल बोस की कूची से बनाए हुए कुल 22 चित्र नजर आते हैं। इन चित्रों के आधार पर ही हम समझ सकते हैं कि हमारे संविधान निर्माताओं के मन और मस्तिष्क में कैसे आदर्श भारतीय समाज की परिकल्पना रही होगी। इन चित्रों की शुरुआत मोहनजोदड़ो से होती है और फिर वैदिक काल के गुरुकुल, महाकाव्य काल के रामायण में लंका पर प्रभु राम की विजय,गीता का उपदेश देते श्री कृष्ण,भगवान बुद्ध भगवान महावीर,सम्राट अशोक द्वारा बौद्ध धर्म का प्रचार,(मौर्य काल), गुप्त वंश की कला जिसमें हनुमानजी का दृश्य है, विक्रमादित्य का दरबार, नालंदा विश्वविद्यालय, उड़िया मूर्तिकला,नटराज की प्रतिमा, भागीरथ की तपस्या से गंगा का अवतरण,मुगलकाल में अकबर का दरबार, शिवाजी और गुरु गोविंद सिंह ,टीपू सुल्तान और महारानी लक्ष्मीबाई,गांधी जी का दांडी मार्च,नोआखली में दंगा पीड़ितों के बीच गांधी,नेताजी सुभाषचंद्र बोस,हिमालय का दृश्य,रेगिस्तान का दृश्य,महासागर का दृश्य शामिल है। इन 22 चित्रों के जरिए भारत की महान परम्परा की कहानी बयां की गई है। इनमें राम कृष्ण,हनुमान, बुद्ध, महावीर,विक्रमादित्य, अकबर,टीपू सुल्तान, लक्ष्मीबाई, गांधी,सुभाष,क्यों है? क्या केवल संविधान की किताब को कलात्मक कलेवर देने के लिए ?शायद बिल्कुल नही। असल में यह चित्र भारत के लोकाचार और मूल्यों का प्रतिनिधित्व देने के लिए नन्दलाल बोस से बनवाए गए। यही चित्र संविधान की इबारत के जरिए शासन और सियासत के अभीष्ट निर्धारित किए गए थे। सवाल यह है कि इन्ही 22 चित्रों में नन्दलाल बोस ने रंग क्यों भरा है संविधान की पुस्तक में? इसका बहुत ही सीधा और सरल जवाब यही है कि ये सभी चित्र भारत के महान सांस्कृतिक जीवन और विरासत के ठोस आधार है ये सभी चित्र भारत की अस्मिता के प्रमाणिक अवसरों के दस्तावेज हैं जिनके साथ हर भारतवासी एक तरह के रागात्मक अनुराग जन्मना महसूस करता है। राम-कृष्ण,हनुमान, गीता,बुद्ध,महावीर,नालंदा,गुरु गोविंद असल मे हजारों साल से भारतीय लोकजीवन के दिग्दर्शक हैं। जाहिर है संविधान की मूल रचना में इन्हें जोड़ने के पीछे यही सोच थी की भारत की आधुनिकता और विकास की यात्रा इन जीवनमूल्यों के आलोक में ही निर्धारित की जाना चाहिए। लेकिन दु:खद अनुभव यह है कि पिछले कुछ दशकों ने भारतीय संविधान निर्माताओं की भावनाओं के उलट देश के शासनतंत्र और चुनावी राजनीति के माध्यम से भारत के लोकजीवन को धर्मनिरपेक्षता के शोर से दूषित करने का प्रयास किया गया है। यही धर्मनिरपेक्षता की राजनीति भारत के आधुनिक स्वरूप की समझ और स्वीकार्यता को खोखला साबित करने के लिए पर्याप्त इसलिए है क्योंकि परम्परागत भारत और आधुनिक भारत के मध्य जिस संविधान के प्रावधानों को अलगाव का आधार बनाया जाता है असल में वे आधार तो कहीं संविधान के दर्शन में है ही नहीं। जाहिर है सवाल यह है कि क्या पिछले 45 साल से संविधान की विकृत व्याख्या के जरिए इस देश की सियासत और प्रशासन को परिचालित किया जा रहा है? जिस राम-कृष्ण, हनुमान को शासन के स्तर पर सेक्युलरिज्म के शोर में अछूत मान लिया गया क्या वे संविधान निर्माताओं के लिए भी अस्पृश्य थे?

विश्व का प्राचीन और विलक्षण महाकाव्य है रामायण

जयसिंह रावत

अध्योध्या में राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के साथ ही भारत वर्ष के धार्मिक इतिहास में 22 जनवरी की तिथि को एक नया अध्याय जुड़ने जा रहा है। इस ऐतिहासिक तिथि से पूर्व ही अधिकांश हिन्दू जनमानस राममय हो रहा है। भगवान राम की कथा मानो जैसे पुनर्जीवित हो रही हो। ऐसी स्थिति में उस अध्यात्मिक कथा के आधार रामायण पर भी चर्चा जरूरी है। इस महाग्रन्थ के मूल रचियता महर्षि वाल्मीकि और उस महाग्रन्थ की प्रतिकृति 'रामचरित मानस' के रचियता महाकवि तुलसीदास का स्मरण भी समीचीन ही है। रामायण भाव भाषा शैली समस्त दृष्टि से एक विलक्षण महाकाव्य है। इस महाकथा में श्रृंगार, शान्त, करुण, भक्ति, वात्सल्य समस्त रसों का यथोचित प्रयोग किया गया है। मर्यादा पुरुषोत्तम राजा राम की कथा हमें महर्षि वाल्मीकि कृत ''रामायण'' में भी मिलती है तो महाकवि तुलसीदास कृत ''राम चरित मानस'' मानस में भी मिलती है। रामचरितमानस वाल्मिकी रामायण का पुनर्जन्म माना जा सकता है। ''रामायण'' विश्व के प्राचीनतम् महाग्रन्थों में से एक है। मान्यता है कि नारद ने यह ज्ञान वाल्मिकी को दिया और फिर वाल्मिकी ने रामायणकी रचना की। जबकि रामचरितमानस की रचना सोलहवी सदी में तुलसीदास द्वारा की गई। रामायण को संस्कृत भाषा में और रामचरितमानस को अवधी भाषा में लिखा गया। दोनों ही ग्रथों में भगवान राम की कथा 7 खण्डों या अध्यायों में लिखी गई है। वाल्मीकि कृत 'रामायण' में लगभग 24,000 छंद (श्लोक) हैं। जबकि. अवधी में लिखे गए रामचरितमानस में लगभग 11,000 छंद (चौपाई) हैं। हालांकि, दोनों ही भगवान राम को मुख्य पात्र मानकर लिखी गई हैं। रामायण के दोनो सबसे प्रसिद्ध संस्करणों की अपनी विशिष्ट विशेषताएं और सांस्कृतिक प्रभाव हैं। दरअसल रामायण विश्व के पांच प्राचीनतम् महाग्रथों में से एक है। दुनिया के सबसे पुराने और महानतम महाकाव्य विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं को दर्शाते हैं, जो समृद्ध आख्यानों और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रदर्शित करते हैं। ये महाकाव्य विभिन्न सभ्यताओं में साहित्य, कला और संस्कृति को प्रभावित करते हुए समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं। इनमें भारत के महाभारत और रामायाण शामिल हैं। जबकि अन्य महाग्रन्थों में गिलगमेश का महाकाव्य (सुमेरियन या बेबीलोनियाई), इलियड और ओडिसी (ग्रीक) और रोमन महाकाव्य एनीड शामिल हैं। रोमन कवि वर्जिल द्वारा लिखित, एनीड एक ट्रोजन नायक एनीस की पौराणिक कहानी बताता है, जो इटली की यात्रा करता है और रोमनों का पूर्वज बन जाता है। वाल्मीकि को भगवान राम का समकालीन माना जाता है और रामायाण का रचनाकाल त्रेता युग माना जाता है। जबकि दोनों संस्करण भगवान राम की यात्रा की मौलिक कथा साझा करते हैं, शैली, जोर और सांस्कृतिक संदर्भ में अंतर प्रत्येक संस्करण को अद्वितीय बनाते हैं। पाठक अपनी पसंद और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर रामायण के विभिन्न पहलुओं की सराहना कर सकते हैं। वाल्मिकी की रामायण को मूल माना जाता है और इसे इसकी विस्तृत कथा, नैतिक शिक्षाओं और काव्य सौंदर्य के लिए आदर दिया जाता है। यह हिंदू दर्शन और संस्कृति के लिए एक मूलभूत पाठ प्रदान करता है। रामायण सात अध्यायों या कांडों से बनी है, जिसमें लगभग 24,000 छंद (श्लोक) हैं। इसका विस्तार जिन 7 काण्डों में दिया गया है उनमें प्रथम बालकाण्ड है। इस अध्याय में भगवान राम के जन्म और बचपन का वर्णन है।

अयोध्या राम मंदिर 2024 : भारत के पर्याय हैं राम

डॉ. कृष्ण गोपाल मिश्रा

इस भारत वसुन्धरा पर सहस्त्रों वर्ष पूर्व आदिकवि वाल्मीकि ने 'रामायण' में राम को मानवीय भावभूमि पर प्रतिष्ठित कर विश्वसाहित्य में एक अविस्मरणीय चरित्र की अद्भुत सृष्टि की। यह चरित्र-सृष्टि इतनी मोहक, आकर्षक और प्रेरक थी कि परवर्ती साहित्य में पुन:-पुन: प्रकट होकर, यत्किंचित अंतर युक्त होकर भी समाज को प्रभावित करती रही, लुभाती रही। विक्रम संवत् 1631 में गोस्वामी तुलसीदास ने अब से 450 वर्ष पूर्व आदिकवि की मानवीय चरित्र-सृष्टि को पौराणिक अवतारवादी धरातल पर विष्णु के अवतार के रूप में प्रतिष्ठित कर रामकथा को नया आयाम प्रदान किया।

राम के महामानव आदर्श के अंकन ने समाज को उनके आचरण का अनुकरण करने की शुभ प्रदायिनी प्रेरणा दी तो गोस्वामी तुलसीदास के नरलीला परक अवतारवाद ने इस्लामिक सत्ता की विस्तारवादी क्रूरता के विरूद्ध संघर्ष करने का साहस, शौर्य्य और आस्थापुष्ट संबल दिया। 'रामायण' और रामचरितमानस' में अंकित राम के ये दोनों ही- मानवीय और नारायणीय रूप लोक जीवन में दूर तक स्वीकृत और समादृत हैं। राम दोनों ही रूपों में आज व्याख्येय हैं। जहां दूरस्थ ग्रामीण अंचलों से लेकर नगरों, महानगरों और राजधानियों तक फैले छोटे-बड़े असंख्य मंदिरों में प्रतिष्ठित-पूजित राम प्रतिमाएं उनके नारायणत्व ईश्वरत्व की साक्षी देती है, वहीं विश्व की विविध भाषाओं में रचित रामकथा परक साहित्य की अगणित प्राचीन, अर्वाचीन और नवीन कृतियां उनके ईश्वरत्व के साथ नरत्व का प्रेरक प्रत्याख्यान करती हैं।

रामराज्य सुशासन का प्रतीक-पर्याय बनकर भारतवर्ष में सर्वत्र स्वीकृत हुआ है। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि से लेकर महात्मागाँधी तक रामराज्य की अवधारणा निरंतर हमारी संस्कृति का आदर्श मानक रही है और आज भी है किन्तु रामराज्य के लिए जिस राजनीतिक व्यक्तित्व विकास एवं पारिस्थितिक परिवेश परिवर्तन की प्रक्रिया अपेक्षित है, उसकी ओर हमारा

ध्यान नहीं जाता। व्यक्ति में 'रामत्व' की प्रतिष्ठा किए बिना और समाज-उपवन के कष्ट कंटकों का समूल उच्छेदन किए बिना रामराज्य का पुनर्संस्थापन कैसे संभव है? जब तक कोई साधन विहीन राम अपने पुरुषार्थ, साहस, शौर्य्य और संगठन-कौशल के बल पर उत्पीड़क राक्षसी मानसिकता का सर्वनाश नहीं कर देता तब तक समाज में रामराज्य कैसे आ सकता है? रामराज्य की स्थापना के लिए राम की आवश्यकता है और राम की रामत्व की प्राप्ति के निमित्त व्यक्तित्व विकास एवं चरित निर्माण की उस लम्बी साधना-सुलभ प्रक्रिया की आवश्यकता है जो साधारण मनुष्य में देवत्व का, व्यक्ति के व्यक्तित्व में 'रामत्व' का सचेत सन्निधान करती है।

कोई व्यक्ति एक दिन में राम नहीं बन सकता। रामत्व प्राप्त नहीं कर सकता। राम में रामत्व का विकास उनके वात्सल्य-प्रेम पुष्ट बाल्यकाल से प्रौढ़ावस्था तक के सुदीर्घ अनुभव, शास्त्रज्ञान एवं सतत जाग्रत विवेकयुक्त शक्ति का सम्मिलित परिणाम है। जब व्यक्ति संघर्ष की आंच में तपकर लोक-कल्याण के विचार को उत्तरोत्तर पुष्ट करता हुआ राम बनता है, तब रामराज्य आता है।

राजगृह में जन्म लेकर, गुरुकुल में अनुशासन -संयम की छांह में अध्ययन कर और चैदह वर्ष की दीर्घ अवधि तक वन-प्रान्तर में अनेक वनजातियों एवं तपस्वियों के मध्य निवास करते हुए प्रबलतम शत्रुशक्ति पर विजय प्राप्त कर राम ने अद्भुत सामर्थ्य अर्जित की और राजपद पर अभिषिक्त होकर स्वयं को जनता जनार्दन की कल्याण-साधना के प्रति सहर्ष अर्पित कर दिया। लोक-पथ पर लोक-हित के दिव्य रथ का संचालन सीखने के लिए राम के व्यक्तित्व विकास, उनके शील-सौन्दर्य एवं शक्ति-संयुक्त स्वरूप को समझना होगा।

दार्शनिक मान्यताओं के अनुसार संसार में 'सत' और 'असत' का संघर्ष सनातन है, शाश्वत है। यह संघर्ष मनुष्य के बाहर भी है और भीतर भी। मन में सद् इच्छाओं और दुरभिलाषाओं के मध्य होने वाला द्वन्द्व कर्म के स्तर पर बाह्य जगत में प्रकट है। यही द्वन्द्व समाज में विविध रूपों में संघर्ष का कारण बनता है। सबकों सुख पहुँचाना, सबके हित की चिंता करना और सबके हर्ष का कारण बनना सत है, स्वयं जीना तथा सबको जीने देना और कभी-कभी सबके जीवन के लिए अपने जीवन को भी सहर्ष उत्सर्गित कर देना सत् है। इसके विपरीत सबसे सबका सब कुछ छीनकर अपना पोषण करना असत् है, अपने मत, मान्यता, कर्म को मानने के लिए अन्य को उसकी इच्छा के विरूद्ध बलपूर्वक अथवा लोभ देकर विवश करना असत् है।

'राम' और 'रावण' भारतीय धर्म, दर्शन, साहित्य और समाज में 'इसी सत' और 'असत' का प्रतीकार्थ प्रकट करते हैं। इस प्रकार राम और रावण इस भौतिक जगत के ऐतिहासिक-पौराणिक पात्र होने के साथ-साथ प्रतीक पात्र भी हैं जिनकी प्रतीकात्मक प्रस्तुति समाज और साहित्य में अपरिवर्तनीय है। भारतीय समाज के विस्तृत पटल पर और देश-विदेश में बसे एक अरब से अधिक सनातनी हिन्दुओं की दृष्टि में आज भी राम ही सत के प्रतीक हैं और रावण असत् का प्रतीक है। इसीलिए प्रतिवर्ष आश्विन सुदी दशमी को दशहरे पर सत् की असत् पर विजय दर्शाते हुए रावण-दहन किया जाता है, किया जाता रहेगा क्योंकि मनुष्य की सहज वृत्ति सत्पथगामिनी है। निहित स्वार्थों के लिए कोई समूह भले ही असत के पोषण मे, रावण के महिमा मण्डन में व्यस्त हो जाए किन्तु अन्तत: उसे राम के रूप में ही सत् का वन्दन-अभिनंदन करने को बाध्य होना होगा, क्योंकि असत् के प्रसार की रावणी-चित्तवृत्ति व्यक्ति और समाज-दोनों को ही अन्तत: नष्ट कर देगी।

राम के राज्य में राजनीति स्वार्थ से प्रेरित ना होकर प्रजा की भलाई के लिए थी

डॉ. आशीष वशिष्ठ

श्रीराम केवल एक महापुरुष, केवल एक दैवी शक्ति संपन्न राजा या भगवान नहीं थे। श्रीराम का जीवन और चरित्र भारत राष्ट्र की जीवन चरित्र है। महाकवि कालिदास ने उनके व्यक्तित्व की तुलना हिमालय और सागर के साथ एक साथ करके यह बता दिया है कि राम व्यक्ति नहीं राष्ट्र हैं। भारत और उसकी सनातन परम्परा के लिए राम ही राष्ट्र हैं और राष्ट्र ही राम है। भारत के कण-कण में राम समाविष्ट हैं। भारत के चरित्र ही नहीं भारत के अस्तित्व के आधार राम हैं।

श्रीराम का अर्थ है मर्यादा। राम राज्य की स्थापना का अर्थ है मर्यादा की स्थापना। बहुत सोच-समझ कर बनाए गए हमारे संविधान में विविध प्रावधान होने पर भी, पारदेशीय संस्कृति और समाज के प्रभाव के कारण विविध प्रकार की विसंगतियां हमारे समाज में आज भी विद्यमान हैं। कर्त्तव्य विस्मृत करके केवल अधिकार की लड़ाई ने समाज में अविश्वास और घृणा का वातावरण पैदा कर दिया है। श्रीराम की मर्यादा का अर्थ है कर्त्तव्य का सर्वोपरि होना। कर्त्तव्य सर्वोपरि हो तो अधिकार, उत्तरदायित्वपूर्ण अधिकार स्वत: प्राप्त हो जाता है।

रामराज्य शासन की आदर्श संकल्पना है। एक ऐसी राज व्यवस्था जहां न कोई दुखी हो और न ही अभावों से ग्रस्त हो। जहां जन-जन भय मुक्त हो और चर्तुदिक शांति हो। जहां का शासन सभी के लिए मंगलकारी हो। राम इसीलिए मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए, क्योंकि उन्होंने हर हाल में मर्यादा की रक्षा की और स्थापित किया कि सत्यनिष्ठ, कर्मनिष्ठ और धर्मनिष्ठ आचरण ही मर्यादा है तथा उससे सभी बंधे हैं। वह हर रूप में मर्यादा के प्रतीक हैं। राम के राज्य में राजनीति स्वार्थ से प्रेरित ना होकर प्रजा की भलाई के लिए थी। इसमें अधिनायकवाद की छाया मात्र भी नहीं थी। राम का राज्य मानव कल्याण के आदर्शों से युक्त एक ऐसा राज्य था जिसमें निस्वार्थ प्रजा की सेवा निष्पक्ष आदर्श न्याय व्यवस्था सुखी तथा समृद्ध शादी समाज व्यवस्था पाई जाती थी। राम इस सीमा तक लोकतांत्रिक हैं कि एक अवसर पर कहते हैं-यदि अनुमति हो तो कुछ कहूं और यदि मेरे कहे में कुछ अनुचित देखें तो मुझे टोक दें, मैं सुधार कर लूंगा। वह अपने राज्य में रहने वाले किसी भी व्यक्ति की राय के आधार पर फैसला लेने में हिचकते नहीं। श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन चरित ऐसी मर्यादाओं, कर्तव्य पालन और सभी के अधिकारों के प्रति सम्मान का पर्याय है। मानव सभ्यता के सम्पूर्ण लिखित-अलिखित इतिहास में श्रीराम जैसा व्यक्तित्व और चरित्र का दूसरा उदाहरण उपलब्ध नहीं है।

राम को धर्म का विग्रह कहा गया है, 'रामो विग्रहवान् धर्म:'. एक व्यापक अर्थ में राम का चरित धर्म मार्ग की चुनौतियों और उसके विचलन से उठने की मुश्किलों अर्थात जीवन के आधारों की मर्यादा स्थापित करने की राह में आने वाले प्रश्नों से रूबरू कराता है। गांव का अनपढ़ भी इनसे शिक्षित होता है और एक तरह के विवेक के भाव की अनुभूति करता है। श्रीराम मानव शरीर धारण करने पर जीवन के कठोर सत्य की कसौटी पर वे हमेशा ही कसे जाते हैं। किशोरावस्था से ही उनके सामने जो चुनौतियों की श्रृंखला शुरू होती है उसका जीवन में कभी अंत नहीं हुआ पर सारे कष्टों के बीच वे अविचल भाव से स्थित रहे। विकट परिस्थितियों में भी वे अपने पूरे परिवेश के साथ अनुकूलित रहते थे। उनके लिए आस-पास का कोई भी प्राणी 'अन्य' नहीं रहा,

सभी अनन्य हो गए थे। वे गिरिजन, वनचारी और वानर सभी के हित के लिए जुटे रहे। करुणा और पर-दुखकातरता की भावना से ओत-प्रोत श्रीराम ने उन सबसे से प्रेम तथा सौहार्द का रिश्ता बनाया और निभाया।

सबको साथ लेकर चलने के मामले में राम अद्वितीय हैं। वनवासियों समेत समाज के सभी वंचित-शोषित वर्गों को आदर देना उनका स्वभाव है। उनमें आत्मविश्वास पैदा कर उनके सहयोग को वह अपनी शक्ति बना लेते हैं। साधारण जन समुदाय में समुद्र पार जाने का साहस जगाकर और परम पराक्रमी रावण की दिग्विजयी सेना को परास्त कर राम ने स्थापित किया कि केवल सैन्य बल शौर्य का परिचायक नहीं होता। वह अपने शौर्य के बल पर हर चुनौती पर विजय पा लेते हैं।

भारतीय जन मानस के समक्ष जीवन का जो आदर्श उन्होंने राजा के रूप में तथा आज्ञाकारी पुत्र के रूप में सबके सामने रखा तथा सबके प्रति स्नेह, करुणा और सेवा का भाव रखा, वह संपूर्ण भारतीय समाज तथा मानव जाति के लिए अनुकरणीय है। प्रख्यात समाजवादी नेता एवं चिंतक डॉ. राम मनोहर लोहिया लिखते हैं-'राम की सबसे बड़ी महिमा उनके उस नाम से मालूम होती है जिसमें कि उनको मर्यादा पुरुषोत्तम कह कर पुकारा जाता है। राम मर्यादा पुरुष थे। ऐसा रहना उन्होंने जानबूझ कर और चेतन रूप से चुना था। आज जब दुनिया भर में हड़पने और विस्तार की महत्वाकांक्षा सिर उठाए खड़ी है तो राम की मर्यादा को याद करना जरूरी हो जाता है। राम का जीवन बिना हड़पे हुए फैलने की एक कहानी है। उनका निर्वासन देश को एक शक्ति केंद्र के अंदर बांधने का मौका था। श्रीराम ने अयोध्या से लंका तक की अपनी यात्रा में कभी अतिक्रमण नहीं किया, वे दायरे से बाहर नहीं गए। जब पहली बार उन्हें वानर नरेश बालि के साम्राज्य पर अधिकार करने का मौका मिला था, वे चाहते तो बालि के भाई सुग्रीव का साथ देने के बहाने उसका साम्राज्य हड़प सकते थे। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया है। यह एक विशाल हृदय राजकुमार की मर्यादा थी। यह नीतिशास्त्र की मर्यादा थी और राजनीति की भी।'

राम की संस्कृति जब—जब एक सम्पूर्ण और एकात्म राष्ट्र की अस्मिता बनकर उभरने लगती है, अराष्ट्रीय तत्व विक्षिप्त और बेचैन होने लगते हैं। लोकतंत्र के वोट तत्त्व की विवशता राष्ट्रीय परिवार, उसकी भूमि और भावना को आत्मघाती रूप दिया जाने लगता है। ऐसा एक बार नहीं अनेक बार हुआ है। देशवासियों ने अब अपने टूटे प्रण के टुकड़ों को जोड़कर प्राणों का कवच बनाने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी है। श्रीराम प्रभु इस राष्ट्र की प्राणवायु हैं। इस राष्ट्र की हजारों वर्ष की जीवन यात्रा में अनेक राज्य बने और मिटे। अनेक राजा आए और गए। श्रीराम के आविर्भाव के पूर्व भी यह हुआ था जिसने भूत और वर्तमान को जोड़ रखा है।

मनु और इक्ष्वाकु से लेकर नरेंद्र मोदी तक की सत्ता परम्परा में श्रीराम का ही एकमात्र ऐसा व्यक्तित्व है जिसमें यहां के समस्त राष्ट्रजन अपने राष्ट्र का त्रिकाल दर्शन करते हैं। शेष सभी ऐसे हैं जिसमें किसी में दल दिखाई देता है तो किसी में जाति। किसी में वंश बिम्ब है, तो किसी में सत्ता स्वार्थ की शरारत। राम की लोकरंजकता भारत के लोकतंत्र के आधुनिक संस्करण में पूर्णत: अनुपस्थित है। जीवन मूल्य राजनीतिक विवशता के बंदी हैं। राष्ट्रीय अस्मिता चुनावों के हार जीत की आश्रित है। वह विधायिका के पक्ष विपक्ष की संख्या की कसौटी पर कसी जाती है।

राम मानवता की चरम अभिव्यक्ति हैं, जिसमें दु:ख-सुख, लोक-लाज, हानि-लाभ, जय-पराजय, ऊंच-नीच, नीति-धर्म सभी कुछ समाहित है। महर्षि वाल्मीकि लिखते हैं कि राम, धर्म अर्थात् जो कुछ एक मानव के लिए धारण करने योग्य है, उसके मूर्तिमान रूप हैं। उन्होंने राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रतिपादित कर एक सांस्कृतिक आधार प्रदान किया। राष्ट्र का केन्द्र राजा होता है। वह प्रजा का हित चिंतक और राष्ट्र का उन्नायक होता है। वह धर्म तथा सत्य का उद्गम स्थल है। मनुष्य के जीवन में आने वाली सभी संबंधों को पूर्ण एवं उत्तम रूप से निभाने की शिक्षा देने वाला प्रभु रामचंद्र के चरित्र के समान दूसरा कोई चरित्र नहीं है।

वर्तमान समय में राम नीति की अत्यंत आवश्यकता है क्योंकि पूरा विश्व घोर आपसी वैमनस्य और आर्थिक संकट से जूझ रहा है। राजा की दिनचर्या कैसी होनी चाहिए या वर्तमान समय में जो पूरे विश्व में जिस प्रकार से शासन प्रणाली है, उसमें आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है।

क्यों है रामलला की मूर्ति का रंग काला?

जानें इसके पीछे का रहस्य

प्रभु श्री राम की जन्म भूमि अयोध्या राम नाम से जगमगा रही है। सोमवार 22 जनवरी के दिन प्रभु की मूर्ति की प्राण पर प्रतिष्ठा होनी है। प्राण प्रतिष्ठा का अनुष्ठान 16 जनवरी से शुरू हो गया था। श्री राम के बाल रूप स्वरूप में मूर्ति का निर्माण किया गया है, जो श्यामल रंग की है। ऐसे में कई लोगों में असमंजस की स्थिति बनी हुई है कि आखिर भगवान श्री राम की मूर्ति काले रंग की ही क्यों बनाई गयी है। इसलिए आइए जानते हैं क्या है भगवान राम की मूर्ति के रंग के पीछे का रहस्य-

काला रंग ही क्यों?

महर्षि वाल?मीकि रामायण में भगवान श्री राम के श्यामल रूप का वर्णन किया गया है। इसलिए प्रभु को श्यामल रूप में पूजा जाता है। वहीं, श्री राम की मूर्ति का निर्माण श्याम शिला के पत्थर से किया गया है। यह पत्थर बेहद खास है। श्याम शिला की आयु हजारों वर्ष मानी जाती है। यही वजह है की मूर्ति हजारों सालों तक अच्छी अवस्था में रहेगी और इसमें किसी भी तरह का बदलाव नहीं आएगा। वहीं, हिंदू धर्म में पूजा पाठ के दौरान अभिषेक किया जाता है। ऐसे में मूर्ति को जल, चंदन, रोली या दूध जैसी चीजों से भी नुकसान नहीं पहुंचेगा।

बालस्वरूप में क्यों बनाई गई प्रतिमा?

मान्यताओं के अनुसार, जन्म भूमि में बाल स्वरूप की उपासना की जाती है। इसीलिए भगवान श्री राम की मूर्ति बाल स्वरूप में बनाई गयी है।

प्राण प्रतिष्ठा जरूरी

प्राण प्रतिष्ठा प्रक्रिया का मतलब है मूर्ति में प्राण डालना। बिना प्राण प्रतिष्ठा के मूर्ति पूजन पूर्ण नहीं माना जाता है। मूर्ति में प्राण डालने के लिए मंत्र उच्चारण के साथ देवों का आवाहन किया जाता है। इसलिए जिस प्रतिमा को पूजा जाता है उसकी प्राण प्रतिष्ठा करना जरूरी माना जाता है।

कैरियर में सफलता के लिए इन चार राशियों को धारण करना चाहिए पुखराज

रत्न शास्त्र के अनुसार, कुछ रत्नों को राशिनुसार धारण करने से जातक को बेहद शुभ फल मिलते हैं। वैसे तो कुल 84 रत्न होते हैं, लेकिन मोती, पन्ना, मूंगा, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद,वैदूर्य और पन्ना समेत इन 9 मुख्य रत्नों को धारण करना बहुत मंगलकारी माना गया है। इन 9 रत्नों को राशिनुसार धारण करने से भी जातक के सभी कष्ट बहुत जल्द दूर हो जाते हैं। रत्न शास्त्र में बताया गया है कि कुछ जातकों को पुखराज रत्न धारण करने से खूब लाभ मिलता है और सुख-सौभाग्य में वृद्धि होती है। पुखराज रत्न इन राशियों को सबसे ज्यादा अच्छे रिजल्ट्स देता है और सभी कार्यों में सफलता की राह आसान हो जाती है। चलिए जानते हैं कि किन राशियों को पुखराज पहनना चाहिए? इन लोगों को पहनना चाहिए पुखराज- ज्योतिष के अनुसार, मेष, सिंह, धनु और मीन राशि के लोगों को पुखराज पहनने से बेहद लाभकारी साबित हो सकता है। इन राशियों के लोगों पुखराज बहुत शुभ फल देता है। इसे धारण करने से जातक धन-दौलत में वृद्धि होती है। कुंडली में वृहस्पति ग्रह मजबूत होता है, जिससे व्यक्ति के वैवाहिक जीवन की दिक्कतों से छुटकारा मिलता है।

किसे नहीं पहनना चाहिए ये रत्न?

ज्योतिष के अनुसार, वृषभ, मिथुन, कन्या, तुला, मकर और कुंभ राशि के लोगों को पुखराज नहीं पहनना चाहिए। साथ ही जिस जातक की कुंडली में गुरु ग्रह नीच स्थिति में उसे भी पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। ऐसा करने से व्यक्ति को पुखराज का अशुभ प्रभाव मिल सकता है।

पुखराज धारण करने के लाभ-

- करियर और मैरिड लाइफ में दिक्कतों का सामना करने वाले व्यक्ति को पुखराज पहनना चाहिए मान्यता है कि इस रत्न के शुभ प्रभाव से करियर में आ रही बाधाएं दूर होती हैं और वैवाहिक जीवन में खुशहाली आती है।
- जिन लोगों को विवाह में देरी का सामना करना पड़ रहा हो, वे लोग भी पुखराज धारण कर सकते हैं। ज्योतिष के अनुसार, पुखराज पहनने से गुरु ग्रह मजबूत होता है, जिससे विवाह में आ रही अड़चनें दूर होती हैं।
- मान्यता है कि पीला पुखराज पहनने से व्यक्ति की आर्थिक स्थिति में सुधार आता है। धन-संपत्ति बढ़ती है और समाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।
- ज्योतिष के अनुसार,पुखराज पहनने से व्यक्ति आध्यात्म की ओर जुड़ता है। धार्मिक कार्यों में मन लगता है और मानसिक शांति मिलती है। इसके अलावा इस रत्न के प्रभाव से जातक का बुद्धि-विवेक भी बढ़ता है।

क्या आप जानते हैं श्री राम के धनुष का नाम?

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के धनुष का नाम कोदंड था। यही कारण है कि भगवान राम को कोदंड नाम से भी जाना जाता था। कोदंड का अर्थ बांस से निर्मित होता है। माना जाता है कि भगवान श्री राम के पास 5.5 हाथ लंबा धनुष था।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के भक्त हमेशा प्रभु के बारे में जानना चाहते हैं। आपने भगवान राम के बारे में बहुत सी कथाओं में पड़ा भी होगा। हालांकि, आज हम आपको भगवान राम के बारे में नहीं बल्कि उनके धनुष के बारे में बताने वाले हैं। हर पड़ाव परश्री रामके साथ नजर आने वाले इस धनुष को चम्तकारी बताया जाता है।

क्या है श्री राम के धनुष का नाम

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के धनुष का नाम कोदंड था। यही कारण है कि भगवान राम को कोदंड नाम से भी जाना जाता था। कोदंड का अर्थ बांस से निर्मित होता है। माना जाता है कि भगवान श्री राम के पास 5.5 हाथ लंबा धनुष था। इस धनुष को देवता धनुष भी कहा जाता था क्योंकि इसे जब भी छोड़ा जाता था, वो कभी विफल नहीं होता था।

एक दफा भगवान राम ने पिनाक धनुष को तोड़ा भी था। दरअसल भगवान शिव के पास एक बहुत शक्तिशाली धनुष हुआ करता था। शिव पुराण में बताया गया है कि यह धनुष बहुत विशालकाय था इसलिए इसे कोई भी नहीं उठा पाता था, लेकिन भगवान राम ने इसे उठाकर तोड़ दिया था।

जानें कोदंड धनुष की खासियत

कोदंड धनुष से छोड़ा गया हमेशा लक्ष्य प्राप्त करता था। इसी धनुष की मदद से भगवान राम ने लंका जाने के लिए समुद्र पर तीर छोड़े और उसके पानी को सुखा दिया था। राक्षसों का वध करते वक्त भी इस धनुष बाण ने प्रभु राम की बहुत मदद की। इस चमत्कारी धनुष के नाम से भारत में एक मंदिर भी बना हुआ है।

रावण के धनुष का नाम भी जानें

पौराणिक कथाओं के मुताबिक रावण के पास भी एक धनुष था जिसका नाम पौलत्स्य था। ऐसा भी माना जाता है कि एक समय पर रावण ने भगवान शिव जी की आराधना कर उनसे पिनाक भी प्राप्त किया था, लेकिन रावण उसे धारण नहीं कर पाया था।

अगर हमारी स्टोरी से जुड़े आपके कुछ सवाल हैं, तो आप हमें आर्टिकल के नीचे दिए कमेंट बॉक्स में बताएं। हम आप तक सही जानकारी पहुंचाने का प्रयास करते रहेंगे। अगर आपको यह स्टोरी अच्छी लगी है, तो इसे शेयर जरूर करें। ऐसी ही अन्य स्टोरी पढ़ने के लिए जुड़े रहें हर जिंदगी के साथ।

प्रभु श्री राम का जन्म कैसे हुआ और राम के जन्म की अनोखी कथा?

अयोध्या के राजा दशरथ के बड़े पुत्र श्री राम थे। पुराणों में श्री राम के जन्म को लेकर मतभेद है। आखिर कब हुआ था श्री राम का जन्म। प्राचीन कथाओं के अनुसार । राम जी का जन्म चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी को हुआ था। इसी नवमी को राम नवमी के नाम से जाना जाता है। हिन्दू धर्म में राम नवमी को धूमधाम से मनाया जाता है।

भगवान राम सूर्यवंशी थे। भगवान राम का गोत्र विवस्वान है।भगवान राम बचपन से ही शांत स्वभाव के थे। उन्होंने मर्यादाओं को सबसे ऊंचा स्थान दिया। जिसके कारण उनका नाम मर्यादा पुरुषोत्तम राम पड़ा। प्रभु राम एक वीर पुरुष के रूप में जाने जाते हैं।

आइये जानते हैं। कैसे हुआ मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म? और भगवान राम के जन्म से जुड़ी अनकही कहानी।

श्री राम के जन्म से जुड़ी अनकही कहानी-

आइये जानते हैं। कैसे हुआ मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म? राजा दशरथ को पुत्र प्राप्त नहीं हो रहे थे। राजा दशरथ को गुरु वशिष्ठ ने ऋषि ऋंगा से अश्वमेध यज्ञ करने की सलाह दी। दशरथ ने पुत्र प्राप्ति की लिए ऋषि ऋंगा से यज्ञ करवाया। अश्वमेध यज्ञ में महान विद्वान और ऋषि मुनि शामिल हुए।

अश्वमेध यज्ञ प्रारम्भ हुआ। पूरा वातावरण मंत्र और सुगंध से महक रहा था। यज्ञ के दौरान एक तेजस्वी आकृति उत्पन्न हुई। उस आकृति ने देवताओं की तरफ से एक बर्तन दिया। उस बर्तन में खीर थी। राजा दशरथ ने इस खीर को अपनी तीनों रानियों को खिला दिया। खीर ग्रहण करने के परिणामस्वरूप से ही तीनों रानियों ने गर्भधारण कर लिया था।

इसके पश्चात चैत्र माह की रामनवमी को तीनों रानियों ने पुत्र को जन्म दिया। कौशल्या ने रामको जन्म दिया था। कैकेयी ने भरत को जन्म दिया।सुमित्रा ने लक्ष्मण और शत्रुघ्न को जन्म दिया था। पूरे अयोध्या राज्य में खुशी का माहौल था। चारों बालकों का नामकरण महर्षि वशिष्ठ ने किया था। ऐसे हुआ भगवान श्री राम का जन्म।

राम बचपन से ही वीर और प्रतिभावान थे। राम अपने से बड़ों और गुरु की सेवा में लगे रहते थे। अयोध्या की प्रजा राम को प्रेम करने लगी थी। प्रजा के प्रिय बन गए थे। यह श्री राम के जन्म से जुड़ी अनकही कहानी थी।

साल का पहला सूर्य ग्रहण इन राशियों के लिए रहेगा शुभ, धनवान बनने के बनेंगे योग

इस साल का पहला सूर्य ग्रहण 8 अप्रैल यानी चैत्र मास की अमावस्या के दिन लग रहा है। अमावस्या पर लगने वाला ग्रहण बहुत खास होगा। यह भारत में दिखाई नहीं देगा और न इसका सूतक काल माना जाएगा। जब सूर्य और पृथ्वी के बीच में चंद्रमा आ जाता है तो सूर्य की चमकीली सतह चंद्रमा के कारण नहीं देती है, इस वजह से सूर्य ढक जाता है इस स्थिति को सूर्य ग्रहण कहते हैं। सूर्य ग्रहण का बहुत अधिक ज्योतिषय और धार्मिक महत्व होता है। साल के पहले सूर्य ग्रहण का सभी 12 राशियों पर प्रभाव पड़ेगा। कुछ राशि वालों को शुभ तो कुछ राशि वालों को अशुभ फल की प्राप्ति होती है। आइए जानते हैं, साल के पहले सूर्य ग्रहण से किन राशि वालों के जीवन में होंगे सकारात्मक बदलाव-

मेष राशि-

शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए ये समय किसी वरदान से कम नहीं है।

शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे।

धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यों में शामिल होने का अवसर प्राप्त होगा।

स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

मान- सम्मान और पद- प्रतिष्ठा में वृद्धि के योग बन रहे हैं।

आर्थिक पक्ष मजबूत रहेगा।

मिथुन राशि-

नौकरी संबंधी शुभ समाचार मिल सकता है।

आय में वृद्धि से पैसों से संबंधी परेशानी दूर हो सकती है।

जीवनसाथी के साथ समय व्यतीत करेंगे, जिससे वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा।

शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए ये समय किसी वरदान से कम नहीं रहने वाला है।

इस दौरान निवेश करने से लाभ होगा।

स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

मंगल का उदय इन राशियों का करेगा भाग्योदय, खूब मनाएंगे जश्न, धन-संपदा में होगी वृद्धि

सिंह राशि-

रुका हुआ काम पूरा हो सकता है।

कार्यक्षेत्र में मान-सम्मान मिलेगा।

यात्रा से लाभ होने के योग बनेंगे।

आय में वृद्धि हो सकती है।

आपके द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की जाएगी।

कार्यों में सफलता मिलेगी।

नौकरी और व्यापार के लिए समय शुभ है।

सूर्य के महागोचर से कुंभ, मकर, मीन राशि वालों के जीवन में क्या पड़ेगा प्रभाव? पढ़ें विस्तृत राशिफल

कन्या राशि-

धन-लाभ होने के योग बन रहे हैं, जिससे आर्थिक पक्ष मजबूत होगा।

नौकरी और व्यापार में तरक्की के योग बन रहे हैं।

मेहनत करने से कार्यों में सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

परिवार के सदस्यों के साथ समय व्यतीत करें।

नया वाहन या मकान खरीद सकते हैं।

दांपत्य जीवन में सुख का अनुभव करेंगे।

शुभ परिणाम मिलेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए समय शुभ कहा जा सकता है।

18 जनवरी से शुरू होंगे इन राशियों के अच्छे दिन, मां लक्ष्मी करेंगी कृपा की बरसात

धनु राशि-

आर्थिक समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

मान- सम्मान और पद- प्रतिष्ठा में वृद्धि के योग बन रहे हैं।

धन- लाभ होगा।

धैर्य से काम लेने से सफलता अवश्य प्राप्त करेंगे।

कार्यक्षेत्र में सब आपकी तारीफ करेंगे।

व्यापार में लाभ होगा।

जीवनसाथी के साथ समय व्यतीत करें।

दानवता की शक्ति की प्रबलता को निर्बल व परास्त करने हेतु कूर्म अवतार

भगवान विष्णु के सभी अवतारों में अत्यंत प्रमुख कूर्म अवतार है। श्री विष्णु का यह दूसरा अवतार है। समुद्र मंथन के समय जब मंद्राचल पर्वत समुद्र में धसने लगा तो भगवान ने उसका भार अपने पीठ पर कूर्म बनकर धारण किया। प्रभु श्रीराम भी भगवान विष्णु के अवतार हैं। बहुत खुशी की बात है कि 22 जनवरी को कूर्म द्वादशी का व्रत है और प्रभु श्रीराम के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा 22 जनवरी को हो रही है। यह अद्भूत व विलक्षण दैवी संयोग है। कूर्म अवतार में भगवान कूर्म मंदराचल पर्वत का भार पीठ पर उठाये थे और संपूर्ण मानवता का भार प्रभु श्री राम के ही अपने कंधों पर टिका हैं। यह गहरी मनन-चिंतन का विषय है। धार्मिक मान्यता के अनुसार संपूर्ण धरती कूर्म के पीठ पर टिका है। कूर्म का शाब्दिक अर्थ कछुआ होता है। सभी अवतारों का प्रयोजन विशेष रहा है। अवतारों के पीछे भगवान विष्णु का संकल्प धर्म, सत्य, नीति, न्याय व सत्कर्म को स्थापित करना तथा अधर्म, अनीति, अन्याय, कुकर्म, अत्याचार, असत्य को नष्ट करना है। 22 जनवरी सोमवार के दिन कूर्म जयंती का पावन व्रत है। हिंदु धार्मिक मान्यता के अनुसार इसी तिथि को भगवान विष्णु ने कूर्म यानि कछुए का अवतार लिया था और मंदराचल पर्वत को अपनी पीठ पर धारण करके समुद्र मंथन में सहायता की थी। पौराणिक कथाओं के अनुसार इस अवतार में भगवान के कच्छप रूप के दर्शन होते हैं। कूर्म अवतार का संबंध समुद्र मंथन के प्रयोजन से ही हो पाया। धर्म ग्रंथों में निहित कथा है कि दैत्यराज बलि के शासन में असुर दैत्य व दानव बहुत शक्तिशाली हो गए थे और उन्हें दैत्यगुरू शुक्राचार्य की महाशक्ति भी प्राप्त थी। देवता उनका कुछ भी अहित न कर सके; क्योंकि एक बार अपने घमंड में चूर देवराज इन्द्र को किसी कारण से नाराज हो कर महर्षि दुर्वासा ने श्राप देकर श्रीहीन कर दिया था। जिस कारण इन्द्र शक्तिहीन हो गये थे। इस अवसर का लाभ उठाकर दैत्यराज बलि नें तीनों लोकों पर अपना राज्य स्थापित कर लिया और इन्द्र सहित सभी देवतागण भटकने लगे।

सभी देवता ब्रह्मा जी के पास जाकर प्रार्थना करते हैं कि वह उन्हें इस संकट से बाहर निकालें। तब ब्रह्मा जी संकट से मुक्ति के लिए देवताओं समेत भगवान विष्णु जी के समक्ष पहुँचते हैं और भगवान विष्णु को अपनी विपदा सुनाते हैं। देवगणों की विपदा सुनकर भगवान विष्णु उन्हें दैत्यों से मिलकर समुद्र मंथन करने के लिए सलाह देते हैं और बताते हैं कि क्षीरसागर को मथकर देवता उसमें से अमृत निकाल कर उस अमृत का पान कर लें और अमृत पीकर वह अमर हो जाएंगे तथा उनमें दैत्यों को मारने का सामर्थ्य आ जायेगा। भगवान विष्णु के आदेश के अनुसार इंद्र दैत्यों के साथ मिलकर समुद्र मंथन करने के लिए तैयार हो जाते हैं। समद्र मंथन करने के लिए मंदराचल पर्वत को मथानी एवं नागराज वासुकि को नेती बनाया जाता है। मंदराचल को उखाड़कर उसे समुद्र की ओर ले चले तथा जब मंदराचल पर्वत को समुद्र में डाला जाता है तो वह डूबने लगता है। तब भगवान श्री विष्णु कूर्म अर्थात कच्छप अवतार लेकर समुद्र में जाकर मंदराचल पर्वत को अपने पीठ पर रख लेते हैं। समस्त लोकपाल, दिक्पाल उनकी कूर्म आकृति में स्थित हो जाते हैं और भगवान कूर्म की विशाल पीठ पर मंदराचल तेजी से घुमने लगा तथा इस प्रकार समद्र मंथन संपन्न हो सका। शुक्ल पक्ष पौष द्वादशी के दिन भगवान विष्णु जी ने कूर्म का रूप धारण किया था। उसी तिथि को कूर्म जयंती के रूप मनाया जाता है। इस तिथि की शास्त्रों नें बहुत महता मानी गई है। इस दिन से निर्माण संबंधी कार्य शुरू किया जाना बेहद शुभ माना जाता है, क्योंकि योगमाया स्तम्भित शक्ति के साथ कूर्म में निवास करती है। कूर्म जयंती के अवसर पर वास्तुदोष दूर किए जा सकते हैं, नया घर, भूमि आदि के पूजन के लिए यह सबसे उतम समय होता है तथा बुरे वास्तु को शुभ में बदला जा सकता है।

■ मुकेश ऋषि

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

कांग्रेस की दूरी को प्रमोद कृष्णम ने बताया दुर्भाग्यपूर्ण

नईदिल्ली। कांग्रेस नेता आचार्य प्रमोद कृष्णम ने राम मंदिर के अभिषेक के निमंत्रण को अस्वीकार करने वाले विपक्षी नेताओं पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि भगवान राम भारत की आत्मा हैं और इस कार्यक्रम में शामिल नहीं होने का निर्णय दुर्भाग्यपूर्ण था। आचार्य प्रमोद ने कहा, यह दुर्भाग्यपूर्ण है। कोई ईसाई या पुजारी या मुस्लिम भी भगवान राम के निमंत्रण को अस्वीकार नहीं कर सकता। राम भारत की आत्मा हैं। राम के बिना भारत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आचार्य प्रमोद कृष्णम ने कहा कि निमंत्रण को अस्वीकार करना भारत की सभ्यता और संस्कृति का अपमान करना है। इसका मतलब है भारत के गौरव और अस्तित्व को चुनौती देना। उन्होंने कहा कि मैं सभी विपक्षी दलों से आग्रह करना चाहूंगा कि भाजपा से लड़ें लेकिन राम से नहीं। बीजेपी से लड़ो लेकिन सनातन से नहीं। बीजेपी से लड़ें लेकिन भारत से नहीं। पार्टी ने इस समारोह को धार्मिक के बजाय आरएसएस/भाजपा कार्यक्रम बताया।

जो मर्यादा का मान करता है उसके हृदय में बसते हैं राम

लखनऊ। अयोध्या में सोमवार को होने जा रहे प्रभु श्री रामलला के नूतन विग्रह के प्राण-प्रतिष्ठा समारोह के बीच समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि सियाराम उस पावन हृदय में बसते हैं, जो रीति-नीति-मर्यादा का मान करता है। सपा प्रमुख यादव ने सोमवार को सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर अपने संदेश में कहा, ''उस पावन हृदय में बसते हैं 'सियाराम', जो करता रीति-नीति-मर्यादा का मान।'' इसी पोस्ट में यादव ने एक वीडियो भी साझा किया जिसमें जय श्री राम के नारों से गूंजती प्रभु की झांकी है। अखिलेश यादव ने 13 जनवरी को सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर चंपत राय को लिखे एक पत्र को साझा करते हुए कहा था कि वह अयोध्या में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के बाद सपरिवार दर्शनार्थी बनकर अवश्य जाएंगे। इस पत्र में सपा प्रमुख ने कहा था, ''हम प्राण प्रतिष्ठा समारोह के पश्चात सपरिवार दर्शनार्थी बनकर अवश्य आएंगे।

मोदी सौभाग्यशाली हैं उन्हें प्राण प्रतिष्ठा का अवसर मिला

अयोध्या। पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा आज अयोध्या में हो रहे रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल हुए। इस मौके पर जेडीएस प्रमुख देवेगौड़ा ने कहा वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बेहद सौभाग्यशाली मानते हैं कि उन्हें आज रामलला के प्राण प्रतिष्ठा का पावन अवसर मिला है। पूर्व पीएम देवेगौड़ा ने राम मंदिर समारोह के प्रति अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि वो इस कार्यक्रम में आमंत्रित करने के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को धन्यवाद देते हैं। उन्होंने कहा, आज अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का अनमोल दिन है। मैं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री का आभारी हूं, जिन्होंने मुझे और मेरी पत्नी को इस पवित्र कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया है। यह आज एक ऐतिहासिक कार्यक्रम है। हमारा दृढ़ विश्वास है भगवान राम में, जिन्हें हम पुरुषोत्तम कहते हैं। मैं प्रधानमंत्री मोदी को भी धन्यवाद देना चाहता हूं, जो रामलला की पवित्र पूजा किए।

तमिलनाडु में आध्यात्मिक दमन कर रही डीएमके सरकार

चेन्नई। तमिलनाडु के राज्यपाल आर.एन. रवि ने सोमवार को आरोप लगाया कि पूरा देश अयोध्या में राम लला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह का जश्न मना रहा है जबकि यहां राज्य सरकार के नियंत्रण में एक श्रीराम मंदिर के पुजारियों और कर्मचारियों को दमन का सामना करना पड़ रहा है। भाजपा ने द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) सरकार पर प्राण प्रतिष्ठा संबंधी समारोहों के सार्वजनिक प्रसारण पर प्रतिबंध लगाने का आरोप लगाया है। इसकी पृष्ठभूमि में रवि ने यहां एक मंदिर की अपनी यात्रा का जिक्र करते हुए भाजपा के आरोप का समर्थन किया। राज्यपाल ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, सोमवार सुबह मैंने चेन्नई के पश्चिम माम्बलम में स्थित श्री कोडंडारामस्वामी मंदिर में दर्शन किये और जन कल्याण के लिए प्रभु श्री राम से प्रार्थना की। यह मंदिर राज्य सरकार के हिंदू धार्मिक और धर्मार्थ बंदोबस्ती विभाग के अधीन है। उन्होंने आरोप लगाया, पुजारियों और मंदिर के कर्मचारियों के चेहरे पर भय और आशंकाओं के भाव स्पष्ट रूप से देखे जा सकते थे।

आपत्ति के बाद भी जारी है सिद्धू की ताबड़तोड़ रैलियां

चंडीगढ़। पंजाब कांग्रेस के भीतर संकट और गहरा गया जब पार्टी ने पूर्व विधायक महेशिंदर सिंह और उनके बेटे धर्मपाल को पार्टी के वरिष्ठ नेता नवजोत सिंह सिद्धू के लिए मोगा में एक रैली आयोजित करने के कुछ घंटों बाद पार्टी विरोधी गतिविधियों के लिए नोटिस जारी किया। इस बीच, मोगा में एक और समानांतर रैली को संबोधित करते हुए, सिद्धू ने सीएम भगवंत मान को पंजाब के मुद्दों पर उनके साथ खुली बहस करने की चुनौती दी। सिद्धू ने कहा कि पंजाब में इस समय भ्रष्ट नेताओं का शासन है। मोगा में अपने संबोधन में सिद्धू ने कहा कि अब समय आ गया है जब दहाड़ते शेरों वाली कांग्रेस को खड़ा करना होगा। उन्होंने कहा कि हमें एक ईमानदार कांग्रेस खड़ी करनी हैज मैं कोई लुढ़कता हुआ पत्थर नहीं हूं जिस पर मान आकर चुटकुले सुना सकें। सिद्धू एक सच्चे सिख हैं...सिद्धू एक कांग्रेसी थे, वह एक कांग्रेसी हैं और एक कांग्रेसी ही मरेंगे।

प्रधानमंत्री मोदी बोले-आज का दिन एक नए कालचक्र का उद्गम है

दिग्विजय नाथ, योगी आदित्यनाथ, गोरखनाथ

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के योगी आदित्यनाथ ने अयोध्या में राम लला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा के बाद कहा कि राम मंदिर वहीं बनाएंगे का संकल्प पूरा हो गया है। योगी आदित्यनाथ ने हाल ही में कहा था कि वह राम मंदिर आंदोलन के कारण संन्यासी बने हैं। वास्तव में उनका मंदिर आंदोलन से एक पीढ़ीगत संबंध है। गोरखपुर में गोरखनाथ धाम, जिसके वर्तमान महंत योगी आदित्यनाथ हैं। 75 वर्षों से अधिक समय से राम मंदिर आंदोलन से सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ था। योगी आदित्यनाथ का संबंध पुरानी राम लला की मूर्ति से है जो 1949 में विवादित बाबरी मस्जिद में प्रकट हुई थी। योगी आदित्यनाथ ने एक्स पर लिखा कि पीढ़ियों का संघर्ष और सदियों का संकल्प आज श्री अयोध्या धाम में श्री राम की जन्मस्थली पर भगवान श्री रामलला की नई मूर्ति के अभिषेक के साथ पूरा हो गया है। अपने गुरुओं और मंदिर आंदोलन में उनके योगदान को नमन करते हुए योगी ने लिखा कि इस अवसर पर युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज को भावभीनी श्रद्धांजलि है।

गोरखनाथ मठ का राम मंदिर से संबंध स्वतंत्रता-पूर्व के दिनों में स्थापित हुआ था, जब तत्कालीन महंत दिग्विजयनाथ हिंदू महासभा में शामिल हो गए और अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण के पैरोकार बन गए।

उन्हें उपदेशों और सभाओं के माध्यम से सभी जातियों और वर्गों के हिंदुओं को एकजुट करने का श्रेय भी दिया जाता है। मंदिर आंदोलन को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने 1948 में बलरामपुर के राजा पाटेश्वरी प्रसाद सिंह के साथ अखिल भारतीय राम राज्य परिषद पार्टी की स्थापना की। महंत दिग्विजयनाथ ही वह व्यक्ति थे जिन्होंने 22-23 दिसंबर, 1949 को रामलला की मूर्ति के प्रकट होने से नौ दिन पहले अखंड रामायण का पाठ शुरू किया था। वह उन कुछ लोगों में से एक थे जिन्होंने राम लल्ला की मूर्ति को रहस्यमय तरीके से प्रकट देखा था। उन्होंने स्थानीय लोगों से श्री राम जन्मभूमि से मूर्ति हटाने के

प्रशासन के आदेश के खिलाफ मूर्ति की पूजा शुरू करने को कहा। रामलला की उपस्थिति ने घटनाओं की एक श्रृंखला शुरू की जिसने आने वाले दशकों के लिए आंदोलन को आकार दिया। जिस आंदोलन की नींव महंत दिग्विजयनाथ ने रखी थी, उसे 1969 में दिग्विजयनाथ के निधन के बाद उनके उत्तराधिकारी महंत अवैद्यनाथ ने आगे बढ़ाया। महंत दिग्विजयनाथ को वर्तमान मठ प्रमुख योगी आदित्यनाथ का गुरु दादा माना जाता है। वह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं और राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिए अयोध्या में मौजूद थे।

महंत दिग्विजयनाथ के निधन के बाद, महंत अवैद्यनाथ ने यह पद संभाला, जो राम मंदिर आंदोलन को बढ़ाने और इसे जन-जन तक ले जाने में एक कदम आगे बढ़े। महंत अवैद्यनाथ को 1984 में सर्वसम्मति से नव स्थापित श्री राम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति का अध्यक्ष नामित किया गया था। समिति ने विभिन्न हिंदू संगठनों और साधुओं को एक छत के नीचे एकजुट करने की मांग की। सितंबर 1984 में उन्होंने राम मंदिर को %मुक्त% कराने के उद्देश्य से बिहार के सीतामढी से यूपी के अयोध्या तक एक धार्मिक जुलूस शुरू किया। सीतामढी को देवी सीता का मायका माना जाता है।

गोरखपुर से चार बार लोकसभा के लिए चुने गए महंत अवैद्यनाथ के नेतृत्व में चले आंदोलन ने देश के सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित किया। श्री राम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के बैनर तले महंत अवैद्यनाथ ने अपने हजारों सदस्यों के साथ, औपचारिक रूप से उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी को राम जन्मभूमि पर राम मंदिर के लिए एक औपचारिक मांग पत्र प्रस्तुत किया, जिससे राज्य सरकार असहज बनी। महंत अवैद्यनाथ के नेतृत्व ने 9 नवंबर, 1989 को राम मंदिर के शिलान्यास समारोह की घोषणा करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसके लिए केंद्रीय गृह मंत्रालय की चिंताओं को दरकिनार करते हुए, वह शिलान्यास करने के लिए आगे बढ़े और इसे राष्ट्रीय सम्मान और हिंदू आस्था के लिए आंदोलन से जोड़ा।

एक बार फिर उन्हीं के मार्गदर्शन में नींव की प्रतीकात्मक खुदाई की गई और पहला पत्थर एक दलित कामेश्वर प्रसाद चौपाल द्वारा रखा गया। बाद के वर्षों में अथक प्रयास हुए, जिसमें 1990 में %कारसेवा% भी शामिल थी, जिसके दौरान भक्तों ने इस उद्देश्य के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया। 1990 में पुलिस गोलीबारी में कारसेवकों की हत्या के बावजूद, अवैद्यनाथ ने आंदोलन जारी रखा और बच्चा बच्चा राम का नारे के साथ युवाओं को एकजुट किया।

1996 में महंत अवैद्यनाथ ने योगी आदित्यनाथ को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। योगी आदित्यनाथ 1998 में गोरखपुर से संसद सदस्य के रूप में चुने गए, जिस सीट से उनके गुरु अवैद्यनाथ ने पहले जीत हासिल की थी, और 2017 में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। योगी आदित्यनाथ विश्व हिंदू महासम्मेलन और 2002 में हिंदू युवा वाहिनी के गठन में शामिल थे। इस तरह योगी आदित्यनाथ अपने गुरु पिता अवैद्यनाथ से मंदिर आंदोलन के उत्तराधिकारी बने। 1949 की रामलला की मूर्ति से उनका रिश्ता अपने गुरु दादा दिग्विजयनाथ की वजह से भी है।

मुझे आज मंदिर जाने से रोका जा रहा : राहुल

बोले- मैंने क्या अपराध किया है?

गुवाहाटी। भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान राहुल गांधी असम में मौजूद हैं। सोमवार को मीडिया से बात करते हुए उन्होंने आरोप लगाए कि उन्हें आज मंदिर जाने से रोका जा रहा है। राहुल गांधी ने कहा कि पहले उन्हें मंदिर जाने की अनुमति दी गई थी, लेकिन आज मना किया जा रहा है।

राहुल गांधी के नेतृत्व में निकाली जा रही है भारत जोड़ो न्याय यात्रा असम के नागांव जिले में पहुंची हुई है। यहां बताद्रवा थान इलाके में वैष्णव संत श्रीमंत शंकरदेव की जन्मस्थली है। राहुल गांधी को कार्यक्रम के तहत आज शंकरदेव के मंदिर जाना था, लेकिन अब राहुल गांधी ने मीडिया से बात करते हुए आरोप लगाया है कि उन्हें आज मंदिर जाने से रोका जा रहा है। राहुल गांधी ने कहा कि हम मंदिर जाना चाहते हैं। मैंने क्या अपराध किया है जो मैं मंदिर नहीं जा सकता?

गौरतलब है कि मंदिर की प्रबंध समिति ने राहुल गांधी को सोमवार को दोपहर तीन बजे के बाद आने की जानकारी रविवार को ही दे दी थी। प्रबंध समिति के प्रमुख जोगेंद्र देव महंत ने बताया कि %राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के अवसर पर कई संगठनों ने मंदिर परिसर में भक्ति कार्यक्रमों के आयोजन की योजना बनाई है। इस अवसर पर बड़ी संख्या में लोग मंदिर आएंगे, ऐसे में राहुल गांधी को दोपहर तीन बजे के बाद मंदिर आने को कहा गया है। राहुल गांधी ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि आज सिर्फ एक व्यक्ति मंदिर में जा सकते हैं..।

कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा कि राहुल गांधी मंदिर (बताद्रवा मंदिर) जाना चाहते थे..हम 11 जनवरी से इसकी कोशिश कर रहे हैं। हमारे दो विधायकों ने मंदिर समिति से मुलाकात भी की थी। हमने उन्हें बताया था कि हम 22 जनवरी को सुबह 7 बजे आएंगे, लेकिन कल हमें अचानक बताया गया कि तीन बजे के बाद आएं। यह राज्य सरकार के दबाव में हो रहा है। हम मंदिर जाने की कोशिश

करेंगे, लेकिन तीन बजे के बाद जाना मुश्किल हो जाएगा क्योंकि हमें आगे भी दूरी तय करनी है।

कानून-व्यवस्था के दौरान सभी जा सकते हैं सिर्फ मैं नहीं

नागांव। भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान कांग्रेस नेता राहुल गांधी असम में मौजूद हैं। सोमवार को मीडिया से बात करते हुए उन्होंने आरोप लगाए कि उन्हें आज मंदिर जाने से रोका जा रहा है। राहुल गांधी ने कहा कि पहले उन्हें मंदिर जाने की अनुमति दी गई थी, लेकिन आज मना किया जा रहा है। राहुल गांधी के नेतृत्व में निकाली जा रही भारत जोड़ो न्याय यात्रा असम के नागांव जिले में पहुंची हुई है। यहां बताद्रवा थान इलाके में वैष्णव संत श्रीमंत शंकरदेव की जन्मस्थली है। राहुल गांधी को कार्यक्रम के तहत आज शंकरदेव के मंदिर जाना था, लेकिन अब राहुल गांधी ने आरोप लगाया है कि उन्हें आज मंदिर जाने से रोका जा रहा है। कांग्रेस नेता ने कहा, कानून-व्यवस्था के संकट के बीच सभी वैष्णव संत श्रीमंत शंकरदेव के जन्म स्थान पर जा सकते हैं, लेकिन केवल राहुल गांधी नहीं जा सकता। आज राहुल गांधी असम के वैष्णव विद्वान श्रीमंत शंकरदेव के जन्मस्थान पर पूजा-अर्चना करने के लिए जाने वाले थे, लेकिन जैसे ही वे वहां पहुंचे उन्हें मंदिर जाने से रोक दिया गया। इसके बाद क्या था राहुल गांधी ने वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं और समर्थकों के साथ धरना देने लगे।

खेल
प्रमुख समाचार

आईपीएल 2024 का 22 मार्च को होगा आगाज

नईदिल्ली। आईपीएल के 17वें सीजन की शुरुआत कब होगी इसका पता चल गया है। दरअसल, आईपीएल फैंस के लिए अच्छी खबर है कि, आईपीएल 2024 का आगाज 22 मार्च से होगा जबकि लोकसभा चुनाव और टी20 वर्ल्ड कप 2024 के कारण मई के आखिरी सप्ताह में खत्म होगा।

क्रिकबज की रिपोर्ट के अनुसार, आईपीएल 2024 की शुरुआत 22 मार्च से होगी, जबकि टूर्नामेंट का फाइनल मुकाबला 26 मई को खेला जाएगा। वहीं महिला प्रीमियर लीग की बात करें तो टूर्नामेंट 22 फरवरी से 17 मार्च तक खेला जाएगा। टी20 वर्ल्ड कप 2024 से कुछ ही दिन पहले तक आईपीएल चलेगा, लेकिन अच्छी बात ये है कि भारत के मैच 5 जून से शुरू होंगे।

डब्ल्यूपीएल 2024 के लिए बेंगलुरु और दिल्ली को फाइनल किया गया है। लेकिन आईपीएळ 2024 के लिए अभी कुछ भी तय नहीं है। आधिकारिक रूप से आईपीएल 2024 के ओपनिंग मैच और फाइनल मैच की डेट एक दो दिन में सामने आएगी। आईपीएल के शेड्यूल को लोकसभा चुनावों के शेड्यूल के बाद जारी किया जाएगा। जिस-जिस शहर में आईपीएल के मैच होंगे, उसके आस-पास चुनाव नहीं होने चाहिए। जिस कारण ऐसा शेड्यूल बोर्ड तेयार करेगा।

बोर्ड का अधिकांश क्रिकेट बोर्डों से आश्वासन मिल चुका है। उनके खिलाड़ी फाइनल तक उपलब्ध होंगे। हालांकि, ये देखते हुए टी20 वर्ल्ड कप 1 जून से शुरू हो रहा है, कुछ खिलाड़ियों के जल्दी जाने से इनकार नहीं किया जा सकता है। लेकिन इस स्तर पर, बीसीसीआई की पहली और सबसे बड़ी चिंता शेड्यूल को आम चुनावों के साथ संरेखित करना और लीग को भारत में सुसफल आयोजित करना होगा।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

बाजार में राम नाम की धूम, एक लाख करोड़ रुपये का कारोबार

लखनऊ। अयोध्या के राम मंदिर में हुए प्राण प्रतिष्ठा समारोह से मार्केट में राम नाम के उत्पादों का जबरदस्त बूम देखने को मिला। इस वजह से देशभर के बाजारों में जमकर कारोबार हुआ। महज 480 घंटे में एक लाख करोड़ रुपये का कारोबार हो गया। केवल बड़े ही नहीं, बल्कि छोटे कामगारों की दीपावली मन गई। छोटे कामगारों को खूब काम मिला है। कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीण खंडेलवाल का कहना है कि अयोध्या में आयोजित रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के दिन तक देश में जो कारोबार हुआ है, वह एक लाख करोड़ रुपये के आंकड़े से पार हो चुका है। हालांकि कैट की राष्ट्रीय कोर कमेटी की तीन जनवरी को नागपुर में हुई बैठक में यह अनुमान लगाया गया था कि प्राण प्रतिष्ठा समारोह से पहले देश में 50 हजार करोड़ रुपये का कारोबार होगा।

सोनी ने जी एंटरटेनमेंट के साथ रद्द किया मर्जर का समझौता

नईदिल्ली। कल्वर मैक्स एंटरटेनमेंट ने ज़ी एंटरटेनमेंट के साथ विलय समझौते को समाप्त कर दिया है। इस समझौते से देश में 10 अरब अमेरिकी डॉलर का मीडिया उद्यम बन खड़ा होने की उम्मीद थी। कल्वर मैक्स एंटरटेनमेंट को पहले सोनी पिक्चर्स नेटवर्क्स इंडिया (एसपीएनआई) के नाम से जाना जाता था। सोनी ग्रुप कॉर्पोरेशन ने एक बयान में कहा, '' सोनी ग्रुप कॉर्पोरेशन की पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनी एसपीएनआई ने आज एक नोटिस जारी कर एसपीएनआई और ज़ी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज लिमिटेड द्वारा जेडईईल के एसपीएनआई में विलय से संबंधित निश्चित समझौतों को समाप्त कर दिया है, जिसकी घोषणा 22 दिसंबर 2021 को गई थी। '' समझौते के तहत विलय 21 दिसंबर 2023 से पहले पूरा किया जाना था।

शेयर बाजार से एफआईआई ने 3 दिन में निकाले 24 हजार करोड़

नई दिल्ली। भारतीय शेयर बाजार से विदेशी संस्थागत निवेशकों ने तीन दिन (17-19 जनवरी) में 24,000 करोड़ रुपये की निकासी की है। हालांकि, पूरे जनवरी महीने में 13,000 करोड़ रुपये की निकासी की है। इससे पहले इन निवेशकों ने दिसंबर में 66,134 करोड़ और नवंबर में 9,000 करोड़ के शेयरों की खरीदी की थी। इन निवेशकों ने डेट में जनवरी में 15,647 करोड़ रुपये का निवेश किया है। दिसंबर में डेट में 18,302 करोड़ व नवंबर में 14,860 करोड़ निवेश किया था। डेट मे इसलिए निवेश बढ़ रहा है क्योंकि जेपी मॉर्गन जून से अपने बेंचमार्क में भारतीय बॉन्ड को शामिल करेगा। एफआईआई ने भारत के अलावा अन्य उभरते देशों ताइवान, दक्षिण कोरिया और हॉन्गकॉन्ग के बाजारों से भी निकासी की है। अमेरिकी बॉन्ड की ब्याज दर में वृद्धि से एफआईआई ने बाजारों से पैसे निकाले हैं।

राम मंदिर उद्घाटन से पहले ही बढ़ा कारोबार

नई दिल्ली। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के चलते अयोध्या में कारोबारी गतिविधियों में जबरदस्त तेजी है। यहां हवाईअड्डे पर निजी जेट विमानों से पार्किंग पूरी तरह भर गई है। साथ ही स्थानीय दुकानों में सोने के परत वाली मूर्तियां भी खत्म हो चुकी हैं। इनकी इतनी मांग है कि आस-पास के भी बाजारों में यह नहीं मिल रही हैं। भारतीय लग्जरी चार्टर सेवा क्लब वन एयर के सीईओ राजन मेहरा ने कहा, इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया जाना एक स्टेटस सिंबल बन गया है। उनके सारे जेट अयोध्या की यात्रा के लिए बुक हो चुके हैं। अधिकारियों का अनुमान है कि 22 जनवरी को 100 निजी जेट अयोध्या हवाईअड्डे पर उतरेंगे। जानकारों का अनुमान है कि फाल्कन 2000 जेट पर नौ यात्रियों के साथ मुंबई-गोरखपुर वापसी उड़ान का किराया लगभग 61 लाख रुपये हो सकता है।

चुनावी वर्ष में आर्थिक चुनौतियां, कृषि विकास दर हो सकती है सिरदर्दी का सबब

पीएस वोहरा

लोकसभा चुनाव से पहले मोदी सरकार लेखानुदान बजट पेश करने वाली है। मोदी सरकार-2 का यह कार्यकाल आर्थिक मोर्चे पर चुनौतियों भरा रहा है। सबसे बड़ी चुनौती थी कोरोना महामारी और फिर दूसरी चुनौती घरेलू बाजार में महंगाई का उच्चतम स्तर पर बने रहना था। लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था ने न केवल हर मोर्चे पर तरक्की की, बल्कि जीडीपी के मामले में यह दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरी।

चालू वित्तीय वर्ष 23-24 की पहली दो तिमाहियों को मद्देनजर रखते हुए 7.7 प्रतिशत की औसत विकास दर हासिल करना भी बड़ी आर्थिक सफलता है। उम्मीद की जा रही है कि संपूर्ण वित्तीय वर्ष के लिए विकास की दर सात प्रतिशत रहने का अनुमान है। इसकी मुख्य वजह एक ओर जहां घरेलू स्तर पर लगातार प्रति व्यक्ति बेहतर क्रय क्षमता है, तो दूसरी ओर बुनियादी ढांचों के विकास पर सरकार द्वारा ज्यादा खर्च है।

पिछले वित्तीय बजट में केंद्र सरकार ने 10 लाख करोड़ रुपये का बजट पूंजीगत खर्चों के लिए रखा था, जिसने अर्थव्यवस्था की विकास दर को गति दी। भारतीय कंपनियों की वित्तीय हालत भी बहुत अच्छी है तथा लाभदायकता का प्रतिशत सभी कंपनियों में दोहरे अंकों में पाया जा रहा है। इसका मुख्य कारण लागत नियंत्रण है। इससे आने वाले समय में निजी निवेश के और बढ़ने की संभावनाएं हैं। बैंकिंग सेक्टर में भी पिछले वर्ष जुलाई में 10 वर्षों के बाद एनपीए सबसे कम रहा था। चालू वित्तीय घाटा इस वर्ष जीडीपी का 1.6 से 1.7 प्रतिशत रहने की संभावना है। भारत जैसी अर्थव्यवस्था के लिए इसका दो प्रतिशत से कम रहना अच्छे विकास का सूचक है। इस वर्ष कच्चे तेल के आयात की

मात्रा पिछले वर्ष की तुलना में काफी बढ़ी है, परंतु उसका चालू वित्तीय घाटे पर बहुत अधिक प्रभाव नहीं पड़ा है, क्योंकि भारत ने रूस से भारतीय रुपये में कच्चा तेल खरीदा। वैश्विक स्तर पर चालू वित्तीय वर्ष काफी उथल-पुथल भरा रहा, जिसकी शुरुआत अमेरिका में बैंकिग प्रणाली की विफलता से हुई। चीनी अर्थव्यवस्था में मंदी बने रहना, सभी बड़ी विकसित अर्थव्यवस्थाओं में उनके केंद्रीय बैंकों द्वारा लगातार ब्याज दरों को बढ़ाना आदि हमेशा चर्चाओं में रहा। इन सबके बावजूद भारतीय पूंजी बाजार में विदेशी पूंजी निवेशकों की लगातार अच्छी वित्तीय तरलता बनी रही। घरेलू निवेशकों का भी शेयर बाजार में लगातार अच्छा निवेश बना रहा है, जिसके चलते ही शेयर बाजार रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गया है। सभी बड़ी आर्थिक संस्थाओं ने वर्ष 2024-25 के लिए वैश्विक आर्थिक विकास की दर को कम अनुमानित किया है। आईएमएफ के मुताबिक वर्ष 2024-25 में वैश्विक विकास दर 2.9 प्रतिशत रहने की संभावना है, जो कि वर्ष 2023 में तीन प्रतिशत थी। विभिन्न विशेषज्ञों के अनुसार, भारत में विकास दर 6.3 से 6.5 प्रतिशत के बीच रहने का अनुमान है। विकसित अर्थव्यवस्थाओं की विकास दर के कम रहने से भारत के निर्यातों को धक्का लगने की आशंका ज्यादा है। हालांकि सभी बड़े विकसित देशों के केंद्रीय बैंकों ने ब्याज की दरों में कमी करने का संकेत देना शुरू कर दिया है, परंतु वित्तीय वर्ष 2024 की दूसरी तिमाही में ही ऐसा हो सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा भी आगामी दिवाली से पहले ब्याज दरों में कटौती की संभावना नहीं है।

वित्तीय वर्ष 2024-25 में नई सरकार के लिए घरेलू स्तर पर सबसे बड़ी चुनौती कृषि क्षेत्र की विकास दर बढ़ाना तथा महंगाई दर को नियंत्रित करना रहेगा। चालू वित्तीय वर्ष में चावल तथा गेहूं का उत्पादन अनुमान से कम हुआ है। इसके अलावा, खुले बाजार में गेहूं की लागत को नियंत्रित रखने के लिए सरकार अपने बफर स्टॉक का उपयोग कर रही है, जिसके चलते सात सालों में पहली बार बफर स्टॉक अपने अनुमानित आंकड़े से नीचे आ गया है। ऐसे में मई माह तक भारत को अपने गेहूं के बफर स्टॉक के लिए आयात करना पड़ेगा। पिछले वर्ष खाद्य पदार्थों की महंगाई के चलते ग्रामीण क्रय क्षमता काफी प्रभावित हुई। कृषि क्षेत्र की विकास दर को बढ़ाना भी सरकार के लिए बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य रहेगा।

मुख्यमंत्री ने 'पहुना' में दीप प्रज्जवलित कर भगवान श्रीराम की पूजा-अर्चना की

रायपुर। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि में नवनिर्मित भव्य मंदिर में प्रभु श्री रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर आज मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने अपने निवास कार्यालय 'पहुना' में भगवान श्रीराम के चित्र पर दीप प्रज्जवलित कर उनकी पूजा-अर्चना की। निवास परिसर में जगह-जगह बच्चों ने भगवान श्रीराम को समर्पित आकर्षक रंगोलियां भी बनाई है। इस मौके पर भगवान श्रीराम के बाल रूप की वेशभूषा में 5 वर्षीय बालक तक्षिल त्रिपाठी की मौजूदगी ने सभी का मन मोह लिया। मुख्यमंत्री ने भगवान श्रीराम का रूप धारण किए बालक को श्रद्धापूर्वक प्रणाम कर और लड्डू खिलाकर उनका अपने अधिकारिक निवास में स्वागत किया। गौरतलब है कि अयोध्या में आज भगवान श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की गई है और इस शुभ अवसर पर मुख्यमंत्री निवास पहुना को दीयों, फूलों और रंग-बिरंगी झालरों से सजाया गया है। दीयों से सुसज्जित जगमगाता परिसर राममय हो गया है। पहुना में भी भगवान श्री रामलला के प्राण प्रतिष्ठा का यह उत्सव दीपावली की तरह मनाया जा रहा है।

भक्ति में डूबे मंत्री ओपी चौधरी घर में अपनी मां के साथ दीप जलाकर मनाएं उत्सव

श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या नगरी में 500 वर्षों के बाद आज रामलला पधारे हैं. इस अवसर पर पूरा देश राममय हो गया है और हर जगह दिवाली जैसा माहौल है. रामभक्त दीप जलाकर और फटाके पटाखे उत्सव मना रहे हैं. रामलला की प्राण प्रतिष्ठा) को लेकर हर मंदिर में पूजा अर्चना भी की गई. वहीं छत्तीसगढ़ के वित्त मंत्री ओपी चौधरी भी राम भक्ति में डूबे हुए नजर आए. उन्होंने अपने गृह ग्राम में दीप जलाकर दिवाली मनाया.

श्री रामलला के अयोध्या में विराजने से पूरे देश में दीपावली जैसा माहौल: शर्मा

रायपुर. श्री रामलला के अयोध्या में विराजने से पूरे देश में खुशी का माहौल है। उनके ननिहाल छत्तीसगढ़ में भी दीपावली जैसा नजारा दिख रहा है। पूरे प्रदेश में रामोत्सव के साथ ही जगह-जगह शोभायात्रा, भण्डारा, मानस गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा आज यहां कर्वधा जिला मुख्यालय सहित अनेक गांव में श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा समारोह के मौके पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में शामिल हुए और शहर के मंदिरो में पूजा-अर्चना कर प्रदेश की जनता के सुख समृद्धि की कामना की। उन्होंने ग्राम बारदी में

सामुदायिक भवन निर्माण के लिए 5 लाख एवं शौचालय निर्माण के लिए 3 लाख रूपए की घोषणा की और गांवों में अन्य विकास कार्यो की स्वीकृति के लिए आश्वासन दिया।

इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों को संबोधित करते हुए उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा ने कहा कि आज अयोध्या में प्रभु श्री राम के प्राण प्रतिष्ठा पर पूरा भारत राममय हो गया है। आज देश भर में सभी जगह दीप उत्सव भी मनाया जा रहा है। मंदिरों और सार्वजनिक स्थानों में प्राण प्रतिष्ठा समारोह के सीधे प्रसारण की व्यवस्था से श्रद्धालु से जुड़े रहे और अयोध्या में रामलला के विराजने के साक्षी बने हैं। उन्होंने कहा कि आज प्रभु श्री राम 500 साल बाद अपने घर मे विराजित हो रहे है। आज पूरा देश दीवाली मना रहा है। उन्होंने कहा कि भगवान श्री राम भारतीय जन चेतना के प्रतिमूर्ति है। इस दिन के लिए हमारे पूर्वजों ने प्रतीक्षा की थी। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ प्रभु श्री राम का ननिहाल है। हमारे भाँचा भगवान राम को उनका दिव्य और भव्य मंदिर मिला है। हम सब इस उत्सव में भागीदारी देकर खुशियां मना रहे है। उन्होंने इस मौके पर सभी नागरिकों को अयोध्या में रामलला के विराजने की बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा ने ग्राम आछी के मनकुंन्ना नदी तट के समीप नवदुर्गा मंदिर पहुँचकर पूजा-अर्चना कर आशीर्वाद लिया। इसके पहले मनकुंन्ना नदी की पूजा-अर्चना भी की। जिले के विभिन्न ग्रामों में आयोजित रामकथा, अखण्ड रामायण कथा एवं मानस गायन कार्यक्रम में शामिल हुए। उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ग्राम बारदी, ग्राम सेमो में आयोजित रामकथा, अखण्ड रामायण कथा एवं मानस गायन तथा ग्राम बैजलपुर के मड़ई मेला में शामिल हुए।

बृजमोहन अग्रवाल समेत हजारों भक्तों ने ''श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा'' का देखा लाइव प्रसारण

मठपारा के दूधाधारी मठ में आज ''श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम'' का आयोजन किया गया, जहाँ संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल ने जिला प्रशासन के अधिकारी-कर्मचारियों एवं दूर-दूर से रामलला के दर्शन करने आये हजारों भक्तजनों के साथ ''अयोध्या'' में ''राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा'' का लाइव प्रसारण देखा। कार्यक्रम में लगातार ''जय श्री राम'' का उद्घोष होता रहा और अपार जनसमूह ने राममय वातावरण में हर्ष उल्लास के भावावेश में नम आँखों से श्री रामलला को अपने अयोध्या के मंदिर में प्रतिष्ठित होते देखा और नमन किया। अपार जनसमूह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ ''श्री राम'' की पूजा में शामिल हुआ। कभी हजारों हाथों ने जुड़कर प्रणाम किया तो कभी सभी के हाथ हवा में ऊपर उठ गए और कभी वही हाथ श्री राम के भजन पर मंत्रमुग्ध हो ताल देने लगे. उत्साहित भक्तजन श्प्राण प्रतिष्ठाश् के पुरे कार्यक्रम के दौरान खड़े रहे और इस अद्वितीय अवसर के साक्षी बनने का गौरव हासिल किया।

कार्यक्रम की शुरुआत पर्यटन एवं संस्कृति, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल द्वारा दूधाधारी मठ में पूजा अर्चना करने से हुई. श्री अग्रवाल ने कहा कि, ''ये जो उत्साह और उल्लास का वातावरण है, ये कोई व्यक्ति नहीं बना सकता। प्रभु श्री राम स्वयं आज देश को आशीर्वाद देने पधारे हैं। प्रभु राम के ननिहाल छत्तीसगढ़ में

मैं सबको बधाई देता हूँ, प्रभु राम आये हैं। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की है और इस अवसर पर आज पूरा देश आल्हादित है। मैं सभी छत्तीसगढ़वासियों को बहुत बहुत बधाई और शुभकामनायें देता हूँ और निवेदन करता हूँ कि शाम को हम इस त्यौहार को दीपावली स्वरुप मनाये, घर-घर में दीपक जलाएं, हम सरयू जी, गंगा जी की आरती करें, पटाखें फोड़े, और उत्सव मनाकर प्रभु रामलला का स्वागत करें।'' 'श्री रामलला दर्शन योजना' के बारे में श्री अग्रवाल ने कहा कि, ''हमने तय कर लिया है कि छत्तीसगढ़ की सरकार अयोध्या दर्शन करवाएगी और संपूर्ण व्यवस्था के साथ जल्द ही करवाएगी।''

कार्यक्रम में शामिल होने न सिर्फ रायपुर से बल्कि आसपास के गाँव से भी सैकड़ों की संख्या में लोग आये थे। भक्तों में छोटे-छोटे बच्चे भी थे, जो अपने माता-पिता के साथ श्री राम एवं माता सीता की तरह तैयार होकर इठला रहे थे वहीं ऐसे बुजुर्ग भी, जिनका वर्षों से अयोध्या में रामलला का मंदिर देखने का सपना आज सच हुआ। कचना से आये सेवानिवृत रेल्वे कर्मचारी श्री गोवर्धन साहू ''प्राण प्रतिष्ठा'' का लाइव प्रसारण देखते हुए भावावेश में बार-बार रो पड़ते थे। उन्होंने कहा कि अब बस एक बार अयोध्या जाकर श्री राम के दर्शन करने का सपना शेष है। छत्तीसगढ़ सरकार की ''रामलला दर्शन योजना'' ने उन्हें उम्मीद दी है की वो भी अपने परिवार के साथ अयोध्या जाकर भगवान का दर्शन लाभ ले पाएंगे।

राज्य में अब तक 124.89 लाख मीट्रिक टन धान की हुई खरीदी

रायपुर. छत्तीसगढ़ में खरीफ विपणन वर्ष 2023-24 के तहत एक नवंबर 2023 से धान खरीदी का अभियान निरंतर जारी है. राज्य सरकार इस साल मोदी की गारंटी के अनुरूप किसानों से 21 क्विंटल प्रति एकड़ के मान से धान की खरीदी कर रही है. राज्य सरकार अब तक किसानों से 124.89 लाख मीट्रिक टन धान की समर्थन मूल्य पर खरीदी कर चुकी है. किसानों को 26482 करोड़ रुपए से अधिक की राशि का भुगतान बैंक के माध्यम से किया गया है.

मार्कफेड के महाप्रबंधक से मिली जानकारी के अनुसार, राज्य में समर्थन मूल्य पर अब तक 22 लाख 65 हजार 864 किसानों से 124 लाख 89 हजार 623 मीट्रिक टन धान की खरीदी की जा चुकी है. इसके एवज में किसानों को 26 हजार 482 करोड़ रूपए से अधिक की राशि का भुगतान बैंक के माध्यम से किया गया है.

वहीं धान खरीदी के साथ-साथ कस्टम मिलिंग के लिए निरंतर धान का उठाव जारी है. अब तक 98 लाख 38 हजार 565 मीट्रिक टन धान के उठाव के लिए डीओ जारी किया गया है. जिसके विरूद्ध मिलर्स द्वारा 83 लाख 15 हजार 849 मीट्रिक टन धान का उठाव किया जा चुका है.

मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने चयन समिति की ली बैठक, 4 बच्चे राज्य वीरता पुरस्कार के लिए चयनित

रायपुर। महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने आज नवीन विश्राम गृह अटल नगर नवा रायपुर में राज्य वीरता पुरस्कार वर्ष 2023-24 के लिए पात्र बालक-बालिकाओं के चयन के लिए गठित जूरी (निर्णायक मंडल) की बैठक ली. इस अवसर पर प्रतापपुर विधायक शकुंतला सिंह पोर्ते, महिला एवं बाल विकास विभाग की सचिव शम्मी आबिदी, एआईजी एम. एल. कोटवानी, महिला एवं बाल विकास विभाग की संचालक तुलिका प्रजापति उपस्थित थी.

मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि छत्तीसगढ़ शासन द्वारा प्रदेश के बच्चों को उनकी विशेष वीरता, साहस और बुद्धिमत्ता के लिए राज्य वीरता पुरस्कार प्रदान किया जाता है. आगामी 26 जनवरी को यह पुरस्कार बालक-बालिकाओं को प्रदान किया जाएगा. निर्णायक मंडल से प्राप्त प्रस्तावों और परीक्षण के उपरांत सर्वसम्मति से 4 बालकों को राज्य वीरता पुरस्कार के लिए चयन किया है.

इनमें सरगुजा जिले के मास्टर अरनव सिंह पिता सुरेश कुमार सिंह, दुर्ग जिले के मास्टर ओम उपाध्याय पिता नीरज उपाध्याय, रायपुर जिले के मास्टर प्रेमचंद साहू पिता सुकदेव साहू और मास्टर लोकेश कुमार साहू पिता सुखनंदन साहू शामिल हैं.

छत्तीसगढ़/राजधानी
प्रमुख समाचार

सीएम विष्णुदेव साय बस्तर में फहराएंगे तिरंगा

रायपुर। छत्तीसगढ़ में 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस पूरी गरिमा और उत्साह के साथ मनाया जाएगा. मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय बस्तर में आयोजित मुख्य समारोह में ध्वजारोहण करेंगे. डिप्टी सीएम अरुण साव बिलासपुर और डिप्टी सीएम विजय शर्मा दुर्ग में ध्वजारोहण करेंगे. वहीं विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह राजनांदगांव में तिरंगा फहराएंगे. इसके साथ ही मंत्रीगण, सांसद और विधायक भी अलग-अलग जिला मुख्यालयों में ध्वजारोहण करेंगे. ध्वजारोहण कार्यक्रम का लिए लिस्ट भी जारी कर दिया गया है. राष्ट्रीय ध्वज फहराए जाने के बाद सीएम विष्णुदेव साय प्रदेश की जनता संबोधित करेंगे.

एस. प्रकाश को मिला नि:शक्तजन विभाग का अतिरिक्त प्रभार

रायपुर. 2005 बैच के आईएएस एस. प्रकाश को नि:शक्तजन विभाग का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है.

जिसका आदेश सामान्य प्रशासन विभाग के सचिव डॉ कमलप्रीत सिंह ने जारी किया है.

भाजपा नेता की हत्या के आरोपी पार्षद के खिलाफ प्रशासन की बड़ी कार्रवाई

कांकेर। पखांजूर नगर पंचायत के भाजपा नेता असीम राय की हत्या के आरोपी पार्षद विकास पाल के अवैध होटल को आज बुलडोजर से ध्वस्त करने की कार्रवाई की जा रही हैं. बताया जा रहा है कि, यह होटल पार्षद ने अपने रसूख से बनवाया था, जिसकी कीमत 3 करोड़ रुपये बताई जा रही हैं. इस कार्रवाई के पहले पखांजूर पटवारी कार्यालय की ओर से सूचना पत्र भी जारी किया था और अब अवैध होटल को जमींदोज किया जा रहा है. बता दें कि, जिले में 7 जनवरी 2024 को हुई बीजेपी नेता असीम राय की हत्या के मामले का पुलिस ने बीते दिनों खुलासा किया था. पुलिस के मुताबिक इस हत्याकांड में असीम राय को मारने के लिए कांग्रेस नेता और नगर पंचायत अध्यक्ष बप्पा गांगुली ने 7 लाख की सुपारी दी थी. इस केस में 12 लोग शामिल थे, जिन्हें पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है.

असम में न्याय यात्रा पर हमला भाजपा का आलोकतांत्रिक चरित्र

रायपुर। राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा को मिल रही सफलता तथा लोगों के व्यापक जनसमर्थन से भाजपा डर गयी है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद दीपक बैज ने कहा कि भाजपा की असम सरकार गुंडे तत्वों से भारत जोड़ो न्याय यात्रा पर हमले करवा रही है। अफसोस की बात है, भाजपा खासकर असम में देश के सबसे भ्रष्ट मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा, इस शांतिपूर्ण यात्रा को बाधित करने की लगातार कोशिश कर रहे है। पिछले दो दिनों में भारत जोड़ो न्याय यात्रा के काफिलों पर योजनाबद्ध हमले किये गये उपद्रवियों द्वारा यात्रा के पोस्टरों को फाडने की घटनाएं देखी है। भाजपा कार्यकर्ताओं की जानबूझकर इकट्ठी की गई भीड़ ने राहुल गांधी के नेतृत्व में भारत जोड़ो यात्रा काफिले पर हमला किया, जिसके परिणामस्वरूप असम पीसीसी अध्यक्ष सहित कांग्रेस पार्टी के कई नेता घायल हो गये। भाजपा समर्थित इन गुंडो द्वारा न्याय यात्रा पर ताजा हमला किया गया। यह और कुछ नहीं बल्कि असम के मुख्यमंत्री और केन्द्र की भाजपा सरकार की प्रशासनिक विफलताओं और भ्रष्टाचार को छिपाने का एक हताश प्रयास है। बैज ने कहा कि राहुल गांधी से डरी भाजपा ने असम में मंदिर जाने से रोका गया।

रोटरी क्लब के अध्यक्ष को स्कूल संचालिका ने जड़ा तमाचा

रायपुर। राजधानी के आमानाका इलाके में एक स्कूल की जमीन को लेकर हुए विवाद के बाद मामले ने तूल पकड़ लिया. विवाद के दौरान स्कूल संचालिका ने किसी बात को लेकर रोटरी क्लब रायपुर कास्मो पालिटन के अध्यक्ष को तमाचा जड़ दिया. इस दौरान दोनों पक्षों में जमकर गाली-गलौच और झगड़ा हुआ. अब दोनों पक्षों ने एक-दूसरे के खिलाफ आमानाका थाने में अपराध दर्ज कराया है. पुलिस के मुताबिक, रायपुर में गोविंद नगर इलाके के रहने वाले रविंदर सिंह रोटरी क्लब रायपुर कास्मो पालिटन के अध्यक्ष हैं. महोबा बाजार के श्रीराम चौक पर रोटरी क्लब ट्रस्ट की जमीन पर कृष्णा किड्स एकेडमी स्कूल संचालित हो रहा है. यह जमीन 2018 में रोटरी क्लब की ओर स्कूल संचालित करने के लिए प्रगति वाजपेयी और उनके पति मोहित वाजपेयी को दी गई थी. यह केवल 5 साल के लिए दिया गया था. किराएदारी की अवधि खत्म हो चुकी थी. रविंदर सिंह ने जो सीसीटीवी फुटेज पुलिस को सौंपा है उसमे महिला मारपीट करती दिख रही हैं. शनिवार को रविंदर सिंह अपने साथी दीपक खैर व मृणाल अग्रवाल के साथ दोपहर करीब 1 बजे स्कूल पहुंचे. उस समय स्कूल में छात्र-छात्राएं भी थे. रविंदर ने प्रगति और उनके पति से स्कूल खाली करने के लिए कहा. इसी बात को लेकर दोनों पक्षों में विवाद होने लगा. इस दौरान प्रगति ने रविंदर को तमाचा जड़ दिया और दोनों के बीच धक्का मुक्की भी होने लगी.

पतंग की डोर ने काटी युवक की जिंदगी की डोर

दुर्ग. जिले में चाइनीज मांझे से गला कटने से एक युवक की मौत हो गई. युवक अपने एक रिश्तेदार के साथ बाइक से जा रहा था. रिश्तेदार भी सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया है. खास बात यह है कि, प्रदेश में मांझे से पहली बार कोई मौत हुई है. दरअसल, जी केबिन निवासी अज्जू का पतंग के मांझे से गला कट गया. आसपास के लोगों ने उसे लहूलुहान हालत में लाल बहादुर शास्त्री अस्पताल सुपेला पहुंचाया. वहां से उसे दुर्ग जिला अस्पताल भेजा गया. जहां इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया. घटना जी केबिन चरोदा की है. जानकारी के अनुसार, देव बलौदा जाने वाली सड़क के पास कुछ लड़के पतंग उड़ा रहे थे. इसी दौरान अज्जू अपनी बाइक में पीछे 5 वर्षीय विहान को बैठाकर कहीं जा रहा था. अचानक पतंग का मांझा उसके गले से फंस गया. अज्जू की बाइक आगे जाने से मांझा उसके गले में कस गया और गले को काट दिया. अज्जू लहू लुहान होकर बाइक सहित वहीं गिर गया. इससे विहान के सिर में गहरी चोट आई. आसपास के लोगों ने तुरंत 112 को फोन करके बुलाया. दोनों को लाल बहादुर शास्त्री अस्पताल ले जाया गया. यहां डॉक्टरों ने प्राथमिक इलाज के बाद उसे दुर्ग जिला अस्पताल रेफर कर दिया. दुर्ग में डॉक्टरों ने उसे बचाने का काफी प्रयास किया, लेकिन गला अधिक कट जाने और खून बह जाने से उसने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया.

क्रेडा के संयंत्रों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने गुणवत्ता सेल गठित

समय पर कार्य पूरा नहीं होने पर क्रेडा द्वारा जल जीवन मिशन के 234 कार्य निरस्त

रायपुर। मुख्य कार्यपालन अधिकारी क्रेडा श्री राजेश सिंह राणा द्वारा जोनल कार्यालय, रायपुर अंतर्गत जिला रायपुर, महासमुंद, बलौदाबाजार, धमतरी एवं गरियाबंद अंतर्गत क्रेडा द्वारा संचालित और क्रियान्वित जल जीवन मिशन, सौर सुजला योजना, सोलर हाई मास्ट लाईट परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई। बैठक में जल जीवन मिशन योजनांतर्गत कार्य को समय-सीमा में पूर्ण न कर पाने कारण 12 इकाईयों के 234 कार्य

निरस्त किये गये तथा सभी स्थापनाकर्ता इकाईयों को शीघ्रातिशीघ्र संयंत्रों की स्थापना गुणवत्तापूर्ण तरीके से करने के निर्देश दिये गये। राज्य में सौर सुजला योजना, जल जीवन मिशन, सोलर हाई मास्ट, ऑनग्रिड, ऑफग्रिड सोलर पॉवर प्लांट एवं संचालन, संधारण के अंतर्गत स्थापित और स्थापनाधीन संयंत्रों की गुणवत्तापूर्वक स्थापना सुनिश्चित करने हेतु गुणवत्ता नियंत्रण सेल का गठन किया गया। बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी, क्रेडा द्वारा सभी अधिकारियों एवं स्थापनाकर्ता इकाईयों को कतिपय कारणों से अकार्यशील सौर संयंत्रों को निर्धारित समय सीमा में सुधार कर कार्यशील करने के निर्देश दिये गये ताकि हितग्राहियों को सौर संयंत्रों का सम्पूर्ण लाभ प्राप्त हो सके। बैठक में प्रधान कार्यालय के शाखा प्रमुख, जोनल एवं क्षेत्रीय कार्यालय के अभियंता तथा संबंधित जिला प्रभारियों के साथ परियोजनाओं से संबंधित सेवाकर्ता इकाई उपस्थित थे। मुख्य कार्यपालन अधिकारी द्वारा योजनाओं अंतर्गत कार्य की प्रगति की जानकारी ली गई तथा जिन स्थापनाकर्ता इकाई द्वारा संयंत्रों की स्थापना में विलम्ब किया जा रहा है उनसे विलम्ब के कारणों की समीक्षा की गई। कुछ इकाईयों द्वारा परियोनाओं की क्रियान्वयन में फील्ड में आ रही कठिनाईयों से मुख्य कार्यपालन अधिकारी क्रेडा को अवगत कराया गया।

सेन्ट्रल जेल में बंदी की संदिग्ध मौत से विभाग में मचा हड़कंप

बिलासपुर। बिलासपुर में केंद्रीय जेल में चार दिन पहले ही पुलिस ने शराब के केस में गिरफ्तार बंदी की संदिग्ध हालत में मौत हो गई। परिजन का कहना है कि जेल भेजने से पहले पुलिसकर्मियों ने पैसे की डिमांड की थी और उसकी बेहरमी से पिटाई की थी। उन्होंने बंदी की हत्या का आरोप लगाते हुए जांच कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है।

जानकारी के अनुसार सीपत क्षेत्र के ग्राम मोहरा निवासी श्रवण तांबे (35) अमृतलाल खेती किसानी करता था। बीते 17 जनवरी को पुलिस ने उसे महुआ शराब के साथ गिरफ्तार किया था। जिसके बाद पुलिस ने उसे 19 जनवरी को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया था।

इस बीच वह जेल में बंद था। परिजन जब जेल में मिलने पहुंचे, तब उसे मिलने नहीं दिया गया। बताया जा रहा है कि बीते सोमवार की शाम जेल में अचानक उसकी तबीयत बिगड़ गई। जेल प्रबंधन के अनुसार उसे सांस लेने में दिक्कत होने लगी, तब आनन फानन में उसे जेल अस्पताल और फिर सिम्स रेफर किया गया। सिम्स पहुंचने के बाद देर रात उसकी मौत हो गई। मंगलवार को इस घटना की जानकारी परिजनों को दी गई, तब परिजन उसकी मौत की खबर सुनकर सन्न रह गए। श्रवण तांबे की पत्नी लहरा बाई का आरोप है कि जब पुलिस ने उसे महुआ शराब के साथ पकड़ा था, तब उससे दस हजार रुपए की मांग की थी। परिजन जब उससे थाने में मिलने पहुंचे तब कोर्ट से आदेश लेकर आने के लिए कहा। इसके बाद ही मिलने देने की बात कही। लहराबाई का यह भी आरोप है कि पहले उससे पैसों की डिमांड की गई।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.